2017

20वाँ दीक्षान्त समारोह

गतिमान

बीसवाँ दीक्षान्त समारोह

वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर

माननीय कुलाधिपति एवं श्री राज्यपाल उत्तर प्रदेश

श्री राम नाईक

वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर

गतिमान–2017

बीसवाँ दीक्षान्त समारोह

01 फरवरी, 2017

प्रो. पीयूष रंजन अग्रवाल
कुलपति

श्री एम. के. सिंह
वित्त अधिकारी

डॉ. देवराज
कुलसचिव

प्रो. बी. बी. तिवारी
अधिष्ठाता छात्र कल्याण

श्री संजीव सिंह
डॉ. टी. बी. सिंह
उप कुलसचिव

सम्पादक मण्डल
प्रो. बी. बी. तिवारी
डॉ. मनोज मिश्र
डॉ. दिग्विजय सिंह राठौर
डॉ. के. एस. तोमर

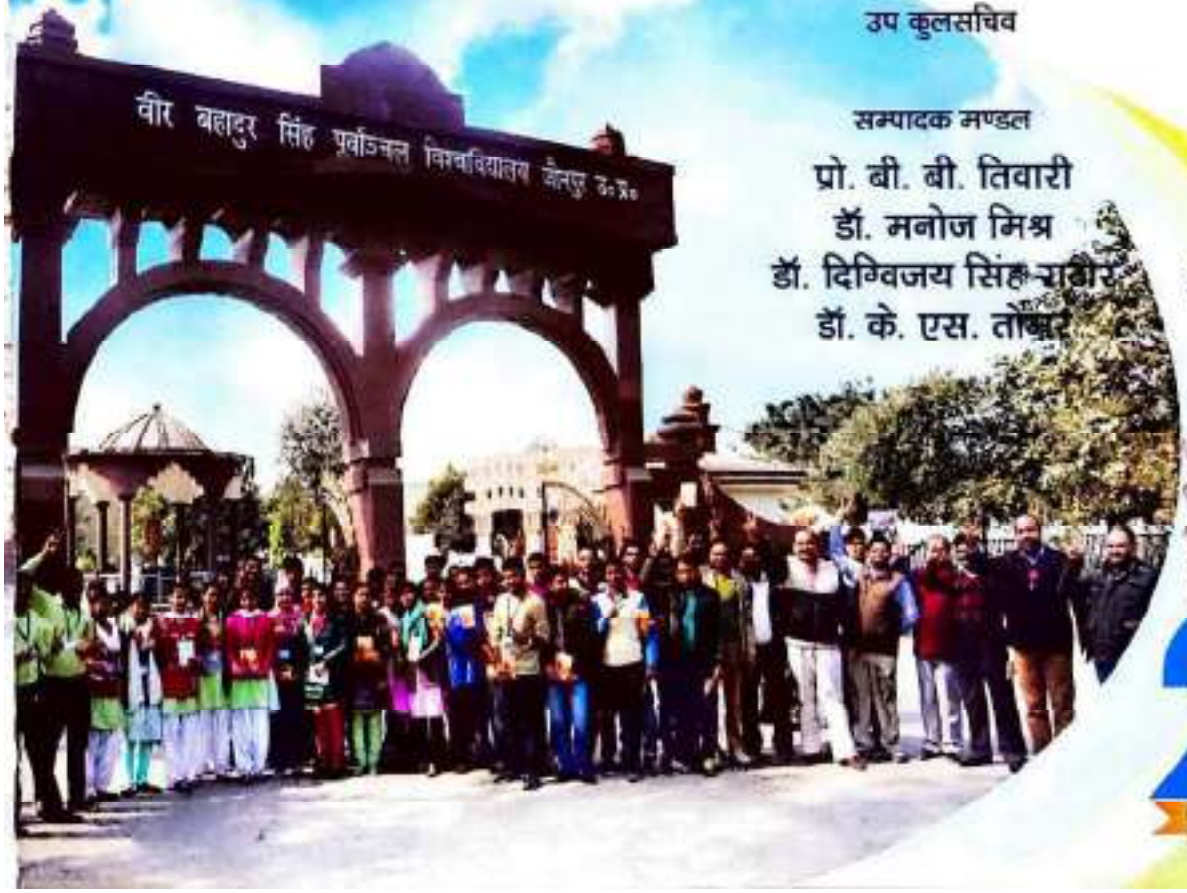

जौनपुर : एक समृद्ध विरासत

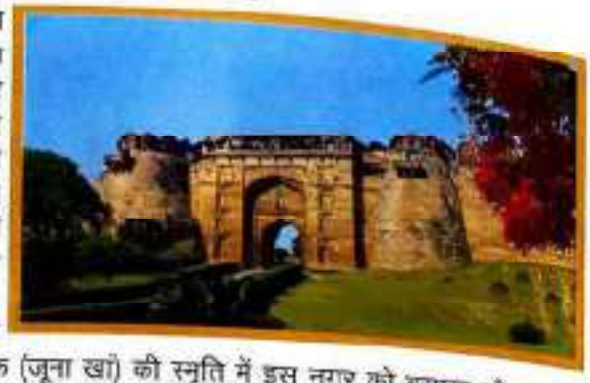

विभिन्न संस्कृतियों की बाँकी झाँकी का साक्षी रहा जनपद जौनपुर अपनी ऐतिहासिकता को बहुत अतीत तक समेटे हुए है। सदानीरा गोमती के तट पर बसा यह शहर एक परम्परा के अनुसार महर्षि यमदग्नि की तपोस्थली रहा है जिस कारण इसका प्रारंभिक नाम यमदग्निपुर पड़ा तथा कालान्तर में यमदग्निपुर ही जौनपुर के रूप में परिवर्तित हो गया। कतिपय विद्वानों ने इस धारणा पर भी बल दिया है कि यहाँ प्राचीन भारत में यवनों का आधिपत्य रहा है जिस कारण इसका नाम प्रारम्भिक दौर में यवनपुर से कालान्तर में जौनपुर हो गया।

मध्यकालीन भारतीय इतिहास के स्रोतों ने जौनपुर की स्थापना का श्रेय फिरोजशाह तुगलक को दिया है, जिसने अपने भाई मुहम्मद बिन तुगलक (जूना खाँ) की स्मृति में इस नगर को बसाया और इसका नामकरण भी उसके नाम पर किया। फिरोजशाह तुगलक ने जौनपुर की स्थापना 1359 ई. में की तथा 1360 ई. में जौनपुर किले की नींव रखी। जौनपुर सल्तनत वर्ष 1394–1479 ई. तक उत्तर भारत की एक स्वतंत्र राजधानी रही जिसका शासन शर्की सल्तनत द्वारा संचालित था। लेकिन एक खास बात यह है कि जौनपुर राज्य का संस्थापक मलिक सरदार (सरवर) फिरोज शाह तुगलक के पुत्र सुलतान मुहम्मद का दास था जो अपनी योग्यता से 1389 ई. में वजीर बना। सुलतान महमूद ने उसे मलिक–उस–शर्क की उपाधि से नवाजा था। 1399 ई. में उसकी मृत्यु हो गयी। उसके पद के कारण ही उसका वंश शर्की–वंश कहलाया। ज्ञातव्य है कि उसको कोई संतान नहीं थी, उसके बाद उसका गोद लिया हुआ पुत्र मुबारक शाह गद्दी पर बैठा था। 1402 ई. में मुबारक शाह की मृत्यु हो गयी। इसके बाद उसका भाई इब्राहिमशाह शर्की जौनपुर राज सिंहासन पर बैठा। इब्राहिमशाह के बाद उसका पुत्र महमूदशाह फिर हुसैन शाह तथा अन्ततः जौनपुर 1479 ई. के बाद दिल्ली सल्तनत का भाग बन गया।

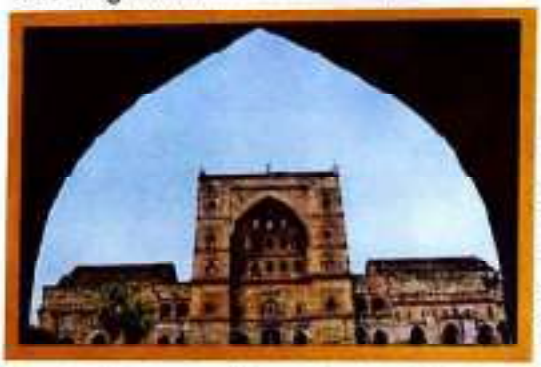

जौनपुर में सरवर से लेकर शर्की बंधुओं ने 75 वर्षों तक स्वतंत्र राज किया। इब्राहीम शाह शर्की (1402 ई.–1440 ई.) के समय में जौनपुर सांस्कृतिक दृष्टि से बहुत उपलब्धि हासिल कर चुका था। उसके दरबार में बहुत सारे विद्वान थे जिन पर उसकी राजकृपा रहती थी। उसके राज–काल में अनेक ग्रंथों की रचना की गयी। तत्कालीन समय में जौनपुर शिक्षा का बहुत बड़ा केंद्र था। यह भी कहा जाता है कि इब्राहीम शाह शर्की के समय में ईरान से 1000 के लगभग आलिम (विद्वान) आये थे जिन्होंने पूरे भारत में जौनपुर को शिक्षा का बहुत बड़ा केंद्र बना दिया था। इसी कारण जौनपुर को 'शीराज–ए–हिंद' कहा गया। शीराज का तात्पर्य श्रेष्ठता से होता है। उसी समय जौनपुर में कला–स्थापत्य की एक नई शैली का जन्म हुआ, जिसे जौनपुर अथवा शर्की शैली कहा गया। कला–स्थापत्य की इस शैली का निदर्शन यहाँ पर आज भी अटाला मस्जिद में किया जा सकता है। अटाला मस्जिद की आधारशिला फिरोजशाह तुगलक द्वारा 1376 में की गयी जिसे 1408 में इब्राहीम शाह ने पूरा किया। जौनपुर में गोमती नदी के शाही पुल का निर्माण कार्य मुगल बादशाह अकबर ने 1564 ई. में प्रारंभ करवाया जो 1569 ई. में बनकर तैयार हुआ। यह शाही पुल अकबर के सूबेदार मुनीम खाँ के निरीक्षण में बना। शर्की सुल्तानों ने जौनपुर में कई सुन्दर भवन, एक किला, मकबरा तथा मस्जिदें बनवाईं। जौनपुर की जामा मस्जिद को इब्राहीम शाह ने 1438 ई. में बनवाना प्रारंभ किया था और इसे 1442 ई. में इसकी बेगम राजीबीबी ने पूरा करवाया। 1417 ई. में चार अंगुल मस्जिद को सुल्तान इब्राहीम के अमीर खालिस खाँ ने बनवाया। जौनपुर की सभी मस्जिदों का वास्तु प्रायः एक जैसा है। शेरशाह सूरी की सारी शिक्षा–दीक्षा जौनपुर में हुई। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत और 'खयाल' के विकास में हुसैन शाह (1458–1479 ई.) का अपना योगदान रहा। इस दौरान कई रागों की रचना की गयी जिसमें प्रमुख हैं 'मल्हार–स्याम', 'गौर–स्याम', 'भोपाल–स्याम', 'जौनपुरी बसन्त', 'हुसेनी' या 'जौनपुरी असावरी' जिसे राग जौनपुरी कहा जाता है।

भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में जनपद के अमर शहीदों ने अपनी मातृभूमि की रक्षा में अपना जीवन बलिदान कर दिया। आज भी जनपद के विभिन्न स्थानों पर स्थापित शहीद स्तम्भ उनके बलिदान की याद दिलाते हैं। इसी जनपद के लोगों ने साहित्य, प्रशासनिक सेवा और विज्ञान अनुसन्धान के क्षेत्र में पूरी दुनिया में जनपद का नाम रोशन किया है। इसकी निरंतरता अभी बनी हुई है।

वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर

वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय (पूर्व में पूर्वांचल विश्वविद्यालय) की स्थापना जौनपुर के लोगों के परिश्रम तथा प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री स्व. वीर बहादुर सिंह के प्रयास के फलस्वरूप उत्तर प्रदेश सरकार के उच्च शिक्षा विभाग द्वारा प्रकाशित गजट संख्या 5005/15–10–87–15 (15)–86 टी.सी. दिनांक 28 सितम्बर 1987 के तहत 02 अक्टूबर 1987 को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जयंती के पावन पर्व पर की गई। कालान्तर में पूर्वांचल विश्वविद्यालय का नाम स्वर्गीय वीर बहादुर सिंह की स्मृति में वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय रखा गया। इस विश्वविद्यालय के स्थापना के साथ ही गोरखपुर विश्वविद्यालय के कार्यक्षेत्र का एक बड़ा भाग इसमें स्थानांतरित कर दिया गया। आरम्भ में इस विश्वविद्यालय में पूर्वी उत्तर प्रदेश के जौनपुर, आजमगढ़, मऊ, गाजीपुर, बलिया, वाराणसी, चंदौली, मिर्जापुर, संत रविदासनगर भदोही, कौशाम्बी, इलाहाबाद तथा सोनभद्र सहित कुल 12 जिलों के 68 महाविद्यालयों को इससे सम्बद्ध किया गया था। विश्वविद्यालय को वर्ष 2016 में नैक द्वारा बी प्लस ग्रेड प्रदान किया गया है।

प्रारम्भ में विश्वविद्यालय का कार्यालय प्रथमतः टी.डी. कालेज जौनपुर के फार्न हाउस के भवन पीली कोठी में प्रारम्भ हुआ। उत्तर प्रदेश शासन ने विश्वविद्यालय हेतु भूमि अधिगृहित करने के लिए कुल 85 लाख रूपये की धनराशि स्वीकृत की तथा अधिकारियों सहित कुल 67 पद स्वीकृत किये। शासन द्वारा सृजित पदों पर नियुक्तियाँ हुई और यहीं से विश्वविद्यालय की विकास यात्रा प्रारम्भ हुई। जिला प्रशासन ने जौनपुर शहर से लगभग 12 किमी. दूर जौनपुर शाहगंज मार्ग पर देवकली, जासोपुर ग्राम सभाओं की कुल 171.5 एकड़ भूमि अधिग्रहीत कर विश्वविद्यालय को उपलब्ध कराई।

वर्ष 1994 में विश्वविद्यालय ने अपने नवनिर्मित निजी प्रशासनिक भवन में कार्य करना प्रारम्भ किया और इसी के साथ ही विश्वविद्यालय का आवासीय स्वरूप विकसित होना प्रारम्भ हुआ। वर्तमान में परिसर स्थित विभिन्न पाठ्यक्रमों में शिक्षा ग्रहण कर रहे छात्र–छात्राओं के लिए आधुनिक सुविधाओं से युक्त छात्रावास की सुविधा उपलब्ध है। अध्यापकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों के रहने के लिए फ्लैट्स तथा ट्रांजिट हॉस्टल की भी व्यवस्था है। इसके अलावा छात्र सुविधा केन्द्र, संगोष्ठी भवन, अतिथि गृह, शिक्षक अतिथि गृह, राष्ट्रीय सेवा योजना भवन, रोवर्स रेंजर्स भवन है। इसके साथ ही विभिन्न संकायों के लिए अलग–अलग भवनों का निर्माण किया गया है जो अत्याधुनिक लैब, इण्टरनेट – वाईफाई एवं सी.सी. कैमरे से सुसज्जित हैं।

विद्यार्थियों को शहर से दूर परिसर में उच्च गुणवत्ता से युक्त शैक्षणिक वातावरण प्रदान करने के लिए विवेकानन्द केन्द्रीय पुस्तकालय संचालित है। इसमें परम्परागत पुस्तकालय सुविधा के अतिरिक्त इसका आधुनिकीकरण करके ई–लाइब्रेरी के तहत छात्रों को ईजर्नल, ई–बुक की सुविधा उपलब्ध करायी गई है, इसके साथ ही एडुसैट व्यवस्था के अन्तर्गत छात्रों को इग्नू, यूजीसी, एआईसीटीई वर्चुअल शिक्षण कार्यक्रम की सुविधा प्रदान की गई है। परिसर के छात्रों को विभिन्न खेलों में उत्कृष्ट प्रदर्शन के योग्य बनाने हेतु आधुनिक खेल सुविधा से युक्त एकलव्य स्टेडियम का भी निर्माण किया गया है। विश्वविद्यालय के खिलाड़ियों ने अपने उत्कृष्ट प्रदर्शन से विश्वविद्यालय का नाम अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर पहुँचाया है। राष्ट्रीय सेवा योजना के द्वारा विभिन्न जनपदों में असहाय लोगों के लिए वस्त्र बाजार का आयोजन किया जाता है। परिसर को हरा–भरा करने के लिए वर्ष 2014 से एक छात्र एक पेड़ योजना संचालित की जा रही है जिसमें छात्रों से पौधरोपण कराकर उसके देख–रेख की जिम्मेदारी उन्हें सौंप दी जाती है। इंजीनियरिंग संस्थान के विद्यार्थियों द्वारा सामाजिक दायित्वों का निर्वहन करते हुए विश्वविद्यालय के पड़ोसी गाँव देवकली में आधुनिक संसाधनविहीन बच्चों को निःशुल्क कोचिंग पढ़ायी जाती है।

वर्तमान में पूर्वांचल के पाँच जनपदों के 765 महाविद्यालय विश्वविद्यालय से सम्बद्ध हैं। विश्वविद्यालय परिसर में स्नातक स्तर पर इंजीनियरिंग की छः शाखाओं इलेक्ट्रिक इंजीनियरिंग, इलेक्ट्रानिक्स एण्ड कम्यूनिकेशन इंजीनियरिंग, इलेक्ट्रानिक्स एण्ड इन्स्ट्रूमेंटेशन इंजीनियरिंग, कम्प्यूटर साइंस एण्ड इंजीनियरिंग, इनफॉरमेशन टेक्नोलॉजी, मैकेनिकल इंजीनियरिंग तथा बी फार्मा की शिक्षा दी जा रही है। इसके अतिरिक्त स्नातकोत्तर स्तर पर एम.सी.ए., एम.बी.ए., एम.बी.ए. (बी.ई.), एग्रोबिजनेस, ई–कामर्स, एम.बी.ए. (एफ.सी.), एम.बी.ए. (एच.आर.डी.), मास कम्यूनिकेशन, व्यावसायिक मनोविज्ञान, एम.एस.सी. बायोटेक्नोलॉजी, पर्यावरण विज्ञान, अप्लायड माइक्रो बायोलॉजी, अप्लायड बायोकेमेस्ट्री विषयों की शिक्षा प्रदान की जाती है। यहाँ से शिक्षा प्राप्त कर छात्र राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विश्वविद्यालय का नाम रोशन कर रहे हैं।

The University

Vision Statement

- Developing the University as an excellent centre of learning which offers quality higher education opportunity to all who deserve it and catalyses academic excellence in the society.
- Promoting research in the field of science, technology, humanities, literature, economics, social science, law, agriculture and allied disciplines.
- Creating an environment to motivate and support the academia to undertake advance studies and researches, to the benefit of the Nation and humanity as a whole.
- Preparing graduates acquainted and trained with the knowledge, communication skills and computer proficiency to meet the expectations of the global economy.

Stage one

i. Upgrading and restructuring class rooms, laboratories and libraries.
ii. Improving living standards of students and teachers in the campus by refurbishing hostels and staff quarters.
iii. Building Central Infrastructure of the University like Roads, Light, Sports, Auditorium, Conference-Halls, Guest House, Cafeteria.
iv. Developing state-of-the-art office network and accountability of registry.

Stage two

i. Putting in place a fair & transparent system of admission and examination, faster in processing with worldwide accessibility.
ii. Re-orienting the existing curriculum to achieve academic goal of quality teaching and research.
iii. Introducing innovative teaching programs with appropriate facilities and laboratories.
iv. Implementing accessible and low cost courses to cater the need of every one.

Stage three

i. Industry-interface for placement of pass outs.
ii. Mobilizing research grants and projects.
iii. Establishment of the Centers of Excellence.
iv. Signing MOU with foreign universities for collaborative teaching and research.

Faculties / Courses

Faculty of Agriculture
Departments (U.G. & P.G.)
- Agriculture Botany
- Agriculture Chemistry
- Agriculture Zoology & Entomology
- Agriculture Economics
- Agriculture Extension
- Horticulture
- Plant Pathology
- Animal Husbandry and Dairy
- Soil Conservation
- Agriculture Engineering
- Agronomy
- Genetics and Plant Bidding

Faculty of Arts
Departments (U.G. & P.G.)
- Sanskrit and Prakrit Language
- Hindi and Modern Indian Language
- Arbi, Farsi and Urdu
- English & Modern European Lang.
- Philosophy
- Psychology
- Education
- Economics
- Political Science
- Anthropology
- Ancient History, Archeology & Culture
- Medieval And Modern History
- Sociology
- Geography
- Fine Arts
- Library Science
- Music

Faculty of Commerce
Departments
- Department of Commerce (B.Com., M.Com.)

Faculty of Education
Departments
- B.Ed.
- M.Ed.

Faculty of Law
Departments
- Department of Law
  LL.B.
  LL.M.

Faculty of Sciences
Departments (U.G. & P.G.)
- Physics
- Chemistry
- Botany
- Zoology
- Mathematics
- Statistics
- Geology
- Defence Study
- Home Science
- Computer Science
- Bio-Chemistry
- Biotechnology
- Food and Nutrition
- Microbiology
- Industrial Fishery and Fisheries
- Industrial Chemistry
- Silk and worm culture
- Phys. Edu., Health Education & Sports
- Environmental Science
- Applied Microbiology
- Applied Biochemistry

Faculty of Medicine
Departments (U.G.)
- Pharmacy
- Medicine

Faculty of Engineering & Technology
Departments (U.G.)
- Electronics and Communication Engineering
- Electrical Engineering
- Computer Science & Engineering
- Mechanical Engineering
- Information Technology
- Electronics & Instrumentation Engineering
- Master in Computer Applications
- Applied Physics
- Applied Chemistry
- Applied Mathematics
- Humanities & Social Sciences

Faculty of Management Studies
Departments
- Department of Business Administration
- Department of Human Resource Development
- Department of Finance & Control
- Department of Business Economics

Faculty of Applied Social Science
Departments
- Department of Applied Psychology
- Department of Mass Communication

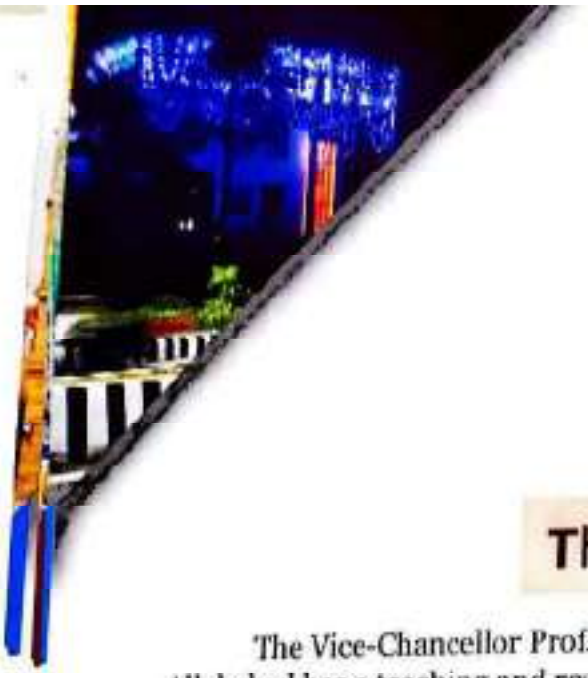

The Vice-Chancellor

The Vice-Chancellor Prof. Peeush Ranjan Agrawal, M.Com., LL.B., D.Phil., University of Allahabad has a teaching and research experience of 33½ years. He has been Head of School of Management Studies and Department of Humanities and Social Sciences, Motilal Nehru National Institute of Technology Allahabad. He was Professor, Head and Dean, in the Faculty of Management Studies at Dr. H.S. Gour University, Sagar (M.P.), before serving the Allahabad University. He published 45 articles and research papers and 6 books as author/co-author on various contemporary issues on Accounting, Finance, Economics and Management in which few issues covered are : FN Inflow in India, SE Asian Financial Crisis, External Commercial Borrowings & National Debt Management, FDIs and Rural Marketing, Food security. His book entitled "A Comprehensive Approach to Mutual Fund" was released and commented upon by the former Prime Minister Dr. Manmohan Singh. He supervised Nine Ph.D. thesis on IPOs, Venture Capital, Household Portfolio Management, Foreign Equity Market, Foreign Banking and Institutional Retailing, Foreign Institutional Investment, External Commercial Borrowings and concluded a major research project of UGC on International Equity Market. Prof. Agrawal had been the visiting associate to UTI Institute of Capital Market, Navi Mumbai; Visiting Professor to Luigi Bocconi University, Milan, Italy; School of Management, Asian Institute of Technology, Thailand under the HRD's Indian Faculty -Secondment Exchange Programme. He also visited USA, Canada, UK, France, Italy and Japan to participate in international events, conferences and MDPs. He surveyed and interacted with a number of MNCs in UK, France and Thailand. He chaired and presented a research paper in four Global conferences on Business and Economics, Oxford University, U.K. and chaired a Technical Session and Member of the Organizing Committee of the 12th Asian Pacific Management Conference, Bangkok, 2006. The economist of USA acclaimed his one research paper titled '4 Ps Interlocutory Model of FDI' as excellent one. He developed Food Security Grid Model, published by FCI Institute, Gurgaon. Prof. Agrawal was awarded two times by the President of India, and once by the Prime Minister of India for contribution made in the field of Social/ Community works. He has been availed the 'Career Award' of University Grants Commission, 'The Best Teacher Award' by Allahabad Chapter of AIMA and 'Gold Medal' by All India Congress of Farmers and Agricultural Scientists and felicitated with 'Gour Samman - 2015' by Dr. Hari Singh Gour University Sagar, Madhya Pradesh.

वीर बहादुर सिंह पूर्वाञ्चल विश्वविद्यालय, जौनपुर

बीसवाँ दीक्षांत समारोह के अवसर पर

कुलपति जी का उद्‌बोधन

बुधवार, 01 फरवरी, 2017

माननीय कुलाधिपति, बीसवें दीक्षान्त समारोह के अध्यक्ष, माननीय श्री राम नाईक जी, समारोह के मुख्य अतिथि सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक पद्म श्री एवं पद्म भूषण डॉ0 बी0 एन0 सुरेश, अध्यक्ष भारतीय राष्ट्रीय अभियांत्रिकी अकादमी एवं पूर्व निदेशक, विक्रम साराभाई स्पेस सेन्टर, श्री जितेन्द्र कुमार जी, प्रमुख सचिव, उच्च शिक्षा, उ0 प्र0 शासन, कार्यपरिषद, विद्यापरिषद के सम्मानित सदस्यगण, समारोह में उपस्थित जनप्रतिनिधिगण, सम्मानित अतिथिगण, विभिन्न महाविद्यालयों के प्रबन्धक, प्राचार्य एवं प्राध्यापकगण, समस्त शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारीगण, प्रशासनिक अधिकारीगण, इलेक्ट्रानिक एवं प्रिन्ट मीडिया के पत्रकार बन्धुओं, उपाधि प्राप्तकर्त्ता एवं स्वर्णपदक विजेता मेधावियों, समस्त विद्यार्थियों तथा अभिभावकगण !

वीर बहादुर सिंह पूर्वाञ्चल विश्वविद्यालय के बीसवें दीक्षान्त समारोह के शुभ अवसर पर मैं विश्वविद्यालय परिवार की ओर से आपका हार्दिक स्वागत करता हूँ। इस अवसर पर मैं विश्वविद्यालय की ओर से प्रेरणास्रोत, मार्गदर्शक माननीय श्री राम नाईक जी का हार्दिक अभिनंदन करता हूँ। माननीय कुलाधपति जी के प्रेरणादायी, मौलिक एवं व्यवहारिक निर्देशन ने प्रदेश के विश्वविद्यालयों में उच्च शिक्षा में व्यापक परिवर्तन की संभावनाओं के साथ नई सोच, नई दिशा तथा नव चेतना को पुनः जागृत किया है। आपकी जन चेतना से जुड़ी हुई संवेदनशीलता एवं पूरे प्रदेश की उच्च शिक्षा को राष्ट्रीय मुख्यधारा में लाने की कटिबद्धता से शिक्षा जगत आश्वस्त है।

समारोह के मुख्य अतिथि, देश की प्रतिरक्षा से जुड़ी अत्यन्त संवेदनशील, उपलब्धियों के प्रति समर्पित व्यक्तित्व सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक पद्म भूषण डॉ0 बी0 एन0 सुरेश जी, की उपस्थिति इस विश्वविद्यालय एवं विद्यार्थियों के लिए गौरव एवं युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणास्रोत है। आपने दीक्षान्त उद्‌बोधन के लिए हमारे निमंत्रण को स्वीकार किया, जिसके लिए विश्वविद्यालय परिवार हृदय से आभारी है।

विश्वविद्यालय के इस बीसवें दीक्षान्त समारोह के पावन अवसर पर मैं उन सभी विभूतियों विशेषकर पूर्व मुख्यमंत्री स्व0 वीर बहादुर सिंह जी का स्मरण करते हुए अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूँ, जिनके सद् प्रयासों से अस्तित्व में आया पूर्वान्चल की जनता के लिए ज्ञान का यह प्रकाश–स्तम्भ अपने उद्‌देश्यों की प्राप्ति हेतु अग्रसर है।

पूर्वान्चल की भूमि के जिस स्थल पर यह विश्व–विद्या–केन्द्र स्थापित हुआ है, उस जौनपुर का ऐतिहासिक ही नहीं, वरन् एक प्राचीन पौराणिक महत्व भी है। पौराणिक, आख्यानों के अनुसार पूर्वान्चल का यह क्षेत्र ऋषि भृगु, महर्षि जमदग्नि, महर्षि दुर्वासा एवं महर्षि देवल की साधना भूमि रही है।

आज मैं, सभी उपाधि तथा स्वर्णपदक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को बधाई देता हूँ जिन्होंने अपने अनवरत् परिश्रम के बल पर ज्ञान अर्जन कर जीवन का एक अहम पड़ाव पार किया है। ज्ञान का नवसृजन इस पीढ़ी को निरन्तर नई दिशा की ओर अग्रसर करता रहेगा। प्रिय विद्यार्थियों! आज आपने कृषि, कला, वाणिज्य, शिक्षा, विधि, विज्ञान, प्रबन्ध अध्ययन, अनुप्रयुक्त सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी, इंजीनियरिंग और टेक्नालॉजी एवं औषध संकायों में स्नातक, परास्नातक एवं पी–एच0डी0 की उपाधि को अर्जित कर अपने गुरुजनों, अभिभावकों एवं विश्वविद्यालय का सम्मान बढ़ाया है। उमंग और उत्साह के साथ अपने जीवन को आगे बढ़ाने का प्रयास अगर आप निरन्तर करते रहेंगे, मैं विश्वास से कहता हूँ कि आप जिस क्षेत्र में रहेंगे उस क्षेत्र से समाज को अवश्य कुछ न कुछ दे सकते हैं। मैं आशा करता हूँ कि आप अपने सामर्थ्य से आगे बढ़ें। अपने माता–पिता की जो आशाएं, आकांक्षायें, अपेक्षायें आपसे हैं उन्हें पूरा करने की ईश्वर आपको पूरी शक्ति दे। आपकी यह निष्ठा नये युग का निर्माण करने में सहायक होगी और आप सदैव जनहित एवं राष्ट्रहित में कार्य करते रहेंगे।

पूर्वी उत्तर प्रदेश के इस अंचल में अवस्थित विश्वविद्यालय परिक्षेत्र की अनेक भौगोलिक, सामाजिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक विशिष्टताएँ हैं। यहाँ के विद्यार्थियों में असीम उत्साह एवं क्षमता है। उन्हें जीवन के प्रति आधुनिक विचारों के साथ नये–नये तकनीकी, आर्थिक एवं सामाजिक परिवर्तनों से प्रशिक्षित करते हुए जीवन की ऊँचाईयों को छूने के लिए प्रेरित करने की आवश्यकता है। बौद्धिय विकास की यह प्रयोगशाला, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय अपने उद्‌देश्य एवं कर्त्तव्य के प्रति कटिबद्ध रहते हुए निरंतर उच्च शिक्षा के क्षेत्र में एक प्रकाश स्तम्भ की भाँति मार्ग दर्शन करता रहेगा।

माननीय कुलाधिपति जी की प्रेरणा से इस विश्वविद्यालय का राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (NAAC) से मूल्यांकन कराया जा चुका है और विश्वविद्यालय बी+ की श्रेणी में आ चुका है। गुणवत्ता के लिए मार्गदर्शिका अनिवार्य तत्व है। इस हेतु सत्र 2015–16 में विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालयों का AISHE पर

100 प्रतिशत पंजीकरण पूर्ण हो चुका है। विश्वविद्यालय द्वारा वर्ष 2015 से ही समस्त पी–एच0डी0 उपाधियों के शोध–प्रबन्धों को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा निर्धारित 'शोधगंगा' कार्यक्रम पर पंजीकृत कराया जा रहा है। अभी तक कुल 617 शोध प्रबन्ध शोध गंगा पर अपलोड किये जा चुके हैं। विश्वविद्यालय की वेबसाईट को पुनः रेखांकित किया गया है । परीक्षा के सम्बन्ध में विश्वविद्यालय एवं समस्त सम्बद्ध महाविद्यालयों से ऑनलाईन आवेदन पत्र लेने के उपरान्त ऑनलाईन प्रवेशपत्र एवं इलेक्ट्रानिक मार्कशीट के वितरण की व्यवस्था पूर्ण कर ली गयी है। आनलाइन माइग्रेशन एवं आनलाइन प्रोविजनल प्रमाण पत्र प्रदान किये जाने की कार्यवाही का कार्य प्रगति पर है। पुस्तकालय में उपलब्ध पुस्तकों को डिजिटल करने हेतु कार्य निरन्तर प्रगति पर है। ई–पुस्तकालय की स्थापना की गयी है। विश्वविद्यालय परिसर में वर्चुअल क्लासरूम स्थापित किये जा चुके है एवं कान्फ्रेंसिंग की सुविधा प्रदान की जा चुकी है। राज्य सरकार द्वारा विश्वविद्यालय के पुस्तकालय को सेन्टर आफ एक्सीलेन्स घोषित किया गया है। विश्वविद्यालय में आप्टिकल फाइबर का लोकल नेटवर्क समस्त प्रयोगशालाओं, कार्यालयों, कक्षाओं तथा छात्रावास के कमरों तक स्थापित है जिसका रखरखाव एवं संचालन किया जा रहा है। विश्वविद्यालय द्वारा संचालित समस्त संकायों–कला, वाणिज्य, विज्ञान, कृषि, विधि, शिक्षा, इन्जीनियरिंग, मैनेजमेन्ट, फार्मेसी एवं अप्लाईड सोशल साइन्स के यू0जी0 एवं पी0जी0 स्तर के समस्त पाठ्यक्रमों को विश्वविद्यालय की वेबसाईट पर दर्शित कर दिया गया है। विश्वविद्यालय से सम्बद्ध समस्त महाविद्यालयों के पाठ्यक्रम, सीट संख्या निर्धारण, फीस, आदि का विवरण वेबसाईट पर दर्शित है।

विश्वविद्यालय से सम्बद्ध पाँच जनपदों के कुल 765 महाविद्यालयों में शैक्षिक सत्र 2016–17 के शैक्षिक कैलेण्डर के अनुसार समयबद्ध ढंग से प्रवेश, शिक्षण कार्य, परीक्षा आवेदन पत्र, परीक्षा संचालन हेतु कार्यवाही की जा रही है।

राज्य सरकार के सहयोग से राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान (RUSA) के अन्तर्गत विश्वविद्यालय को प्राप्त हुए अनुदान से रिसर्च इनोवेशन सेन्टर, का निर्माण कराया जा रहा है तथा ए0पी0जे0अब्दुल कलाम छात्रावास एवं डा0 भोलेन्द्र सिंह इन्डोर स्टेडियम का निर्माण कराया जा चुका हैं।

पर्यावरण संरक्षण एवं विद्यार्थियों के मन में प्रकृति के प्रति लगाव उत्पन्न करने के उद्देश्य से एक छात्र एक पेड़ अभियान अनवरत् चलाया जा रहा है। इस वर्ष इस अभियान के अन्तर्गत हजारों पौधों को छात्रों द्वारा रोपित कराया गया है। उनके मनोभावों को जागृत किया गया है।

माननीय कुलाधिपति जी आपके निर्देश पर विश्वविद्यालय में स्वच्छता अभियान बड़े पैमाने पर चलाया गया। विश्वविद्यालय के सभी सदस्यों ने इसमें अपनी सक्रिय भूमिका अदा की।

योग के प्रति जागरूकता एवं शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ रखने के लिए प्रतिदिन योग कक्षायें संचालित हो रही है, जिसमें विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के साथ ही साथ आम–जन भी लाभान्वित हो रहे हैं।

वैश्विक परिदृश्य के दृष्टिगत विश्वविद्यालय में वित्तीय साक्षरता अभियान चलाया गया जिसमें नगद रहित अर्थव्यवस्था की चुनौतियों एवं संभावनाओं पर नई पीढ़ी को जागरूक किया जा रहा है।

प्रिय विद्यार्थियों! विश्वविद्यालय न केवल एक शैक्षणिक संस्थान है, बल्कि बौद्धिक एंव चारित्रिक चेतना के निर्माण का एक केन्द्र भी है। आधुनिक प्रयोशालाओं, पुस्तकालयों, कक्षाओं, योग्य शिक्षकों के मार्गदर्शन, उपयुक्त प्रशिक्षण एवं पाठ्येतर गतिविधियो में तल्लीनता बहुमुखी विकास के मार्ग को प्रशस्त कर सकती है। ज्ञानार्जन के विभिन्न तकनीकी साधनों के बावजूद परम्परागत कक्षाओं में विद्यार्थी एवं शिक्षक का शैक्षणिक संवाद उनके प्रभावशाली व्यक्तित्व निर्माण का सर्वोच्च कारक सिद्ध होता है। इस अवसर पर मुझे विश्वविद्यालय की पाठेयतर गतिविधियों से जुड़ी उपलब्धियों की चर्चा करते हुए प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। जहाँ एन0एस0एस0 एवं रोवर्स रेंजर्स जैसी गतिविधियों में विश्वविद्यालय का राज्य स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन रहा है, वहीं विगत तीन वर्षो से राजभवन विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न क्रीड़ा प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट सफलता का न केवल साक्षी रहा है, अपितु मार्गदर्शन एवं उत्साहवर्धन भी करता रहा है।

आदरणीय कुलाधिपति जी! आपके संरक्षण में हम अपने लक्ष्य प्राप्ति की ओर प्रयासरत् है। आपके मार्गदर्शन से यह विश्वविद्यालय अपने निर्धारित उद्देश्यों को निरन्तर प्राप्त कर सकेगा, इसका हमें पूर्ण विश्वास है। हमारा प्रयास है कि वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, प्रदेश एवं देश के अग्रणी विश्वविद्यालयों की पंक्ति में प्रमुख स्थान प्राप्त करे।

पूर्वांचल में अवस्थित इस विश्वविद्यालय की उनतीस वर्षों की विकास–यात्रा और शैक्षणिक उपलब्धियाँ समर्पित शिक्षक, प्राचार्य, अधिकारियों एवं कर्मचारियों के अथक प्रयत्नों से संभव हो सकी है। मैं, सभी स्वर्ण पदक एवं उपाधि प्राप्तकर्ता विद्यार्थियों को पुनः हार्दिक बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि वे अपने उत्कृष्ट योगदान से विश्वविद्यालय एवं देश का नाम आलोकित करेंगे।

मैं, इस सभागार में उपस्थित सभी अभिभावकों, डिग्री धारकों, स्वर्णपदक विजेताओं एवं आगन्तुकों का वसन्तोत्सव के पावन पर्व पर हार्दिक स्वागत एवं अभिनन्दन करता हूँ।

जय हिन्द!

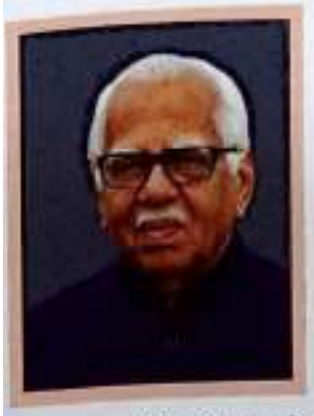

माननीय श्री राम नाईक

कुलाधिपति एवं श्री राज्यपाल, उत्तर प्रदेश

परिचय

माननीय श्री राम नाईक जी का जन्म 16 अप्रैल, 1934 को महाराष्ट्र के सांगली जनपद के आटपाडी गाँव में एक मध्यमवर्गीय देशस्थ परिवार में हुआ। प्रारंभिक शिक्षा गांव में ही हुई। पुणे में बृहन् महाराष्ट्र वाणिज्य महाविद्यालय से 1954 में बी.काम. तथा मुंबई में किशनचंद चेलाराम महाविद्यालय से 1958 में एल.एल.बी. की शिक्षा प्राप्त की। श्री नाईक ने अपना व्यावसायिक जीवन 'एकाउंटेण्ट जनरल' के कार्यालय में अपर श्रेणी लिपिक के रूप में शुरु किया। बाद में उनकी उच्च पदों पर उन्नति हुई और 1969 तक निजी क्षेत्र में कंपनी सचिव तथा प्रबंध सलाहकार के रूप में आपने कार्य किया।

महामहिम राष्ट्रपति जी ने 14 जुलाई 2014 को श्री राम नाईक को उत्तर प्रदेश के राज्यपाल के तौर पर मनोनीत किया। आपने 22 जुलाई 2014 को लखनऊ में पद ग्रहण किया।

आपको साऊथ इंडियन एजुकेशन सोसायटी, मुंबई की ओर से 'राष्ट्रीय श्रेष्ठता पुरस्कार' कांची कामकोटि पीठ के जगद्गुरु शंकराचार्य पूज्य जयेन्द्र सरस्वती के हाथों मुंबई में दिनांक 13 दिसम्बर 2014 को प्रदान किया गया। इसके पूर्व इस पुरस्कार से पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न श्री अटल बिहारी वाजपेयी, पूर्व राष्ट्रपति स्व. डॉ० शंकर दयाल शर्मा और पूर्व राष्ट्रपति स्व. डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम जैसे महानुभावों को अलंकृत किया गया है।

आप श्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में गठित मंत्री परिषद में 13 अक्टूबर 1999 से 13 मई 2004 तक पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्री रहे। इसके पूर्व 1998 की मंत्री परिषद में आपने रेल (स्वतंत्र प्रभार), गृह, योजना एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन और संसदीय कार्य मंत्रालयों में राज्यमंत्री (13 मार्च 1998 से 13 अक्टूबर 1999) के रूप में कामकाज संभाला था।

पेट्रोलियम मंत्री के रूप में आपने अक्टूबर 1999 में पदभार संभाला। कारगिल युद्ध में शहीद वीरों की पत्नियों, निकटस्थ रिश्तेदारों को तेल कंपनियों के माध्यम से पेट्रोल पंप और गैस एजेंसी की डीलरशिप देने की विशेष योजना भी आपके द्वारा ही मंजूर की गई। संसद भवन पर हुए हमले में शहीद कर्मचारियों के परिवारजनों को भी पेट्रोल पंप आवंटित किए। पेट्रोल–डीजल के वाहनों से प्रदूषण कम हो इसलिए दिल्ली और मुंबई में सीएनजी गैस देना प्रारंभ किया।

आपने 1964 में 'गोरेगांव प्रवासी संघ' की स्थापना कर उपनगरीय यात्रियों की समस्याओं को सुलझाने का कार्य प्रारंभ किया। बाद में रेल राज्यमंत्री के नाते विश्व के व्यस्ततम मुंबई उपनगरीय रेल के 75 लाख यात्रियों को उन्नत सुविधाएं उपलब्ध करवाने के लिए 'मुंबई रेल विकास निगम' की स्थापना की।

संपूर्ण देश में रेल प्लेटफार्मों पर तथा यात्री गाड़ियों में सिगरेट तथा बीड़ी बेचने पर पाबंदी लगाने का ऐतिहासिक काम भी आप द्वारा किया गया। यात्रियों से सुझाव लेकर नई गाड़ियों का नामकरण करने की अनोखी लोकप्रिय पद्धति का प्रारंभ भी आपने ही किया। 11 जुलाई 2006 को लोकल गाड़ियों में हुए बम विस्फोट से पीड़ित परिवारों को सहायता पहुंचाने के लिए विशेष प्रयास किए।

आपने महाराष्ट्र के उत्तर मुंबई लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र से लगातार पांच बार जीतने का कीर्तिमान बनाया है, इसके पूर्व तीन बार आप महाराष्ट्र विधानसभा में बोरीवली से विधायक भी रहे हैं। राज्यपाल का दायित्व सम्भालने के बाद आपने पहले तीन महीनों का कार्यवृत्त 'राजभवन में राम नाईक' 20 अक्टूबर 2014 को प्रस्तुत किया।

आपने संसद में 'वंदे मातरम्' का गान प्रारंभ करवाया। आपके प्रयासों के फलस्वरुप ही अंग्रेजी में 'बॉम्बे' और हिन्दी में 'बंबई' को उसके असली मराठी नाम 'मुंबई' में परिवर्तित करने में सफलता मिली। संसद सदस्यों को निर्वाचन क्षेत्र के विकास के लिए सांसद निधि की संकल्पना आपकी ही है।

तारापुर अणु ऊर्जा प्रकल्प 3 व 4 के कारण विस्थापित हुए पोफरण व अक्करपट्टी ग्रामवासियों के पुनर्वास पर आपने 'गाथा संघर्षाची' मराठी तथा 'Saga of Struggle' अंग्रेजी किताबें भी लिखी हैं। 1987 में विख्यात समाजशास्त्री कै. शरदचंद्र गोखले द्वारा स्थापित इंटरनेशनल लेप्रसी यूनियन, पुणे के आप अध्यक्ष भी रहे हैं।

श्री राम नाईक जी ने अपने जीवन के संस्मरण भी लिखे जो लोक प्रिय मराठी दैनिक 'सकाल' में प्रकाशित होते रहे। बाद में यह पुस्तक रूप 'चरैवेति! चरैवेति!!' (चलते रहो, चलते रहो) दिनांक 25 अप्रैल, 2016 को प्रकाशित हुआ। तत्पश्चात इसका अंग्रेजी, हिन्दी, गुजराती और उर्दू भाषा में अनुवाद हुआ है। श्री राम नाईक जी एक विशिष्ट छवि वाले व्यक्ति हैं जो प्रत्येक कार्य में सूक्ष्मता और पारदर्शिता एवं जागरूकता के लिए जाने जाते हैं। 82 वर्ष की आयु में आप कठोर परिश्रम एवं तत्परता के साथ कार्य में व्यस्त रहते हैं।

आप वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर के कुलाधिपति के रूप में विश्वविद्यालय को गुणवत्तापरक शैक्षणिक एवं शोध के विकास के लिए अमूल्य योगदान दे रहे हैं। कुलाधिपति के रूप में आप हमारे लिए प्रेरणा एवं आशा के स्रोत हैं।

Padma Shri & Padam Bhushan Dr. B.N. Suresh

President, Indian national Academy of Engineering, New Delhi
Honorary Distinguished Professor, ISRO, Bangalore

The Chief Guest

Dr. BN Suresh is a renowned aerospace engineer with accomplishments in space technology in the arena of launch vehicle design, aerospace navigation, control and actuation systems, vehicle electronics, modelling and simulation. During his career in the Indian Space Research organisation spanning around four decades, Dr Suresh had enough opportunities in partaking and shaping the space programme as well as in guiding it from pivotal positions. He has commendably held the post of Director, Vikram Sarabhai Space Centre (VSSC), the lead Centre of ISRO in launch vehicle development for the period 2003 to 2007. He was also the founding Director of the prestigious Indian Institute of Space Science and Technology established by ISRO.

Dr Suresh took his degree in Science in 1963 and in Engineering in 1967 from Mysore University. Later he took his Post Graduate degree from IIT Chennai in 1969. He started his career in ISRO at Vikram Sarabhai Space Centre (then Space Science and Technology Centre) in 1969. Later he earned his doctoral degree in Control Systems from Salford University, UK under commonwealth Scholarship. At VSSC he has held various positions like Group Director Control & Guidance Group; Project Director, Inertial Guidance Systems Project; Deputy Director (Avionics) and Associate Director (R&D) VSSC before taking over as Director VSSC in 2003. Presently he is Member, Space Commission.

He is a fellow of several professional bodies like Indian National Academy of Engineering, Astronautical Society of India, Aeronautical Society of India as also International Academy of Astronautics. Presently he is President for System Society of India. He has served as Chairman for 5 years for astrodynamics session in the International Astronautical Congress being held annually. As Head of the Indian delegation for the United Nations Committee on Peaceful Uses of Outer Space at Vienna, Austria he shouldered the responsibility to protect the interests of Indian Space Community in UN meetings for four years. He was also selected to chair the prestigious United Nations Scientific and Technical subcommittee dealing with Peaceful Use of Outer Space, in the year 2006. It was a matter of honour that a technical expert from a developing country was selected for this coveted post.

He has several awards and honours to his credit. Prominent among them are 'Dr. Biren Roy Space Science Design Award' from Aeronautical Society of India in 1993, 'Agni Award' for excellence in self reliance from DRDO in 1999, 'ASI Award' for contribution to rocket and related technologies from Astronautical Society of India in 2000, 'Distinguished Alumni Award' from IIT Chennai in 2004 and 'Technical Excellence Award' by Lions International in 2006. In addition the nation honoured him awarding prestigious Padma Shri in the year 2002 and Padam Bhushan in year 2013. He has published more than 45 technical papers in national and international symposiums, conferences and journals and guided more than 500 technical reports in the area of launch vehicle design, mission, avionics and other associated areas.

Convocation Address

Chief Guest

Padma Shri & Padam Bhushan Dr. B.N. Suresh

President, Indian national Academy of Engineering, New Delhi
Honorary Distinguished Professor, ISRO, Bangalore

Honourable Chancellor of the University, Distinguished Vice Chancellor, Principal Secretary Higher Education, U.P., Directors of the Institutes, Members of the Senate, the Faculty, invited guests, degree and prize recipients, proud parents, ladies and gentlemen:

It is indeed a great privilege and honour for me to be amongst you in this fine morning in such a beautiful environment to participate in the Convocation of this great Purvanchal University. Let me first of all convey my warm greetings and hearty congratulations to each and every recipient of the degree and award winners and wish each one of you a very bright future and a very successful career. No doubt, today is indeed a very special day for all of you, who have acquired your degrees and received your honours by your sheer hard work for the past few years in this prestigious University. You have spent all your time till now as students in a safe environment and now moving into larger world seeking to shape your own career and future. This is an excellent opportunity for all of you to choose your own career and contribute in your own way for the betterment of the society. Today India is one of the fastest growing economies in the world and expected to attain the status of one of the developed Countries very soon. Therefore India at this juncture provides immense opportunities in almost every domain and each such opportunity is very exciting and at the same time very challenging.

This University has trained you commendably, imparted the needed knowledge and skills to each one of you and also has taught how to face the challenges. With this background you have an excellent opportunity to utilize your skills intelligently and try to provide a great future to our great Nation. You may opt to choose an area which is close to your heart which you should and put your heart and soul in achieving the goal set by yourself. When I joined the space Department way back in the middle of 1969 as a young engineer, I did not even know about the space activities or its use for the Country. But thanks to the environment I had in the Organization, I started enjoying every minute of stay there and able to contribute to the Nation to my satisfaction. The message is that as long as you are enjoying what you are doing, you will have the full satisfaction and you would certainly achieve the success. It is therefore important to start enjoying the task or career you are going to choose.

All of you are now entering into a new world, which no doubt is unknown territory, different from the world you have spent so far. It certainly is more exciting, as well as more challenging. It is natural that as we move further in our life, take up a new career or a new activity we are bound to face number of challenges. Whenever we face such challenges there are two ways of treating them, either from a perspective of helplessness or from a standpoint of one's own belief. But when we choose the latter, we are consciously optimistic and these challenges open up a vista of opportunities. Once we accept a challenge, no doubt we step into the world of the unknown and it has a potential to change us forever. We need to seek right

solutions to the challenges we face. With the right mental attitude can certainly reframe the way one treats the challenges.

At this point I would like to recall the very first challenge I faced, ri at the beginning of my career, when I joined Indian Space Resea Organisation (ISRO) at Thiruvanathapuram in the middle of 1969 and how it tau me to transform the challenge into opportunity. Soon after I joined the Sp Department, I was assigned the development of one of the control systems for our laun vehicle. This topic was totally new to me and was very different from the subjects I had stud all through my graduation and post graduation. Therefore I was in a dilemma to accept assigned task with confidence, which had no connection with the subjects I had studied all alo during my study days. The option I had was to quit the job and join some other Organaisation. T certainly was the first great challenge of my career. I spent two days thinking over problem again and again, discussing with my seniors, family members and spending a lot time in library. At the end of two days, I still had a grip of fear of failing in my fi assignment. I do not know the precise reason, but I decided to accept the challenge. May be thought that it would provide me an opportunity to learn a new discipline right in the beginning my new career.

The difference between the probability of success and failure, when we face such challenge is only in our perception. How we represent things to ourselves determines our respons to that situation. Our positive response surely gives us the right solution. I spent a lot of m time in the next couple of months, studying the new subject intensely in library an discussing with the control experts in the department. Deep and deep I started exploring th new subject, not only it became interesting but more and more fascinating. This intens involvement and urge to learn something new led me to build a proto unit of the syste assigned to me successfully within a span of one and half years. I am happy that it has become forerunner for today's advanced control systems used in all our launch vehicles.

During 1975 when I applied for the commonwealth scholarship for doctoral studies a United Kingdom, they were looking for scientists working in the area of cutting edg technologies in India. Certainly my experience and learning this specialized field of aerospac control systems for five years facilitated my selection. I am happy that the decision I made t accept the challenge in the very beginning of my career helped me to open up an opportunity to do doctorate in a very specialized field in one of the premier Institutions at United Kingdom.

In all our careers and life, challenges are the real stuff of life. They certainly create an opportunity, make us stronger and smarter and provide us the way forward. Another important task, I undertook was the development of one of the complex systems for the fighter aircraft, which was denied by a foreign company although they had agreed to supply and the contract was signed. This happened due to sudden embargo imposed on us immediately after Pokhran test in 1998. It was a very complex product with precision and advanced engineering. It involved, among other things, networking with several agencies in the Country. It also demanded, building a number of facilities at different Organizations all over India. As we progressed we faced unmber of problems including a few failures. I knew that the road we travelled was very rough and the task took more than 10 years before the system was qualified and accepted. The lesson I learnt is the self-discovery. Such an experience gave me and to my entire team tremendous confidence to undertake such complex jobs in future. It would not be wrong that if I mention

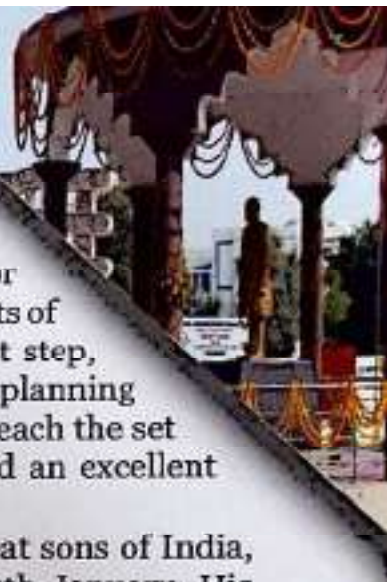

here that when we succeeded in building such a complex system India became the second country to master this technology in the world.

Important lesson is that until we jump into challenges we won't have any opportunities. It is one of the most empowering things we can do for ourselves. We chalked out well planned development route looking into all aspects of development and testing. We started controlling our steps from the very first step, systematically and cautiously, so that we are in the right direction. This kind of planning and execution made it much easier for us to maintain the right direction and reach the set goals. In my opinion it not only paved the way for success but also provided an excellent opportunity to learn many new and exciting things.

When we talk about the new learning, I am reminded of one of the great sons of India, Swami Vivekananda. His 154th birthday was celebrated all over India on 12th January. His teachings are numerous and immortal. One of his teachings which I love most is that. Experience is the greatest teacher in this world. The learning should continue till our last breath. Gaining knowledge should be our prime aim as we move on, in our lives. He adds further that the education which does not enable a person to stand on his own feet, does not teach him self-confidence and self-respect, is useless. Positive education is the need of the hour and it no doubt encourages learning newer and newer things till we gain self-confidence and self-respect.

All of you are proceeding to choose your own future options. If we look at the world we live in today it is imperative that we learn to integrate seamlessly the learning, research and innovation. We all know that the learning is acquiring the known knowledge, research is creating a new knowledge and innovation is converting the knowledge into wealth and social good. In a University, all of us learn a particular subject in great detail. All of you will be transiting from the college to either higher studies, your own chosen careers, may be start-ups, corporate world or any other area you may choose. The moment we step out of the University and start working in a real-life environment, we realize that what was already learnt is not quite enough. There is a need to learn new skills like taking a system view of things, shining the mental searchlight into unexplored territories, developing soft skills for dealing with people, working as a single team, so on and so forth. In a way you will be moving from the domain of predictability to unpredictability. We all need to shoulder bigger and bigger responsibilities as we move up in our career and in our future. So far you have been excelling as an individual. But once we move to the outside world we need to learn to work in teams in a multidisciplinary environment.

Having worked in the Space Department for the past four decades one thing I experienced is that we have great talent in India. The space systems are highly complex and most of them are banned items due to geopolitical situations and we have to build each one of them from scratch. Our scientists and engineers without foreign assistance have built all of them successfully and today Country has a very vibrant space programme. With 100 percent of our own indigenous talent we succeeded in our first attempt to reach Mars accurately, at a low cost and in a short time using our own indigenously built Mars orbiter mission, popularly known as MOM thus creating waves across the globe. In India we have several such examples in every other domain. We are also presently building the longest and highest bridge in the Himalayas which is one of the engineering marvels. We are the world leaders in information technology. This only proves that the Indian Talent in any domain you take, is second to none. I am very proud to see such an abundant talent in front of me here today. Often asked question to me is what is India's best export to the

world. No doubt it is the great Indian talent. Look at the Indra Nooyi as head of Coca Cola, SundarPichai as the CEO of Google. Anshu Jain as Co-CEO of Deutsche Bank, Satya Nandella as the CEO of Microsoft and many more in key positions all across the globe.

But India is fast changing and the entire world is in awe with our growth rate. Along with this growth India provides a lot of opportunities. Therefore the days of going abroad to seek opportunity and making it to top is no more required or necessary. Now is the time for the reverse flow and utilize the abundantly available opportunities in India. It is also time for our friends from abroad to come over to India and look for greener postures. Already we are seeing, the increased component of foreign nationals being employed in many of the Indian Institutions. Each one of you is very fortunate to be part of such a vibrant Nation and all of you have much bigger responsibility to transform the dreams of our beloved Dr APJ Abdul Kalam to make this Country as a developed nation by 2020 and also a world leader in the coming years.

I was very fortunate to have had the long association with Dr. APJ Abdul Kalam. When I joined ISRO, he was already working there and we worked together for 17 long years at Thiruvananthapuram for the development of Rockets needed for launching our satellites. He was a great motivator and able to integrate people with different backgrounds seamlessly to achieve the end goal. As many of you may know, he was the first Project Director for India's first launch vehicle SLV-3 which successfully launched our satellite from the Indian soil in July 1980 thus enabling India to join the elite club of five other developed nations. No doubt he was a visionary who went on to become the missile man of India, chief of defense research organization and then ultimately President of India known popularly as people's President.

The foresight and vision of Dr Kalam was extraordinary. As Project Director for SLV-3 at Thiruvananthapuram, during 70,s he used to visit the laboratories very frequently to discuss the progress of tasks and to motivate the scientists. My laboratory was no exception. When the system being developed by me started functioning we invited him to the laboratory. He spent a lot of time asking many sharp questions and shared his unbridled joy with us. While encouraging us to complete the task, he started discussing the possibility of developing the advanced systems for future. This is just one example of his foresight and his ability to visualize the long term needs of the Country. This is an important lesson I learnt and it is a also lesson for all of us even today.

We were fortunate enough to have many such visionaries in India who have impacted the Country's growth in a big way. While it was Dr Homi Babha, who seeded the development of complex technologies needed for the nuclear energy, it was Dr Vikram A Sarabhai, known as the father of the Indian space programme who visualized the importance of space for the Country's faster development. Dr. Swaminathan was responsible for the green revolution which has helped the Country to have self-sufficiency in food in spite of our large population of 1.3 billion. Dr Verghese Kurian brought in white revolution by activating the co-operative sector in Gujarat to ensure sufficient milk for all. The list can go on and on. I am mentioning these visionaries here, anticipating that we have here with us at least a few such future visionaries amongst you, who would make a big difference for the Country in the coming years.

Let me share another interesting experience with a great personality like Dr. Vikram A Sarabhai. Although he was Chairman ISRO, he was very humble and used to interact with all employees of the Organisation with ease. He used to visit our facilities at Thiruvananthapuram once in two months those days. During such visits, he used to find time to visit the laboratories where the development

tasks made good progress. On one of such visits in the last quarter of 1970, our laboratory was included in his itinerary. As a young engineer, I was thrilled by his visit to my laboratory and I was quite nervous to interact with such a great personality. I demonstrated the successful functioning of my system. He spent fairly a long time showing keen interest in the system, asking a number of questions and probing my understanding in the area. I still vividly remember his open appreciation of this development work by patting on my back in the presence of several senior officials and visitors. Even today I remember this incident vividly and motivated me to the hilt to stay back in ISRO. This is an excellent example how one can motivate the employees and bring in tremendous energy in them. This also illustrates the simplicity of such great visionaries.

My young friends, one question which bothers all of us is how to achieve the success as we proceed. From my experience I can tell you that we need to have a clearly defined goal. In India we complain often, on many of the problems we face and also on scarcity of certain things. Instead of complaining, why not we consider them as excellent opportunities for us, to find the right solutions to these problems. This also may help us in setting a goal. To achieve the goal we need to have aspirations, but our aspirations should be always high. Aspiration has to be coupled with the hard work. Let us all make sincere attempts to achieve the goal silently and the success as and when it happens creates noise. The failures should not deter us. Use the failures to learn great lessons which you would not be able to learn otherwise. Again working in the space department we learnt many of the complex technologies only through failures. I recall the frustration we had when we failed successively in two of our launches in the initial stages in 1987-88 during the development. Since space department always worked under embargo conditions, we did not have the luxury of technical assistance from any of the Countries. It was in a way blessing in disguise and forced us to learn complex things through hard work. The two failures I mentioned just now helped us to learn most of the lessons. I am also proud to mention that our launch vehicles as and when we launch from our own soil today, they contain almost all parts developed and built indigenously.

Many of you might have heard the common usage of rocket science when the task we carry out is not so very difficult. The very word rocket science comes from the fact that it is highly complex to achieve success in rocket launching. Whenever we launch a satellite from Satish Dhawan Space Centre, Shriharikota, it takes about 18 to 20min for the vehicle to travel approximately about 6000 to 7000 km across the globe carrying out thousands of operations autonomously before injecting the satellite at a an astonishing velocity of 28,800 km/s in the precise orbit specified. To achieve that success it is important to master the art of visualizing the invisible. In other words imagine all possibilities of failures and provide the right solutions in the design. With this one can make even seemingly impossible, possible. But it involves very systematic planning so that we address all eventualities. It also demands very creative thinking.

The question that comes to my mind after spending four decades in ISRO and facing a number of challenges is what is the take away for me. There were instances which made me very nervous while facing the challenges, since if I fail in any of these ventures, it was beyond one's imagination to guess the consequences. In many instances we would have ended up with the point of no return, but in the midst of difficulties we learnt to respond with the right mental attitude and to

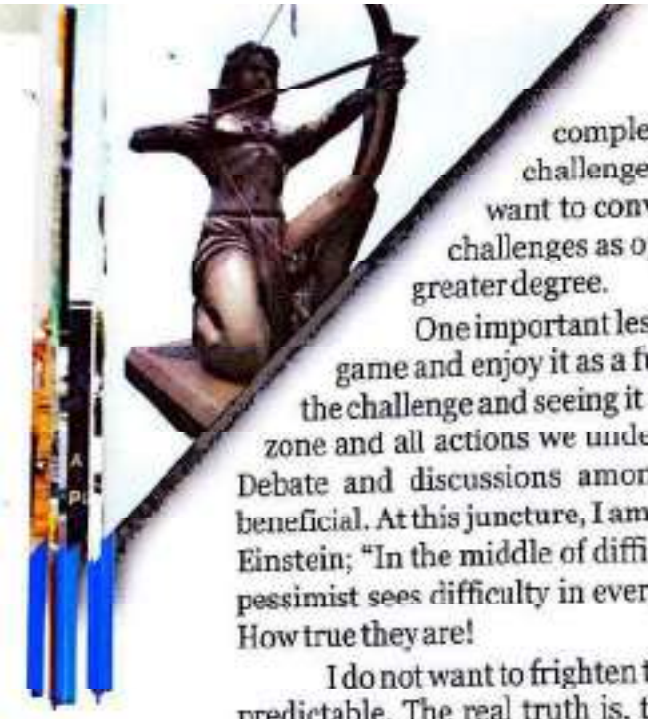

completely reframe our way to overcome the challenges. All the challenges are definitely the most valuable life experiences. Therefore I want to convey to you that each of these experiences helped us to see most challenges as opportunities and to harness our own personal abilities to an even greater degree.

One important lesson which I can share with you all is that to treat the challenge as a game and enjoy it as a fun. If we fear in taking a tough decision it prevents us from facing the challenge and seeing it as an opportunity. It is always necessary to step out of our comfort zone and all actions we undertake need much more attention than any one normally thinks. Debate and discussions amongst our colleagues to arrive at possible solutions are highly beneficial. At this juncture, I am reminded of the two important quotes on this topic, one by Albert Einstein; "In the middle of difficulty lies opportunities" and another by Winston Churchill; "The pessimist sees difficulty in every opportunity; the optimist sees opportunity in every difficulty". How true they are!

I do not want to frighten the graduating students but it is truth to say that the future is not so predictable. The real truth is, the change is certain. We have to prepare ourselves to face such turbulent conditions with grit, determination and our own imagination. We should never stop the learning process. So my young friends choose to uphold the legacy of your University which has moulded you all these years. Choose a destiny close to your heart which will aid to change India. Also you have to aim to reach where no one has before, but you also have to do, which no one has attempted to do before. This may demand taking calculated risks but it is worth it.

Finally I conclude by conveying my very best wishes to each one of you and I earnestly hope that each one of you will have a very bright career in India so that you become instrumental in transforming the Country as a developed nation in the immediate future.

कार्य परिषद् के सम्मानित सदस्यगण

1.	प्रो. पीयूष रंजन अग्रवाल, कुलपति	अध्यक्ष
2.	डॉ. एम.पी. सिंह, संकायाध्यक्ष, वाणिज्य, श्री एस. जी. आर. पी. जी. कालेज, डोभी, जौनपुर	सदस्य
3.	डॉ. दुर्गावती उपाध्याय, संकायाध्यक्ष, शिक्षा, श्री दुर्गा जी पी.जी. कालेज, चण्डेश्वर, आजमगढ़	सदस्य
4.	प्रो. रविन्द्रनाथ खरवार, वनस्पति विज्ञान विभाग, बीएचयू, वाराणसी	सदस्य
5.	डॉ. रामनरायण, बॉयोटेक्नालॉजी विभाग, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर	सदस्य
6.	प्रो. पन्नालाल विश्वकर्मा, मध्यकालीन एवं आधुनिक इतिहास विभाग, इ.वि.वि., इलाहाबाद	सदस्य
7.	प्रो. आर. सी. कटियार, इन्स्टीट्यूट आफ बिजनेस मैनेजमेन्ट, साहूजी महाराज कानपुर, वि.वि.,कानपुर	सदस्य
8.	डॉ. अरविन्द कुमार राम, प्राचार्य, राजकीय महाविद्यालय, सैदपुर, गाजीपुर	सदस्य
9.	डॉ. निरंकार सिंह, प्राचार्य, राजकीय महाविद्यालय मुफ्तीगंज, जौनपुर	सदस्य
10.	डॉ. अनिल कुमार तिवारी, प्राचार्य, राजकीय महिला पी. जी. कालेज, गाजीपुर	सदस्य
11.	डॉ. श्रीनिवास पाण्डेय, प्राचार्य, राजकीय महाविद्यालय, मोहम्मदाबाद, युसुफपुर, गाजीपुर	सदस्य
12.	डॉ. मसूद अख्तर, वनस्पति विज्ञान विभाग, शिब्ली नेशनल पी. जी. कालेज, आजमगढ़	सदस्य
13.	डॉ. बालेन्दु कुमार सिंह, वनस्पति विज्ञान विभाग, राजा हरपाल सिंह पी.जी.कालेज, सिंगरामऊ, जौनपुर	सदस्य
14.	डॉ. दामोदर सिंह, भूगोल विभाग, मलिकपुरा पी.जी. कालेज, मलिकपुरा, गाजीपुर	सदस्य
15.	डॉ. जे.पी.एन. सिंह, प्राणि विज्ञान विभाग, राजा हरपाल सिंह पी.जी.कालेज, सिंगरामऊ, जौनपुर	सदस्य
16.	मा. न्यायामूर्ति आर.आर.के. त्रिवेदी, इलाहाबाद उच्च न्यायालय, इलाहाबाद	सदस्य
17.	डॉ. दिलीप विद्याधर सरदेसाई, सेवानिवृत्त, प्राचार्य, बी.एस.एस.बी.कालेज, कानपुर	सदस्य
18.	प्रो. वीरेन्द्र कुमार मल्होत्रा, अर्थशास्त्र विभाग, इण्डियन काउन्सिल ऑफ सोशल साइंस रिसर्च, जेएनयू, नईदिल्ली	सदस्य
19.	डॉ. दीनानाथ सिंह, पूर्व विभागाध्यक्ष, राजनीति शास्त्र, बीएचयू, वाराणसी	सदस्य
20.	डॉ. देवराज, कुलसचिव	सचिव
21.	श्री एम.के. सिंह, वित्त अधिकारी	विशेष आमंत्रित

2016

प्रथम प्रयास में स्नातक कक्षा में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले संस्थागत विद्यार्थियों की सूची

1. 212238

नेहा साहू
पिता/पति : देवेन्द्र कुमार साहू
उ.ना.सिं.इं. ऑफ इं. एण्ड टे.वी.ब.सिं.पू.वि.वि., जौनपुर
बी.टेक., कम्प्यूटर साइंस एण्ड इन्जीनियरिंग
प्राप्तांक/ पूर्णांक : 3766 / 5000
श्रेणी : प्रथम
प्रतिशत : 75.32

2. 212305

नीता यादव
पिता/पति : दीनानाथ राम
उ.ना.सिं.इं. ऑफ इं. एण्ड टे.वी.ब.सिं.पू.वि.वि., जौनपुर
बी.टेक., इन्फारमेशन टेक्नोलॉजी
प्राप्तांक/ पूर्णांक : 3946 / 5000
श्रेणी : प्रथम
प्रतिशत : 78.92

3. 212008

शिखा सिंह
पिता/पति : मनोज कुमार सिंह
उ.ना.सिं.इं. ऑफ इं. एण्ड टे.वी.ब.सिं.पू.वि.वि., जौनपुर
बी.टेक., इलेक्ट्रॉनिक एवंकम्यूनिकेशन इन्जीनियरिंग
प्राप्तांक/ पूर्णांक : 4161 / 5000
श्रेणी : प्रथम
प्रतिशत : 83.22

4. 212645

सोनाली सिंह
पिता/पति : दलबहादुर सिंह
उ.ना.सिं.इं. ऑफ इं. एण्ड टे.वी.ब.सिं.पू.वि.वि., जौनपुर
बी.टेक., इलेक्ट्रिकल इन्जीनियरिंग
प्राप्तांक/ पूर्णांक : 3992 / 5000
श्रेणी : प्रथम
प्रतिशत : 79.84

5. 212127

भानु प्रताप
पिता/पति : बिजेन्द्र सिंह
उ.ना.सिं.इं. ऑफ इं. एण्ड टे.वी.ब.सिं.पू.वि.वि., जौनपुर
बी.टेक., इलेक्ट्रानिक्स एण्ड इन्स्ट्रूमेंटेशन इन्जीनियरिंग
प्राप्तांक/ पूर्णांक : 3929 / 5000
श्रेणी : प्रथम
प्रतिशत : 78.58

6. 212402

दृष्टि सिंह
पिता/पति : अरविंद कुमार सिंह
उ.ना.सिं.इं. ऑफ इं. एण्ड टे.वी.ब.सिं.पू.वि.वि., जौनपुर
बी.टेक., मैकेनिकल इंजीनियरिंग
प्राप्तांक/ पूर्णांक : 4064 / 5000
श्रेणी : प्रथम
प्रतिशत : 81.28

7. 3284310044

संदीप कुमार तिवारी
पिता/पति : जगलेश तिवारी
वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर (कैम्पस)
बी.फार्मा
प्राप्तांक/ पूर्णांक : 3751 / 4600
श्रेणी : प्रथम
प्रतिशत : 81.54

8. 9030

समृद्धि शर्मा
पिता/पति : जितेन्द्र शर्मा
टेक्निकल एजुकेशन एण्ड रिसर्च इन्स्टीट्यूट, पी.जी. कालेज, गाजीपुर
बी.बी.ए.
प्राप्तांक/ पूर्णांक : 3288/ 4000
श्रेणी : प्रथम
प्रतिशत :

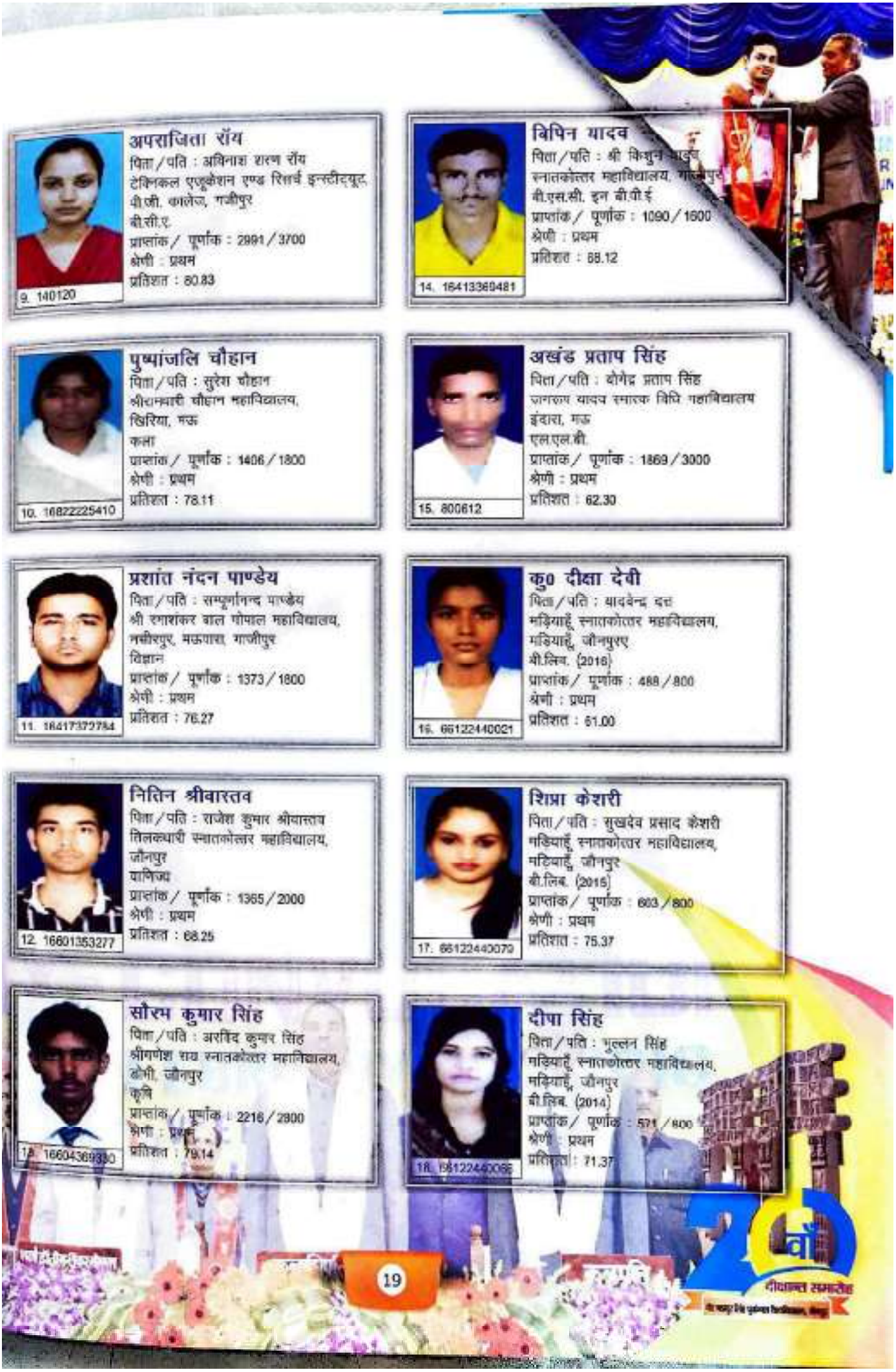

अपराजिता रॉय

पिता/पति : अविनाश शरण रॉय
टेक्निकल एजुकेशन एण्ड रिसर्च इन्स्टीट्यूट, पी.जी. कालेज, गाजीपुर
बी.सी.ए.
प्राप्तांक/ पूर्णांक : 2991/3700
श्रेणी : प्रथम
प्रतिशत : 80.83

9. 140120

विपिन यादव

पिता/पति : श्री विष्णु यादव
स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर
बी.एस.सी. इन बी.पी.ई
प्राप्तांक/ पूर्णांक : 1090/1600
श्रेणी : प्रथम
प्रतिशत : 68.12

14. 16413369481

पुष्पांजलि चौहान

पिता/पति : सुरेश चौहान
श्रीरामधारी चौहान महाविद्यालय, खिरिया, मऊ
कला
प्राप्तांक/ पूर्णांक : 1406/1800
श्रेणी : प्रथम
प्रतिशत : 78.11

10. 16822225410

अखंड प्रताप सिंह

पिता/पति : बोगेंद्र प्रताप सिंह
जगरूप यादव स्मारक विधि महाविद्यालय इंदारा, मऊ
एल.एल.बी.
प्राप्तांक/ पूर्णांक : 1869/3000
श्रेणी : प्रथम
प्रतिशत : 62.30

15. 800612

प्रशांत नंदन पाण्डेय

पिता/पति : सम्पूर्णानन्द पाण्डेय
श्री रणशंकर बाल गोपाल महाविद्यालय, नसीरपुर, मऊपाया, गाजीपुर
विज्ञान
प्राप्तांक/ पूर्णांक : 1373/1800
श्रेणी : प्रथम
प्रतिशत : 76.27

11. 16417372784

कु0 दीक्षा देवी

पिता/पति : यादवेन्द्र दत्त
मड़ियाहूँ, स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मड़ियाहूँ, जौनपुरए
बी.लिब. (2016)
प्राप्तांक/ पूर्णांक : 488/800
श्रेणी : प्रथम
प्रतिशत : 61.00

16. 66122440021

नितिन श्रीवास्तव

पिता/पति : राजेश कुमार श्रीवास्तव
तिलकधारी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जौनपुर
वाणिज्य
प्राप्तांक/ पूर्णांक : 1365/2000
श्रेणी : प्रथम
प्रतिशत : 68.25

12. 16601353277

शिप्रा केशरी

पिता/पति : सुखदेव प्रसाद केशरी
मड़ियाहूँ, स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मड़ियाहूँ, जौनपुर
बी.लिब. (2015)
प्राप्तांक/ पूर्णांक : 603/800
श्रेणी : प्रथम
प्रतिशत : 75.37

17. 66122440079

सौरभ कुमार सिंह

पिता/पति : अरविंद कुमार सिंह
श्रीगणेश राय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, डोभी, जौनपुर
कृषि
प्राप्तांक/ पूर्णांक : 2216/2800
श्रेणी : प्रथम
प्रतिशत : 79.14

13. 16604369830

दीपा सिंह

पिता/पति : भुल्लन सिंह
मड़ियाहूँ, स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मड़ियाहूँ, जौनपुर
बी.लिब. (2014)
प्राप्तांक/ पूर्णांक : 571/800
श्रेणी : प्रथम
प्रतिशत : 71.37

18. 66122440066

2016

प्रथम प्रयास में स्नातकोत्तर कक्षा में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले संस्थागत विद्यार्थियों की सूची

1. 213624

प्रियंक पाराशरी
पिता / पति : वीरेन्द्र कुमार पाराशरी
उ.ना.सिं.इं. ऑफ इं. एण्ड टे.वी.ब.सिं.पू.वि.वि.
जौनपुर
एम.सी.ए.
प्राप्तांक / पूर्णांक : 4609 / 6000
श्रेणी : प्रथम
प्रतिशत : 76.82

2. 14115001

सुमन सिंह
पिता / पति : रामबली
वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय
जौनपुर (कैम्पस)
एम.ए. (अप्लाइड साइकोलाजी)
प्राप्तांक / पूर्णांक : 1580 / 2000
श्रेणी : प्रथम
प्रतिशत : 79.00

3. 14114006

अंकित कुमार जायसवाल
पिता / पति : संजय कुमार जायसवाल
वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय
जौनपुर (कैम्पस)
एम.ए. (मास कम्युनिकेशन)
प्राप्तांक / पूर्णांक : 1411 / 2000
श्रेणी : प्रथम
प्रतिशत : 70.55

4. 14106004

नेहा राय
पिता / पति : नरेंद्र कुमार राय
वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय,
जौनपुर (कैम्पस)
एम.एस.सी. (बायोकेमेस्ट्री)
प्राप्तांक / पूर्णांक : 896 / 1200
श्रेणी : प्रथम
प्रतिशत : 74.66

5. 14105003

प्रज्जवल प्रताप सिंह
पिता / पति : प्रवीण प्रताप सिंह
वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय,
जौनपुर (कैम्पस)
एम.एस.सी. (बायोटेक्नोलाजी)
प्राप्तांक / पूर्णांक : 879 / 1200
श्रेणी : प्रथम
प्रतिशत : 73.25

6. 14108017

प्राची पाण्डेय
पिता / पति : सुबोध कुमार पाण्डेय
वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय,
जौनपुर (कैम्पस)
एम.एस.सी. (माइक्रोबायोलाजी)
प्राप्तांक / पूर्णांक : 910 / 1200
श्रेणी : प्रथम
प्रतिशत : 75.83

7. 14107004

अर्पणा राय
पिता / पति : अभिमन्यु राय
वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय,
जौनपुर (कैम्पस)
एम.एस.सी. (पर्यावरण विज्ञान)
प्राप्तांक / पूर्णांक : 909 / 1200
श्रेणी : प्रथम
प्रतिशत : 75.76

8. 14504

अ[illegible] कुमार सिंह
पिता / पति : राजकुमार सिंह
वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय
जौनपुर (कैम्पस)
एम.बी.ए. (बिजनेस [illegible])
प्राप्तांक / पूर्णांक : 1898 / 2800
श्रेणी : प्रथम
प्रतिशत : 67.79

9. 14211

लावा कुमार सिंह

पिता/पति : राजेश रमन सिंह
वीर बहादुर सिंह पूर्वान्चल विश्वविद्यालय
जौनपुर (कैम्पस)
एम.बी.ए. (एग्री–बिजनेस)
प्राप्तांक/ पूर्णांक : 1967 / 2800
श्रेणी : प्रथम
प्रतिशत : 70.25

10. 14430

श्रुति श्रीवास्तव

पिता/पति : जय शंकर श्रीवास्तव
वीर बहादुर सिंह पूर्वान्चल विश्वविद्यालय,
जौनपुर (कैम्पस)
एम.बी.ए. (फाइनेन्स एण्ड कन्ट्रोल)
प्राप्तांक/ पूर्णांक : 2174 / 2800
श्रेणी : प्रथम
प्रतिशत : 77.64

11. 14634

बबीता विश्वकर्मा

पिता/पति : महेंद्र प्रसाद विश्वकर्मा
वीर बहादुर सिंह पूर्वान्चल विश्वविद्यालय,
जौनपुर (कैम्पस)
एम.बी.ए. (एच.आर.डी.)
प्राप्तांक/ पूर्णांक : 2066 / 2800
श्रेणी : प्रथम
प्रतिशत : 73.79

12. 14124

निवेदिता श्रीवास्तव

पिता/पति : अनिल कुमार श्रीवास्तव
वीर बहादुर सिंह पूर्वान्चल विश्वविद्यालय,
जौनपुर (कैम्पस)
एम.बी.ए.
प्राप्तांक/ पूर्णांक : 2143 / 2800
श्रेणी : प्रथम
प्रतिशत : 76.54

13. 14701

अंजली मौर्य

पिता/पति : [illegible] कुमार मौर्य
[illegible]र बहादुर सिंह पूर्वान्चल विश्वविद्यालय,
जौनपुर (कैम्पस)
[illegible]न.एच.आर.[illegible]
[illegible]क/ पूर्णांक : [illegible] / [illegible]00
श्रेणी : प्रथम
प्रतिशत : 69.57

14. 14301

रवि प्रकाश सिंह

पिता/पति : जगदीश सिंह
वीर बहादुर सिंह पूर्वान्चल विश्वविद्यालय,
जौनपुर (कैम्पस)
एम.बी.ए. (ई–कॉमर्स)
प्राप्तांक/ पूर्णांक : 1976 / 2800
श्रेणी : प्रथम
प्रतिशत : 70.57

15. 16601460695

बीनू मौर्य

पिता/पति : लाल बहादुर मौर्य
तिलकधारी स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
जौनपुर
विज्ञान (गणित)
प्राप्तांक/ पूर्णांक : 955 / 1200
श्रेणी : प्रथम
प्रतिशत : 79.58

16. 16604479820

सूरज प्रकाश पाठक

पिता/पति : हृदय नारायण पाठक
सन्त गणिनाथ राजकीय महाविद्यालय,
मोहम्मदाबाद, गोहना, मऊ
विज्ञान (भौतिक विज्ञान)
प्राप्तांक/ पूर्णांक : 867 / 1200
श्रेणी : प्रथम
प्रतिशत : 72.25

17. 16620479692

गौरव सिंह

पिता/पति : कुँअर बहादुर सिंह
मोहम्मद हसन डिग्री कॉलेज,
जौनपुर
विज्ञान (रसायन विज्ञान)
प्राप्तांक/ पूर्णांक : 909 / 1200
श्रेणी : प्रथम
प्रतिशत : 75.75

18. 16201479844

सादिया नसीम

पिता/पति : [illegible] आजमी
शिब्ली [illegible] कॉलेज,
आजमगढ़
विज्ञान ([illegible] विज्ञान)
प्राप्तांक/ पूर्णांक : 828 / 1200
श्रेणी : प्रथम
प्रतिशत : 69.00

19. 16607479959

[illegible]ता सिंह

पिता / पति : संजय सिंह
कुटीर स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
चक्के, जौनपुर
विज्ञान (प्राणी विज्ञान)
प्राप्तांक / पूर्णांक : 828 / 1200
श्रेणी : प्रथम
प्रतिशत : 69.00

23. 16601478914

आशीष कुमार श्रीवास्तव

पिता / पति : अच्युतानन्द श्रीवास्तव
तिलकधारी स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
जौनपुर
कृषि (एग्रीकल्चर इकोनॉमिक्स)
प्राप्तांक / पूर्णांक : 732 / 1000
श्रेणी : प्रथम
प्रतिशत : 73.20

20. 16601480213

अभिलक्षा

पिता / पति : अरविंद कुमार सिंह
तिलकधारी स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
जौनपुर
विज्ञान (वनस्पति विज्ञान)
प्राप्तांक / पूर्णांक : 978 / 1200
श्रेणी : प्रथम
प्रतिशत : 81.50

24. 16204478947

शिवांगी पाण्डेय

पिता / पति : पारसनाथ पाण्डेय
श्रीदुर्गाजी स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
चण्डेसर, आजमगढ़
कृषि (एग्रोनॉमी)
प्राप्तांक / पूर्णांक : 643 / 800
श्रेणी : प्रथम
प्रतिशत : 80.37

21. 895117

प्रशांत मिश्रा

पिता / पति : विनय शंकर मिश्रा
तिलकधारी स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
जौनपुर
एल.एल.एम. (2015)
प्राप्तांक / पूर्णांक : 716 / 1100
श्रेणी : प्रथम
प्रतिशत : 65.36

25. 16601478931

दीनानाथ मौर्य

पिता / पति : नागेन्द्रनाथ मौर्य
तिलकधारी स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
जौनपुर
कृषि (इन्टोमोलॉजी)
प्राप्तांक / पूर्णांक : 597 / 800
श्रेणी : प्रथम
प्रतिशत : 74.62

22. 16601479031

राहुल त्रिपाठी

पिता / पति : संजय कुमार त्रिपाठी
तिलकधारी स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
जौनपुर
कृषि. एग्रीकल्चर केमेस्ट्री एण्ड स्वायल साइंस
प्राप्तांक / पूर्णांक : 578 / 800
श्रेणी : प्रथम
प्रतिशत : 72.25

26. 16601478800

निधि सिंह

पिता / पति : अनिल सिंह
तिलकधारी स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
जौनपुर
कृषि (जेनेटिक्स एण्ड प्लांट ब्रीडिंग)
प्राप्तांक / पूर्णांक : 625 / 800
श्रेणी : प्रथम
प्रतिशत : 78.12

27. 16413479003

अमित कुमार सिंह

पिता / पति : अनिल कुमार सिंह
स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
गाजीपुर
कृषि (हार्टिकल्चर)
प्राप्तांक / पूर्णांक : 789 / 1000
श्रेणी : प्रथम
प्रतिशत : 78.90

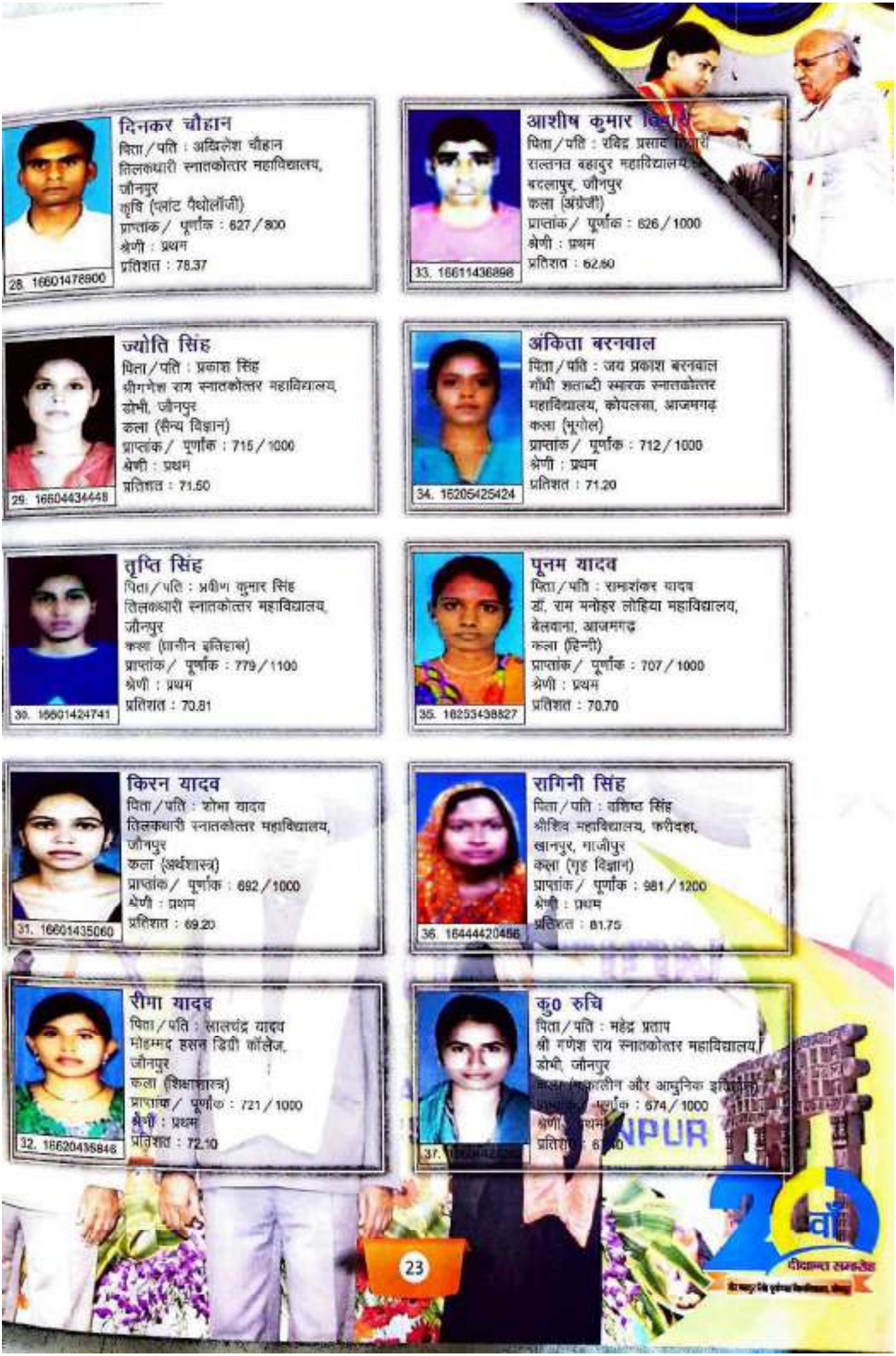

28. 16601478900

दिनकर चौहान
पिता/पति : अखिलेश चौहान
तिलकधारी स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
जौनपुर
कृषि (प्लांट पैथोलॉजी)
प्राप्तांक/ पूर्णांक : 627/800
श्रेणी : प्रथम
प्रतिशत : 78.37

29. 16604434448

ज्योति सिंह
पिता/पति : प्रकाश सिंह
श्रीगणेश राय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
डोभी, जौनपुर
कला (सैन्य विज्ञान)
प्राप्तांक/ पूर्णांक : 716/1000
श्रेणी : प्रथम
प्रतिशत : 71.60

30. 16601424741

तृप्ति सिंह
पिता/पति : प्रवीण कुमार सिंह
तिलकधारी स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
जौनपुर
कला (प्राचीन इतिहास)
प्राप्तांक/ पूर्णांक : 779/1100
श्रेणी : प्रथम
प्रतिशत : 70.81

31. 16601435060

किरन यादव
पिता/पति : शोभा यादव
तिलकधारी स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
जौनपुर
कला (अर्थशास्त्र)
प्राप्तांक/ पूर्णांक : 692/1000
श्रेणी : प्रथम
प्रतिशत : 69.20

32. 16620436846

रीमा यादव
पिता/पति : लालचंद्र यादव
मोहम्मद हसन डिग्री कॉलेज,
जौनपुर
कला (शिक्षाशास्त्र)
प्राप्तांक/ पूर्णांक : 721/1000
श्रेणी : प्रथम
प्रतिशत : 72.10

33. 16611436898

आशीष कुमार [illegible]
पिता/पति : रविंद्र प्रसाद [illegible]
सल्तनत बहादुर महाविद्यालय,
बदलापुर, जौनपुर
कला (अंग्रेजी)
प्राप्तांक/ पूर्णांक : 626/1000
श्रेणी : प्रथम
प्रतिशत : 62.60

34. 16205425424

अंकिता बरनवाल
पिता/पति : जय प्रकाश बरनवाल
गाँधी शताब्दी स्मारक स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, कोयलसा, आजमगढ़
कला (भूगोल)
प्राप्तांक/ पूर्णांक : 712/1000
श्रेणी : प्रथम
प्रतिशत : 71.20

35. 16253438827

पूनम यादव
पिता/पति : रामशंकर यादव
डॉ. राम मनोहर लोहिया महाविद्यालय,
बेलवाना, आजमगढ़
कला (हिन्दी)
प्राप्तांक/ पूर्णांक : 707/1000
श्रेणी : प्रथम
प्रतिशत : 70.70

36. 16444420486

रागिनी सिंह
पिता/पति : वशिष्ठ सिंह
श्रीशिव महाविद्यालय, करीदहा,
खानपुर, गाजीपुर
कला (गृह विज्ञान)
प्राप्तांक/ पूर्णांक : 981/1200
श्रेणी : प्रथम
प्रतिशत : 81.75

37. [illegible]

कु0 रुचि
पिता/पति : महेंद्र प्रताप
श्री गणेश राय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
डोभी, जौनपुर
[illegible] कालीन और आधुनिक इतिहास)
[illegible] पूर्णांक : 674/1000
श्रेणी : [illegible]
प्रतिशत : [illegible]

मनीष कुमार प्रजापति
पिता/पति : बुद्धुराम प्रजापति
शिब्ली नेशनल कॉलेज,
आजमगढ़
कला (दर्शनशास्त्र)
प्राप्तांक/ पूर्णांक : 650 / 1000
श्रेणी : प्रथम
प्रतिशत : 65.00

38. 16201427406

सना अमीन
पिता/पति : अब्दुल अमीन
श्री राम दुलार पहलवान महाविद्यालय,
सेमरी, शाहपुर, जौनपुर
कला (समाजशास्त्र)
प्राप्तांक/ पूर्णांक : 694 / 1000
श्रेणी : प्रथम
प्रतिशत : 69.40

42. 16681433406

सौम्या यादव
पिता/पति : अजय यादव
तिलकधारी स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
जौनपुर
कला (राजनीतिशास्त्र)
प्राप्तांक/ पूर्णांक : 665 / 1000
श्रेणी : प्रथम
प्रतिशत : 66.50

39. 16601443410

सना
पिता/पति : मोहम्मद अरशद
शिब्ली नेशनल कॉलेज,
आजमगढ़
कला (उर्दू)
प्राप्तांक/ पूर्णांक : 775 / 1000
श्रेणी : प्रथम
प्रतिशत : 77.50

43. 16201445113

नीलम चतुर्वेदी
पिता/पति : शोभनाथ चतुर्वेदी
गाँधी स्मारक त्रिवेणी महाविद्यालय,
बरदह, आजमगढ़
कला (मनोविज्ञान)
प्राप्तांक/ पूर्णांक : 665 / 1000
श्रेणी : प्रथम
प्रतिशत : 66.50

40. 16209427562

कु0 आंकाक्षा सिंह
पिता/पति : जय प्रकाश सिंह
मलिकपुरा डिग्री कॉलेज,
मलिकपुरा, गाजीपुर
एम.कॉम
प्राप्तांक/ पूर्णांक : 888 / 1200
श्रेणी : प्रथम
प्रतिशत : 74.00

44. 16404474730

योगेश कुमार यादव
पिता/पति : अच्छेलाल यादव
तिलकधारी स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
जौनपुर
कला (संस्कृत)
प्राप्तांक/ पूर्णांक : 741 / 1000
श्रेणी : प्रथम
प्रतिशत : 74.10

41. 16601444434

अमित कुमार
पिता/पति : रामसमुझ यादव
राजाहरपाल सिंह महाविद्यालय, सिंगरामऊ
जौनपुर
एम.एड. (2015)
प्राप्तांक/ पूर्णांक : 542 / 700
श्रेणी : प्रथम
प्रतिशत : 77.42

45. 15608483858

अमित कुमार दूबे
पिता/पति : सच्चिदानन्द दूबे
रामनवल सिंह स्मारक महाविद्यालय,
चिरैयाकोट, मऊ
एम.एड. (2014)
प्राप्तांक/ पूर्णांक : [illegible] / 700
श्रेणी : प्रथम
प्रतिशत : [illegible]

46. [illegible]

20वाँ दीक्षान्त समारोह

विश्वविद्यालय की गतिविधियाँ

जनवरी, 2016 - जनवरी, 2017

जनवरी, 2016

1. 04 जनवरी को वित्त समिति की बैठक का आयोजन किया गया।
2. 09 जनवरी को विश्वविद्यालय के परिसर में उत्तर प्रदेश के राज्य विश्वविद्यालयों के कुलपति गण के साथ मा. कुलाधिपति महोदय की अध्यक्षता में कुलपति सम्मेलन का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया।
3. 12 जनवरी को विश्वविद्यालय के विवेकानन्द केन्द्रीय लाईब्रेरी में स्वामी विवेकानन्द की जयन्ती मनायी गयी।
4. 12 जनवरी को विश्वविद्यालय के जनसंचार विभाग में वीडियो प्रोग्राम प्रोडक्शन विषय पर विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस विशेष व्याख्यान में दूरदर्शन केन्द्र, वाराणसी के डा0 सन्तोष मिश्र ने रिपोर्ट, टेलीविजन एवं स्क्रिप्ट लेखन के विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से प्रकाश डाला।
5. 13 जनवरी को विश्वविद्यालय के वित्तीय अध्ययन विभाग द्वारा लेखांकन एवं वित्तीय विश्लेषण विषयक दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।
6. 15 एवं 16 जनवरी को विश्वविद्यालय में विभिन्न विषयों में पी-एच0डी0 में प्रवेश हेतु काउंसलिंग करायी गयी।
7. 23 जनवरी को विश्वविद्यालय के सेवर्स रेजर्स भवन में नेता जी सुभाष चन्द्र बोस की 120वीं जयन्ती मनायी गयी। इस अवसर पर गोष्ठी का आयोजन किया गया।
8. 27 से 30 जनवरी तक पुणे में आयोजित युवा छात्र संसद में विश्वविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना की छह सदस्यीय टीम ने प्रतिभाग किया।
9. खेल गतिविधियाँ–

1. **अन्तर महाविद्यालयीय हैण्डबाल (पुरुष) प्रतियोगिता–** यह प्रतियोगिता 11 जनवरी को विश्वविद्यालय परिसर स्थित एकलव्य स्टेडियम में आयोजित की गयी जिसमें 08 महाविद्यालयों की टीमों ने भाग लिया एवं कुछ महाविद्यालयों के खिलाड़ियों का अलग-2 ट्रायल लिया गया। प्रदर्शन के आधार पर विश्वविद्यालय की टीम का चयन किया गया। प्रतियोगिता में डीसीएसके महाविद्यालय, मऊ को प्रथम स्थान, पीजी कालेज, गाजीपुर को द्वितीय स्थान तथा तिलकधारी महाविद्यालय, जौनपुर को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ।
2. **अन्तर महाविद्यालयीय वालीबाल (महिला) प्रतियोगिता–** यह प्रतियोगिता 13 जनवरी को विश्वविद्यालय परिसर में सम्पन्न हुई। प्रतियोगिता में 06 महाविद्यालयों ने प्रतिभाग किया। प्रदर्शन के आधार पर विश्वविद्यालय की टीम का चयन किया गया।प्रतियोगिता तिलकधारी महाविद्यालय, जौनपुर को प्रथम स्थान, समरजीत महाविद्यालय, बीरभानपुर जौनपुर को द्वितीय स्थान तथा फातिमा हिन्द गर्ल्स डिग्री कालेज, आजमगढ को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ।

उपलब्धियां–

1. **अखिल भारतीय (All India) तीरंदाजी प्रतियोगिता–** यह प्रतियोगिता 06 से 11 जनवरी तक पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला में सम्पन्न हुई, जिसमें इण्डियन राउण्ड में विश्वविद्यालय की टीम को द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ।
2. **अखिल भारतीय (All India) कुश्ती प्रतियोगिता (महिला/पुरुष)–** यह प्रतियोगिता 18 से 22 जनवरी को मैसूर विश्वविद्यालय, कर्नाटक में सम्पन्न हुई, जिसमें विश्वविद्यालय को ग्रीको रोमन 59 कि0ग्रा0 भारवर्ग में तृतीय स्थान एवं ग्रीको रोमन 66 किग्रा. भार वर्ग में तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। महिला वर्ग में 60 किग्रा. भारवर्ग में विश्वविद्यालय की टीम को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ।
3. **अखिल भारतीय (All India) भारोत्तोलन प्रतियोगिता–** यह प्रतियोगिता 11 से 14 जनवरी को आचार्य नागार्जुन विश्वविद्यालय गुन्टूर में सम्पन्न हुई, जिसमें विश्वविद्यालय को महिला वर्ग में पहली बार द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ।
4. **पूर्वी जोन खो-खो (महिला) प्रतियोगिता–** यह प्रतियोगिता 28 जनवरी से 01 फरवरी तक महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ में सम्पन्न हुई, जिसमें विश्वविद्यालय की टीम को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ तथा अखिल भारतीय (All India) प्रतियोगिता हेतु अर्हता प्राप्त किया ।

माह:फरवरी 2016

1. 03 फरवरी को परीक्षा समिति तथा दीक्षा– 10 फरवरी को कार्य परिषद की बैठक का आयोजन किया गया।
2. 04 फरवरी को विश्वविद्यालय के इन्जीनियरिंग एवं तकनीकी संस्थान द्वारा 'आपरेशन मैनेजमेन्ट एंव मैनुफैक्चरिंग' विषय पर व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। व्याख्यानमाला के मुख्य वक्ता आई.आई.टी. बी.एच.यू. वाराणसी के प्रो. एस. पी. तिवारी ने शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को प्रबन्धन की कार्यप्रणाली से अवगत कराया।
3. 06 फरवरी को विश्वविद्यालय के इण्डस्ट्री इन्टीट्यूट इन्टरफेस प्रकोष्ठ द्वारा 'सफलता के मूल मंत्र' विषयक व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस व्याख्यानमाला में प्रमुख उद्यमी एवं समाजसेवी श्री दीनानाथ झुनझुनवाला ने विद्यार्थियों को सफलता के गुर सिखाया।
4. 09 फरवरी को विश्वविद्यालय के संगोष्ठी भवन में स्वास्थ्य संबंधी व्याख्यान

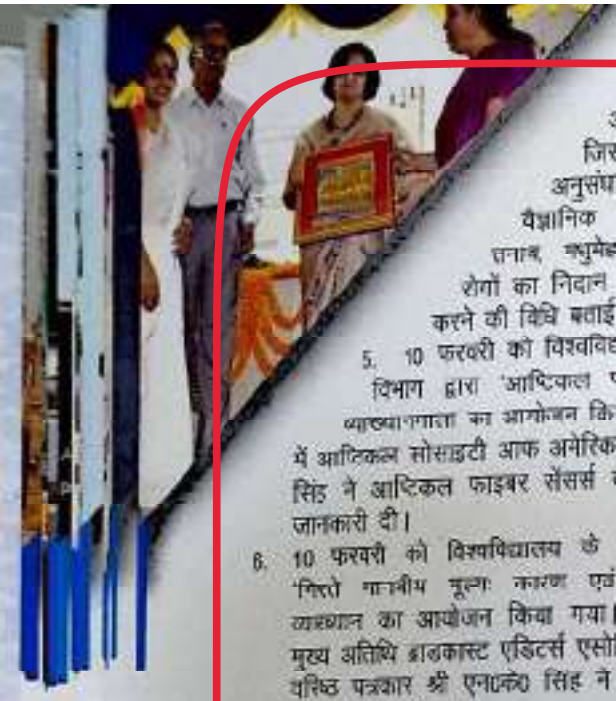

आयोजित किया गया। जिसमें केन्द्रीय औषधि अनुसंधान संस्थान के मुख्य वैज्ञानिक डा0 राकेश मौर्य ने तनाव, मधुमेह, हड्डी क्षीणता आदि रोगों का निदान प्राकृतिक वनस्पतियों से करने की विधि बताई।

5. 10 फरवरी को विश्वविद्यालय के व्यवसाय प्रबंध विभाग द्वारा 'आप्टिकल फाइबर सेंसर्स' विषयक व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। इस व्याख्यान में आप्टिकल सोसाइटी आफ अमेरिका के फेलो प्रो0 जगदीश सिंह ने आप्टिकल फाइबर सेंसर्स के विभिन्न पहलुओं की जानकारी दी।

6. 10 फरवरी को विश्वविद्यालय के जनसंचार विभाग द्वारा 'गिरते मानवीय मूल्य: कारण एवं समाधान' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस व्याख्यानमाला में मुख्य अतिथि ब्राडकास्ट एडिटर्स एसोसिएशन के महासचिव व वरिष्ठ पत्रकार श्री एन0के0 सिंह ने विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को सम्बोधित किया।

7. विश्वविद्यालय परिसर में संचालित पाठ्यक्रमों में सत्र 2016–17 में प्रवेश हेतु दिनांक–12 फरवरी से आवेदन फार्म भरने का कार्य प्रारम्भ हुआ।

8. 13 फरवरी को विश्वविद्यालय के उन्नीसवें दीक्षान्त समारोह का आयोजन किया गया। दीक्षान्त समारोह में 339 शोध छात्र–छात्राओं को पी–एच0डी0 की उपाधि तथा प्रथम प्रयास में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले 58 विद्यार्थियों को स्वर्ण पदक प्रदान किया गया। मा0 कुलाधिपति जी के निर्देश के अनुपालन में दीक्षान्त समारोह की अध्यक्षता प्रोफेसर पीयूष रंजन अग्रवाल, कुलपति, वीर बहादुर सिंह पूर्वान्चल विश्वविद्यालय, जौनपुर ने किया। पद्मश्री डा0 प्रेम शंकर गोयल, मानद अतिविशिष्ट प्रोफेसर भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो), बेंगलुरु समारोह के मुख्य अतिथि रहे।

9. विश्वविद्यालय के 40 विद्यार्थियों की टीम ने 24 एवं 25 फरवरी, 2016 को दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर में आयोजित अंतर विश्वविद्यालयीय युवा महोत्सव के तहत साहित्यिक, संगीत, मंच कला, फाइन आर्ट एवं नृत्य प्रतियोगिताओं में भाग लिया तथा अपनी बेहतरीन प्रस्तुतियों के साथ 05 पुरस्कार प्राप्त किये।

10. रोवर्स – रेंजर्स गतिविधियाँ

(i) जनपद आजमगढ़ से सम्बद्ध महाविद्यालयों का जनपदीय समागम गंगा गौरी पी.जी. कालेज, रामनगर, बैजाबारी, आजमगढ़ में 31 जनवरी से 01 फरवरी तक सम्पन्न हुआ जिसमें रोवर्स में राजदेव कृषक पी.जी. कालेज, [illegible], आजमगढ़ एवं रेंजर्स में रामदेव मेमोरियल महाविद्यालय, रानीपुर, रजमो, आजमगढ़ प्रथम विजेता घोषित हुए।

(ii) जनपद जौनपुर से सम्बद्ध महाविद्यालयों का जनपदीय समागम [illegible] पी.जी. कालेज, जौनपुर के प्रांगण में दिनांक 08 फरवरी से 09 फरवरी तक सम्पन्न हुआ, जिसमें रोवर्स में आर.एस.के.डी. कालेज, जौनपुर व बयालसी डिग्री कालेज, जलालपुर, जौनपुर तथा रेंजर्स में मड़ियाहूं पी.जी. कालेज, मड़ियाहूं, जौनपुर एवं मो. हसन पी.जी. कालेज, जौनपुर को संयुक्त रूप से विजेता घोषित किया गया।

(iii) जनपद गाजीपुर से सम्बद्ध महाविद्यालयों का जनपदीय समागम 09 फरवरी से 10 फरवरी तक पी.जी. कालेज, गाजीपुर के प्रांगण में सम्पन्न हुआ जिसमें रोवर्स एवं रेंजर्स में पी.जी. कालेज, गाजीपुर को विजेता घोषित किया गया।

(iv) जनपद मऊ से सम्बद्ध महाविद्यालयों का जनपदीय समागम दिनांक 16 फरवरी से 17 फरवरी तक डी.सी.एस.के. पी.जी. कालेज, मऊ के प्रांगण में सम्पन्न हुआ जिसमें डी.सी.एस.के. पी.जी. कालेज, मऊ प्रथम विजेता घोषित किया गया।

11. खेल गतिविधियाँ –

(1) पूर्व क्षेत्र अन्तर विश्वविद्यालयीय वालीबाल (महिला) – यह प्रतियोगिता 16 फरवरी को खेली गयी जिसमें विभिन्न राज्यों की 16 विश्वविद्यालयों की टीमों ने प्रतिभाग किया। अंकों के आधार पर परिणाम निम्नवत् रहा –

(अ) वीर बहादुर सिंह पूर्वान्चल विश्वविद्यालय, जौनपुर (उ.प्र.) –प्रथम स्थान

(ब) रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय, पश्चिम बंगाल–द्वितीय स्थान

(स) पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर(छत्तीसगढ़)–तृतीय स्थान

(द) रांची विश्वविद्यालय, रांची (झारखंड)– चतुर्थ स्थान

उपलब्धियां–

(1) पूर्वी क्षेत्र हैण्डबाल (महिला)–यहप्रतियोगिता दिनांक 16 से 21 फरवरी, 2016 तक काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी में सम्पन्न हुई, जिसमें विश्वविद्यालय की महिला टीम ने प्रथम स्थान प्राप्त कर कीर्तिमान स्थापित किया।

(2) पूर्वी क्षेत्र हैण्डबाल (पुरुष)–यह प्रतियोगिता दिनांक 16 फरवरी से 21 फरवरी तक काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी में सम्पन्न हुई, जिसमें विश्वविद्यालय की पुरुष टीम ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

(3) अखिल भारतीय अन्तर विश्वविद्यालयीय (All India) हैण्डबाल प्रतियोगिता (पुरुष) – यह प्रतियोगिता काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी में23 फरवरी से 27 फरवरी तक खेली गयी, जिसमें विश्वविद्यालय की टीम ने शानदार प्रदर्शन करते हुए प्रथम स्थान प्राप्त किया। उक्त प्रतियोगिता में समस्त भारत से 16 टीमें (प्रत्येक जोन से 4 टीमें) भाग लेती हैं।

(4) अखिल भारतीय अन्तर विश्वविद्यालयीय (All India) हैण्डबाल प्रतियोगिता (महिला) – यह प्रतियोगिता काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी में दिनांक 23 से 27फरवरी, 2016 तक खेली गयी। अखिल भारतीय स्तर पर विश्वविद्यालय की महिला टीम को द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ।

फरवरी, 2016 तक विश्वविद्यालय के 437 पी–एच.डी. शोध प्रबन्ध विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के वेबसाइट 'शोध गंगा' पर अपलोड किये गये।

फरवरी, 2016 तक AISHE के अन्तर्गत सत्र 2015–2016 हेतु 521 महाविद्यालयों का पंजीकरण तथा 404 महाविद्यालयों का फार्म अपलोड कराया जा चुका है।

माह : मार्च 2016

विश्वविद्यालय से सम्बद्ध पूर्वी उत्तर प्रदेश के पाँच जनपदों जौनपुर, आजमगढ़, गाजीपुर, मऊ एवं इलाहाबाद में स्थित महाविद्यालयों की सत्र 2015–16 की वार्षिक परीक्षाएं विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित परीक्षा केन्द्रों पर 03 मार्च, 2016 से प्रारम्भ हुई जो दिनांक – 05 मई तक चली। परीक्षाओं के सुविधापूर्ण एवं नकल विहीन संचालन हेतु सभी जनपदों में अलग–अलग उड़ाकादल का गठन किया गया। साथ ही विश्वविद्यालय स्तर पर केन्द्रीय त्रिस्तरीय पर्यवेक्षकों की टीम का गठन किया गया। इन टीमों द्वारा परीक्षा केन्द्रों का आकस्मिक निरीक्षण कर रिपोर्ट प्रस्तुत की गई, परीक्षाएं सुचारू रूप से शांतिपूर्ण माहौल में सम्पन्न हुई।

05 मार्च को विश्वविद्यालय के वित्तीय अध्ययन विभाग द्वारा एक गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस गोष्ठी में चौधरी रणवीर सिंह विश्वविद्यालय, हरियाणा के डीन, फैकल्टी आफ कामर्स मैनेजमेंट प्रो0 एस0 के0 सिन्हा ने मुख्य अतिथि के रूप में विद्यार्थियों को सम्बोधित किया।

11 मार्च को विश्वविद्यालय के महिला सेल द्वारा शैक्षणिक संस्थानों में लैंगिक भेद व उत्पीड़न के रोकथाम व निषेध विषयक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में रामानंद सरस्वती पुस्तकालय, जोकहरा, आजमगढ़ की निदेशिका डॉ0 हिना देसाई एवं आर्य महिला पी0जी0 कालेज वाराणसी की शिक्षिका डॉ0 वंदना चौबे ने अपना विचार व्यक्त किया।

15 मार्च को विश्वविद्यालय के व्यवसाय प्रबंध विभाग ने विश्वउपभोक्ता दिवस के अवसर पर संगोष्ठी का आयोजन किया। इस संगोष्ठी में उपभोक्ताओं के अधिकारों और उनकी सुरक्षा से जुड़े पहलुओं पर चर्चा हुई तथा उपभोक्ताओं को बाजार की गतिविधियों से अवगत कराया गया।

17 मार्च 2016 से विश्वविद्यालय परिसर में केन्द्रीय मूल्यांकन का कार्य प्रारम्भ हुआ। इस वर्ष विश्वविद्यालय में केन्द्रीय मूल्यांकन हेतु पाँच केन्द्र बनाये गये।

रोवर्स–रेंजर्स गतिविधियाँ –

राजकीय महिला पी.जी. कालेज, गाजीपुर में 01 मार्च से 03 मार्च तक प्रादेशिक रोवर्स–रेंजर्स समागम का आयोजन किया गया, जिसमें विश्वविद्यालय की रोवर्स टीम ने प्रदेश में द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

खेल गतिविधियाँ– वार्षिक खेलकूद समारोह

02 से 04 मार्च तक विश्वविद्यालय परिसर के विद्यार्थियों की खेल स्पर्धा का आयोजन किया गया। इस तीन दिवसीय खेलकूद प्रतियोगिता में बीटेक विभाग ने चैम्पियन होने का गौरव प्राप्त किया जबकि फार्मेसी की टीम उप विजेता रही। महिला वर्ग में कुमारी रंजीता एवं पुरुष वर्ग में सूर्यप्रताप सिंह को बेस्ट एथलीट का खिताब प्रदान किया गया। वालीबाल पुरुष वर्ग में मैकेनिकल विभाग विजेता रही। इलेक्ट्रिकल की टीम उपविजेता रही। महिला वर्ग में इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग ... हुई। इलेक्ट्रानिक्स इंजीनियरिंग दूसरे स्थान पर रहा। ... महिला वर्ग में मैकेनिकल इंजीनियरिंग की टीम ने प्रथम इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग की टीम ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। एमबीए की टीम तृतीय स्थान पर रही। रिले रेस में फार्मेसी प्रथम व बीटेक द्वितीय स्थान पर रहा।

हैंडिल रेस महिला वर्ग में साधना प्रथम व रश्मि द्वितीय स्थान पर रही। पुरुष वर्ग में आदर्श कुमार प्रथम व अखिल द्वितीय स्थान पर रहे। शाटपुट पुरुष वर्ग में पवन सिंह प्रथम, प्रेमचन्द द्वितीय स्थान पर रहे। महिला वर्ग, में प्रभावती प्रथम व मनीषा दूसरे स्थान पर रही। समापन के अवसर पर खिलाड़ियों को पुरस्कार प्रदान किया गया। प्रोफेसर कीर्ति सिंह, पूर्व कुलपति, आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, फैजाबाद मुख्य अतिथि थे।

8. मार्च, 2016 तक 0AISHE के अन्तर्गत सत्र 2015–2016 हेतु 578 महाविद्यालयों का पंजीकरण तथा 451 महाविद्यालयों का फार्म अपलोड कराया जा चुका है।

माह : अप्रैल 2016

1. 25 अप्रैल को परीक्षा समिति की बैठक का आयोजन किया गया।
2. 31 मार्च से 06 अप्रैल, 2016 तक विश्वविद्यालय के वित्तीय अध्ययन विभाग द्वारा "फाइनेन्सियल माडलिंग यूजिंग एक्सेल" विषयक साप्ताहिक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में प्रबंध अध्ययन संकाय के शिक्षकों, शोध छात्रों एवं 50 विद्यार्थियों ने भाग लिया।
3. 02 अप्रैल को विश्वविद्यालय के सामाजिक विज्ञान संकाय भवन में इन्जीनियरिंग संस्थान के द्वारा विशेष व्याख्यान आयोजित किया गया। इस व्याख्यान में सुप्रसिद्ध भौतिक शास्त्री एवं सामाजिक चिन्तक प्रो. विपिन कुमार त्रिपाठी, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, नई दिल्ली ने अपनी बात रखी।
4. 14 अप्रैल से 10 अप्रैल तक विश्वविद्यालय के इलेक्ट्रानिक्स इन्जीनियरिंग विभाग द्वारा "रेडियो आवृत्ति/माइक्रोवेव सिस्टम एवं फोटोनिक्स सेन्सर्स" विषयक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला को गुरु जम्भेश्वर युनिवर्सिटी आफ साइन्स एण्ड टेक्नालाजी, हिसार, हरियाणा से प्रो0 देवेन्द्र मोहन, डॉ0 अजय शंकर एवं डॉ0 डेविड जोसेफ, आई.आई.आई.टी. इलाहाबाद से प्रो0 शेखर वर्मा, डा0 मनीष कुमार तथा डा0 सोनाली अग्रवाल, ए0एम0आई0टी0ई0सी0, नई दिल्ली के टेक्निकल डायरेक्टर डॉ0 कार्तिक सेठ, स्पेश अप्लिकेशन सेन्टर, इसरो, अहमदाबाद से डॉ.0 हरिशंकर गुप्ता, आई.आई.टी. बी0एच0यू0, वाराणसी से प्रो0 पी0 के0 जैन, आई एस.टी.आर.ए.सी., इसरो, लखनऊ से डॉ0 डी0 के0 मिश्र, बी0एच0यू0, वाराणसी से प्रो0 आशीष बाजपेयी तथा एम.एन.एन.आई.टी., इलाहाबाद से डॉ0 तृप्ति सिंह एवं डा0 विभूति त्रिपाठी ने सम्बोधित किया। इस कार्यशाला में प्रतिदिन 120 की संख्या में इंजीनियरिंग संस्थान ... के विद्यार्थियों ... प्रतिभाग ... किया।

5. 26 अप्रैल को पी–एच0डी0 2013 के अंतर्गत प्रवेशित विद्यार्थियों के शिक्षण केन्द्रों के [illegible] एवं संयोजकों की कुलपति के साथ समीक्षा बैठक आयोजित की गयी।

6. दिनांक 30 अप्रैल को विश्वविद्यालय में शोध एवं नवाचार केन्द्र का शुभारम्भ एवं 'नैतिकता, सफलता एवं उत्कृष्टता : एक जीवन पद्धति' विषयक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में इलाहाबाद उच्च न्यायालय के मा. न्यायमूर्ति श्री [illegible] मित्तल ने मुख्य अतिथि तथा बिहार केन्द्रीय विश्वविद्यालय पटना के पूर्व कुलपति प्रो. जनक पाण्डेय एवं बी.एच.यू. वाराणसी के पूर्व डीन प्रो. आर.के. पाण्डेय बतौर विशिष्ट अतिथि उपस्थित रहे। इस अवसर पर फार्मेसी भवन में नए [illegible] खण्ड, गोमती खण्ड, स्व0 डॉ0 हरिमूर्ति सिंह कम्प्यूटर लैब, डॉ0 राज नारायण गुप्ता कान्फ्रेंस हाल तथा डॉ0 यू0पी0 सिंह सेमिनार हाल का लोकार्पण भी किया गया।

7. अप्रैल, 2016 तक विश्वविद्यालय के 462 पी–एच.डी. शोध प्रबन्ध विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के वेबसाइट 'शोध गंगा' पर अपलोड किये गये।

8. अप्रैल,2016 तक AISHE के अन्तर्गत सत्र 2015–2016 हेतु [illegible] महाविद्यालयों का पंजीकरण तथा 570 महाविद्यालयों का फार्म अपलोड कराया जा चुका है।

9. सम्पन्न हो रही वार्षिक परीक्षाओं का पांच मूल्यांकन केन्द्रों पर मूल्यांकन कार्य तथा डाटा इन्ट्री का कार्य प्रगति पर रहा।

10. विश्वविद्यालय परिसर में संचालित विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु प्रवेश आवेदन फार्म भरवाये जाने का कार्य प्रगति पर रहा।

माह मई 2016

1. 06 मई को वित्त समिति की बैठक तथा दिनांक 31 मई को कार्यपरिषद की बैठक का आयोजन किया गया।
2. 03 मई से 19 मई तक विश्वविद्यालय परिसर में संचालित पाठ्यक्रमों की सेमेस्टर परीक्षाओं का आयोजन किया गया।
3. 03 मई से 19 मई तक विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालयों की बी.एड., एम.एड., बी.लिब. एवं विधि की सेमेस्टर परीक्षाओं का आयोजन किया गया तथा मूल्यांकन का कार्य प्रगति पर रहा।
4. विश्वविद्यालय परिसर में संचालित विभिन्न पाठ्यक्रमों (बी0टेक0 एवं बी0फार्मा0 को छोडकर) में प्रवेश हेतु दिनांक 30 मई को प्रवेश परीक्षा का आयोजन किया गया।
5. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के दिशा–निर्देशों के अनुसार दिनांक – 07 एवं 08 मई, 2016 को "योग फेस्टिवल" का आयोजन किया गया। पहले दिन सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ ही योग के विभिन्न आयामों पर चर्चा हुयी। इस अवसर पर योग गुरु श्री जय सिंह गहलोत ने प्राणायाम की शक्ति पर व्याख्यान दिया तथा श्री अचल हरि मूर्ति ने योग द्वारा नशा मुक्ति पर अपनी बात रखी। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि योगाचार्य श्री सुरेन्द्र योगी रहे। योग शिविर में विश्वविद्यालय के शिक्षकों, प्रशासनिक अधिकारियों तथा कर्मचारियों ने भाग लिया।
6. 16 मई को बी0पी0एड0 में प्रवेश हेतु काउंसिलिंग का कार्य कराया गया।
7. [illegible] मई को वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर के संकाय भवन के कांफ्रेन्स हॉल में आन्तरिक गुणवत्ता प्रकोष्ठ द्वारा "गुणवत्तायुक्त उच्च शिक्षा एवं राष्ट्र निर्माण" विषयक एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में मुख्य अतिथि हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, उत्तराखण्ड के पूर्व कुलपति प्रो0 एस.पी. सिंह रहे।
8. दिनांक 27 एवं 28 मई, 2016 को विश्वविद्यालय के फार्मेसी संस्थान स्थित इनोवेशन सैंटर में "क्वालिटी इश्यूज इन एकेडमिक एण्ड एडमिनिस्ट्रेशन" विषयक दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। । उद्घाटन सत्र में कुलपति ने अध्यापकों एवं वरिष्ठ कार्यालय अधिकारियों को सम्बोधित किया एवं समस्त अध्यापकों के अतिरिक्त कार्यशाला में विश्वविद्यालय के वरिष्ठ एवं सहायक अधिकारियों के साथ विभिन्न प्रशासनिक स्तर पर वरीयता क्रम में की जाने वाली कार्यवाई की जानकारी प्राप्त की। कार्यशाला में विश्वविद्यालय परिसर के समस्त शिक्षकों, प्रशासनिक अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया।
9. 25 से 31 मई, 2016 तक विश्वविद्यालय के संकाय भवन में युवा एवं खेल मंत्रालय, भारत सरकार की ओर से आयोजित राष्ट्रीय सेवा योजना के सात दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में ईटीआई आगरा के ट्रेनिंग कोआर्डिनेटर डा. सी.एम. जैन एवं विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालयों के कार्यक्रम अधिकारी उपस्थित रहे। 31 मई को राष्ट्रीय सेवा योजना के सात दिवसीय राज्यस्तरीय प्रशिक्षण कार्यशाला के समापन सत्र में 'हार्टफुलनेस: तनावमुक्ति एवं ध्यान' विषयक गोष्ठी का आयोजन किया गया। इलाहाबाद उच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त माननीय न्यायमूर्ति श्री आर.आर.के. त्रिवेदी ने मुख्य अतिथि तथा विशिष्ट अतिथि के रूप मे कार्य परिषद के सदस्य एवं चौधरी चरण सिंह वि.वि. मेरठ के प्रोफेसर वी.के. मेहरोत्रा ने गोष्ठी को सम्बोधित किया। प्रशिक्षण शिविर में उपस्थित समस्त कार्यक्रम अधिकारियों को कर्नल सुरेन्द्र कुमार शर्मा एवं श्री सुयश मिश्र द्वारा तनाव मुक्ति हेतु ध्यान का प्रशिक्षण दिया गया तथा प्रदेश के विभिन्न जनपदों से पधारे कार्यक्रम अधिकारियों को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया।
10. मई, 2016 तक विश्वविद्यालय के 486 पी–एच.डी. शोध प्रबन्ध विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के वेबसाइट "शोध गंगा" पर अपलोड किये गये।
11. मई, 2016 तक AISHE के अन्तर्गत सत्र 2015–2016 हेतु 613 महाविद्यालयों का पंजीकरण तथा 583 महाविद्यालयों का फार्म अपलोड कराया जा चुका है।

माह: जून 2016

1. 10 जून को विद्या परिषद, 22 जून को वित्त समिति, 24 जून को कार्यपरिषद एवं 30 जून को प्रवेश समिति की बैठक का आयोजन किया गया।
2. 10 जून को विश्वविद्यालय के संकाय भवन स्थित कान्फ्रेंस हाल में "व्यवसायिक शिक्षा में शोध के उभरते आयाम" विषयक गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस गोष्ठी में दिल्ली स्कूल आफ इकोनामिक्स के पूर्व प्रोफेसर डा. वी.पी. सिंह बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित रहे।
3. विश्वविद्यालय परिसर में संचालित विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु 20 जून को कौंसिलिंग का कार्य सम्पन्न कराया गया।
4. अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून, 2016 के अवसर पर विश्वविद्यालय परिसर में दो दिवसीय कार्यक्रम सफलता पूर्वक आयोजित किया गया –

i) इस आयोजन के तहत दिनांक 20.06.2016 को रन फार योग कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें विश्वविद्यालय के छात्र, कर्मचारी, शिक्षक एवं अधिकारियों ने बढ़ चढ़ कर प्रतिभाग किया।

ii) इसी दिन 'एक छात्र एक पेड़' अभियान का शुभारंभ किया गया।

iii) सांयकाल विश्वविद्यालय के मुक्तांगन परिसर में सांस्कृतिक संध्या का आयोजन हुआ।

iv) अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून को प्रातःकाल 5.00 बजे योगाभ्यास कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के छात्र, छात्राएँ, शिक्षक, अधिकारी एवं महिलाओं ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया। विभिन्न विद्वानों द्वारा योग दिवस के उपलक्ष्य में उद्बोधन प्रदान किये गये। उक्त समस्त आयोजन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुए।

5. 21 से 26 जून तक विश्वविद्यालय के शोध एवं नवाचार केन्द्र में "शोध प्रविधि एवं कम्प्यूटर एप्लिकेशन" विषयक कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का तिथिवार विवरण निम्नवत् है:–

21 जून — कार्यशाला– प्रथम

प्रथम सत्र में प्रो0 पीयूष रंजन अग्रवाल, कुलपति, वीर बहादुर सिंह पूर्वान्चल विश्वविद्यालय, जौनपुर द्वारा 'Dynamics of International Convergence: Begin with holistic view' विषय पर व्याख्यान दिया गया। इस व्याख्यान में 63 शोधार्थी उपस्थित रहे।द्वितीय सत्र में प्रो. ओ.पी. राय, प्रति कुलपति, बिहार केन्द्रीय विश्वविद्यालय, गया (बिहार) ने 'Process of Research Methodology' विषय पर तथा डा. तनुज नन्दन, स्कूल आफ मैनेजमेन्ट स्टडीज, एमएनएनआइटी, इलाहाबाद ने 'An Introduction to Statistics with SPSS' विषय पर व्याख्यान दिया। इस व्याख्यान में 65 शोधार्थी उपस्थित रहे।तृतीय सत्र में डा0 नूपुर तिवारी,वीर बहादुर सिंह पूर्वान्चल विश्वविद्यालय, जौनपुर ने 'Computer Application: Hands on training' विषय पर व्याख्यान दिया। इस व्याख्यान में 60 शोधार्थी उपस्थित रहे।

22 जून — कार्यशाला– प्रथम

प्रथम सत्र में डा. विवेकानन्द जैन, उप पुस्तकालयाध्यक्ष, बी.एच.यू. वाराणसी द्वारा 'Library: Introduction to e-resource'

विषय पर व्याख्यान दिया गया। इस व्याख्यान में 67 शोधार्थी उपस्थित रहे।द्वितीय सत्र में डा. तनुज नन्दन, स्कूल आफ मैनेजमेन्ट स्टडीज, एमएनएनआइटी, इलाहाबाद द्वारा 'Applications of SPSS on research data Analysis' विषय पर तथा प्रो0 अरविन्द जोशी, बी0एच0यू0, वाराणसी द्वारा 'Research methodology of Social Scinces' विषय पर व्याख्यान दिया गया। इस व्याख्यान में 66 शोधार्थी उपस्थित रहे। तृतीय सत्र में डा. कुशेन्द्र मिश्रा, डिपार्टमेन्ट आफ मैनेजमेन्ट स्टडीज, बाबा साहब भीम राव अम्बेडकर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, लखनऊ, ने 'Importance of Research Methodology in Research' विषय पर व्याख्यान दिया। इस व्याख्यान में 69 शोधार्थी उपस्थित रहे। चतुर्थ सत्र में डा. विवेकानन्द जैन, उप पुस्तकालयाध्यक्ष, बी.एच.यू, वाराणसी ने 'Library: Introduction to e-resource' विषय पर व्याख्यान दिया । इस व्याख्यान में 52 शोधार्थी उपस्थित रहे।

कार्यशाला– द्वितीय

प्रथम सत्र में प्रो. ए.के. राय, बी.एच.यू, वाराणसी द्वारा (i) 'Tips for Thesis and Paper Writing' (ii) 'How the data should be analyzed?' विषय पर तथा प्रो0 देवेश कुमार, बाबा साहब भीम राव अम्बेडकर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, लखनऊ, द्वारा 'Research outcomes' विषय पर व्याख्यान दिया गया। इस व्याख्यान में 48 शोधार्थी उपस्थित रहे।द्वितीय सत्र में डा. विभूति त्रिपाठी, स्कूल आफ मैनेजमेन्ट स्टडीज, एमएनएनआइटी, इलाहाबाद, द्वारा 'Applications of SPSS on research data Analysis' विषय पर व्याख्यान दिया गया। इस व्याख्यान में 46 शोधार्थी उपस्थित रहे। तृतीय सत्र में डा0 नूपुर तिवारी वीर बहादुर सिंह पूर्वान्चल विश्वविद्यालय, जौनपुर ने 'Computer Application: Hands on training' विषय पर व्याख्यान दिया. इस व्याख्यान में 48 शोधार्थी उपस्थित रहे।

23 जून — कार्यशाला– प्रथम

प्रथम सत्र में डा. विभूति त्रिपाठी, स्कूल आफ मैनेजमेन्ट स्टडीज, एमएनएनआइटी, इलाहाबाद, द्वारा 'Computer Application: Hands on training' विषय पर व्याख्यान दिया गया। इस व्याख्यान में 53 शोधार्थी उपस्थित रहे। द्वितीय सत्र में डा0 शशि श्रीवास्तव, फैकल्टी आफ मैनेजमेन्ट स्टडीज, बी0एच0यू0, वाराणसी द्वारा 'Preparation of Research Propsal' विषय पर तथा प्रो. आर.के. लोधवाल, फैकल्टी आफ मैनेजमेन्ट स्टडीज, बी एच.यू., वाराणसी, द्वारा 'Sampling Design' विषय पर व्याख्यान दिया गया। इस व्याख्यान में 67 शोधार्थी उपस्थित रहे। तृतीय सत्र में प्रो. ए.के. कौल, समाजशास्त्र विभाग, बी0एच0यू0, वाराणसी द्वारा 'Importance of Research Methodology in Social Sciences' विषय पर व्याख्यान दिया गया। इस व्याख्यान में 63 शोधार्थी उपस्थित रहे।

कार्यशाला– द्वितीय

प्रथम सत्र में डा. संजीव सर्राफ, उप पुस्तकालयाध्यक्ष, बी.एच.यू, वाराणसी ने 'Library:

Introduction to e-resource' विषय पर व्याख्यान दिया। द्वितीयसत्र में प्रो0 एस0बी0 निम्से, कुलपति, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ ने व्याख्यान दिया। इस व्याख्यान में 49 शोधार्थी उपस्थित रहे। तृतीय सत्र में प्रो0 लल्लन मिश्रा, बी.एच.यू. वाराणसी ने 'Introduction to Research Methodology' विषय पर तथा डा. राकेश कुमार सिंह, ट्रान्सलेशनल विज्ञान प्रयोगशाला, एफ.एस.यू. कालेज आफ मेडिसिन, तालाहासी, फ्लोरिडा, यूएसए ने 'Importance of Research Methodology' विषय पर व्याख्यान दिया। इस व्याख्यान में 44 शोधार्थी उपस्थित रहे।चतुर्थ सत्र में डा. संजीव सर्राफ, उप पुस्तकालयाध्यक्ष, बी.एच.यू. वाराणसी ने 'Library: Introduction to e-resource' विषय पर व्याख्यान दिया। इस व्याख्यान में 44 शोधार्थी उपस्थित रहे।

कार्यशाला– तृतीय

प्रथम सत्र में प्रो. ए.के. कौल, समाजशास्त्र विभाग, बी0एच0यू0, वाराणसी द्वारा व्याख्यान दिया गया। इस व्याख्यान में 102 शोधार्थी उपस्थित रहे। द्वितीय सत्र में प्रो. वाचस्पति द्विवेदी, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी ने तथा प्रो0 राम मोहन पाठक, पूर्व निदेशक, एम0एम0एम0एच0 पत्रकारिता संस्थान, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी ने व्याख्यान दिया। इस व्याख्यान में 102 शोधार्थी उपस्थित रहे। तृतीय सत्र में डा0 नूपुर तिवारी, वीर बहादुर सिंह पूर्वांन्चल विश्वविद्यालय, जौनपुर ने 'Computer Application: Hands on training' विषय पर व्याख्यान दिया। इस व्याख्यान में 93 शोधार्थी उपस्थित रहे।

24 जून कार्यशाला– द्वितीय

प्रथम सत्र में डा0 सौरभ पाल, वीर बहादुर सिंह पूर्वान्चल विश्वविद्यालय, जौनपुर ने 'Computer Application: Hands on training' विषय पर व्याख्यान दिया। इस व्याख्यान में 45 शोधार्थी उपस्थित रहे। द्वितीय एवं तृतीय सत्र में डा0 ज्ञान प्रकाश, इन्स्टीट्यूट आफ मेडिकल साइन्सेज, बी0एच0यू0, वाराणसी ने 'Basics of Biostatistics' एवं 'Role of statistics in Biological Research' विषय पर व्याख्यान दिया।

कार्यशाला– तृतीय

प्रथम सत्र में डा. संजीव सर्राफ, उप पुस्तकालयाध्यक्ष, बी.एच.यू. वाराणसी ने 'Library: Introduction to e-resource' विषय पर व्याख्यान दिया। इस व्याख्यान में 109 शोधार्थी उपस्थित रहे। द्वितीय एवं तृतीय सत्र में प्रो0 राम बिलास, बी0एच0यू0, वाराणसी ने तथा प्रो0 कृपा शंकर, बी0एच0यू0, वाराणसी ने व्याख्यान दिया। इस व्याख्यान में 109 शोधार्थी उपस्थित रहे। तृतीय सत्र में डा. तुषार सिंह, बी.एच.यू. वाराणसी ने 'Introduction to Research' विषय पर व्याख्यान दिया। इस व्याख्यान में 109 शोधार्थी उपस्थित रहे। चतुर्थ सत्र में डा. ज्योति मिश्रा, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ ने 'Library: Introduction to e-resource' विषय पर व्याख्यान दिया। इस व्याख्यान में 109 शोधार्थी उपस्थित रहे।

कार्यशाला– चतुर्थ

प्रथम सत्र में प्रो0 कीर्ति सिंह, पूर्व कुलपति, आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कुमारगंज, फैजाबाद ने 'Importance of course work in research' विषय पर, श्री नितिन रमेश गोकर्ण, मण्डलायुक्त, वाराणसी मण्डल, वाराणसी ने तथा डा. तुषार सिंह, बी.एच.यू., वाराणसी ने 'Introduction to Research' विषय पर व्याख्यान दिया । इस व्याख्यान मे 115 शोधार्थी उपस्थित रहे। द्वितीय सत्र में डा0 उपेन्द्र पाण्डेय, बी.एच.यू., वाराणसी ने "क्वालिटेटिव रिसर्च की प्रविधि" विषय पर व्याख्यान दिया। इस व्याख्यान में 115 शोधार्थी उपस्थित रहे। तृतीय सत्र में डा0 नूपुर तिवारी, वीर बहादुर सिंह पूर्वान्चल विश्वविद्यालय, जौनपुर ने 'Computer Application: Hands on training' विषय पर व्याख्यान दिया।

25 जून कार्यशाला– तृतीय

प्रथम सत्र में डा0 सौरभ पाल, वीर बहादुर सिंह पूर्वान्चल विश्वविद्यालय, जौनपुर ने 'Computer Application: Hands on training' विषय पर व्याख्यान दिया। द्वितीय सत्र में प्रो0 गीता राय, बी.एच.यू., वाराणसी तथा प्रो0 रमाशंकर त्रिपाठी, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी ने व्याख्यान दिया।इस व्याख्यान में 114 शोधार्थी उपस्थित रहे। तृतीय सत्र मे प्रो0 डी0 गंगाधर, बी.एच.यू., वाराणसी ने व्याख्यान दिया। इस व्याख्यान में 87 शोधार्थी उपस्थित रहे।

कार्यशाला – चतुर्थ

प्रथम सत्र में डा. ज्योति मिश्रा, उप पुस्तकालयाध्यक्ष, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ ने 'Library: Introduction to e-resource' विषय पर व्याख्यान दिया। इस व्याख्यान में 10[illegible] शोधार्थी उपस्थित रहे। द्वितीय सत्र में प्रो0 अविनाश चन्द्र पाण्डेय, पूर्व कुलपति, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी ने 'Introduction to Research Papers' विषय पर व्याख्यान दिया। इस व्याख्यान में 124 शोधार्थी उपस्थित रहे। तृतीय सत्र में डा0 अतुल सिंह, इलाहाबाद डिग्री कालेज, इलाहाबाद ने 'Introduction of SPSS' विषय पर व्याख्यान दिया। इस व्याख्यान में 117 शोधार्थी उपस्थित रहे। चतुर्थ सत्र में डा0 एच0के0 चक्रवर्ती, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी ने 'Library: Introduction to e-resource' विषय पर व्याख्यान दिया। इस व्याख्यान में 117 शोधार्थी उपस्थित रहे।

26 जून कार्यशाला – चतुर्थ

प्रथम सत्र में डा0 सौरभ पाल, वीर बहादुर सिंह पूर्वान्चल विश्वविद्यालय, जौनपुर ने 'Computer Application: Hands on training' विषय पर व्याख्यान दिया। द्वितीय सत्र में डा0 अतुल सिंह, इलाहाबाद डिग्री कालेज, इलाहाबाद ने 'Introduction of SPSS' विषय पर तथा प्रो0 हेरम्ब चतुर्वेदी, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद ने "साहित्य एवं इतिहास के मध्य सम्बन्ध" विषय पर व्याख्यान दिया।

तृतीय सत्र में डा0 ए0के0 मिश्रा, डी0सी0एस0के0 पी0जी0 कालेज, मऊ ने 'How to write research paper and use of MLA style sheet 8th edition?' विषय पर व्याख्यान दिया । कार्यशाला में प्रतिभाग करने वाले समस्त शोधार्थियों को शुभकामना देते हुए प्रमाण–पत्र वितरित किया गया।

6. 20 जून से 26 जून तक विश्वविद्यालय परिसर में राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम अधिकारियों का सात दिवसीय प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया।

7. विश्वविद्यालय के विवेकानन्द केन्द्रीय पुस्तकालय में INFLIBNET द्वारा विकसित लाईब्रेरी साफ्टवेयर SOUL (Software for University Library) में किताबों की डाटा एन्ट्री

कराया जा रहा है। अब तक 56000 से अधिक किताबों का कार्य पूर्ण हो चुका है। यह साफ्टवेयर विश्वविद्यालय महाविद्यालयों के पुस्तकालय के आंतरिक कार्य जैसे किताबों आदान प्रदान, सूचीकरण, पत्र–पत्रिकाओं का नियंत्रण, OPAC कार्य करने में समर्थ है।

30 जून तक विश्वविद्यालय के 515 पी–एच.डी. शोध प्रबन्ध विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के वेबसाइट "शोध गंगा" पर अपलोड किये गये।

30 जून तक AISHE के अन्तर्गत सत्र 2015–2016 हेतु 614 महाविद्यालयों का पंजीकरण तथा 588 महाविद्यालयों का फार्म अपलोड कराया जा चुका है।

माह : जुलाई 2016

13 जुलाई को परीक्षा समिति की बैठक का आयोजन किया गया।

विश्वविद्यालय परिसर में संचालित विभिन्न पाठ्यक्रमों में अध्ययन–अध्यापन का कार्य 16 जुलाई से प्रारम्भ हो गया है।

विश्वविद्यालय परिसर में 16 जुलाई से 21 जुलाई तक रेमेडियल कोचिंग की कक्षाएं संचालित की गयीं।

विश्वविद्यालय के इंजीनियरिंग संकाय में गणित विभाग "न्यूमेरिकल टेक्निक्स एंड प्रोग्रामिंग इन MATLAB "विषय पर साप्ताहिक व्याख्यान माला दिनांक 22 जुलाई से 28 जुलाई तक विश्वविद्यालय के रिसर्च एवं इनोवेशन सेन्टर में आयोजित की गयी। सभी व्याख्यान अंतरिक्ष एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, थिरूवंथपुरम केरल में गणित विभाग के प्रोफेसर डॉ. सतीश कुमार द्वारा दिए गए। सात दिन के इस ज्ञान वर्धक कार्यक्रम में लगभग 30 घंटे तक नुमेरिकल विधियों द्वारा विज्ञान एवं तकनीकी में आने वाली समस्याओं को हल करना भी सिखाया गया। इस दौरान बी0टेक0 द्वितीय वर्ष के 96 छात्र/छात्राओं ने सहभागिता की।

विश्वविद्यालय के विवेकानन्द केन्द्रीय पुस्तकालय में NFLIBNET द्वारा विकसित लाईब्रेरी साफ्टवेयर SOUL (Software for University Library) में 57324 किताबों के पंजीकरण का कार्य पूर्ण किया गया।

31 जुलाई, 2016 तक विश्वविद्यालय के 520 पी–एच.डी. शोध प्रबन्ध विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के वेबसाइट 'शोध गंगा' पर अपलोड किये गये।

31 जुलाई, 2016 तक AISHE के अन्तर्गत सत्र 2015–2016 हेतु महाविद्यालयों का शत प्रतिशत (100%)पंजीकरण तथा फार्म अपलोड कराया गया।

माह : अगस्त 2016

05 अगस्त को कार्यपरिषद की बैठक का आयोजन।

विश्वविद्यालय परिसर एवं आवासीय परिसर को हरा–भरा करने के उद्देश्य से "एक छात्र–एक पेड़" अभियान के अन्तर्गत एक सप्ताह का कार्यक्रम 05 अगस्त से12 अगस्त तक विश्वविद्यालय के फार्मेसी संस्थान, प्रबंध अध्ययन संस्थान, संकाय भवन एवं विज्ञान संकाय, प्रशासनिक भवन, इंजीनियरिंग संस्थान, आवासीय परिसर एवं ग्रुप्यूनिक एकलव्य स्टेडियम, एन0एस0एस0 भवन, बॉयस हॉस्टल परिसर तथा विशाल अतिथि गृह में आयोजित किया गया।

3. 15 अगस्तको स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर विश्वविद्यालय में झण्डारोहण का आयोजन किया गया। झण्डारोहण प्रो0 पीयूष रंजन अग्रवाल, कुलपति द्वारा किया गया एवं स्वतन्त्रता दिवस संदेश में समस्त अध्यापकों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों से राष्ट्र निर्माण में सहयोग की अपील की। इस अवसर पर द्रौपदी महिला छात्रावास में 15 एवं 16 अगस्त को दो दिवसीय "भारत की आजादी" कार्यक्रम के तहत निबंध, लेखन, वाद–विवाद, भाषण, रंगोली, पोस्टर, नाटक, एकल गीत और एकल नृत्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया।
4. विश्वविद्यालय के 'रिसर्च एवं इन्नोवेशन सेन्टर' में 25 अगस्त को "उपग्रह संचार नेवीगेशन जी0पी0एस0" विषय से सम्बन्धित सेमिनार का आयोजन किया गया। इस सेमिनार में ईसरो, लखनऊ ईकाई के उप महाप्रबन्धक मो0 जहीर ने विद्यार्थियों को सम्बोधित किया।
5. विश्वविद्यालय के विवेकानन्द केन्द्रीय पुस्तकालय द्वारा 'रिसर्च एवं इन्नोवेशन सेन्टर' में विवरसन इण्डिया एजुकेशन के सहयोग से "ई–रिर्सोस प्रयोगकर्ताओं की जागरूकता" विषयक कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में विश्वविद्यालय के शिक्षक, विद्यार्थी एवं शोधार्थियों को विशेषज्ञों ने आनलाईन उपलब्ध सामग्रियों के बारे में जानकारी दी। बी0एच0यू0, वाराणसी के डा0 भाष्कर मुखर्जी एवं विवरसन इण्डिया एजुकेशन के डा0 इस्टीफेन रोज ने कार्यशाला को सम्बोधित किया।
6. विश्वविद्यालय के विवेकानन्द केन्द्रीय पुस्तकालय में NFLIBNET द्वारा विकसित लाईब्रेरी साफ्टवेयर SOUL (Software for University Library) में अब तक 59794 किताबों के पंजीकरण का कार्य पूर्ण किया गया।

माह : सितम्बर 2016

1. 08 सितम्बर को कार्यपरिषद की बैठक का आयोजन।
2. 03 सितम्बर को जनसंचार विभाग में मीडिया प्रबंधन एवं चुनौती विषयक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में बतौर मुख्य वक्ता मदन मोहन मालवीय हिंदी पत्रकारिता संस्थान, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी के निदेशक प्रो. ओम प्रकाश सिंह एवं बतौर मुख्य वक्ता मीडिया प्रबंधन के क्षेत्र से जुड़े डा. अंकुर चड्ढा ने भाग लिया।
3. 5 सितंबर विश्वविद्यालय में शिक्षक दिवस के अवसर पर विभिन्न संकायों एवं विभागों में शिक्षक दिवस के कार्यक्रम आयोजित किए गए।
4. 5 सितंबर को विश्वविद्यालय के संकाय भवन के कांफ्रेंस हॉल में अनुसूचित जाति एवं जनजाति प्रकोष्ठ द्वारा निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। भारत में आर्थिक एवं प्रौद्योगिकी विकास में युवाओं की मनोविकार विषयक

निबन्ध प्रतियोगिता में इंजीनियरिंग, विज्ञान, फार्मेसी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय के लगभग 50 विद्यार्थियों ने भाग लिया।

5. 09 सितम्बर को 'इंजीनियर्स डे' के अवसर पर उमानाथ सिंह इंजीनियरिंग संस्थान में विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर इंजीनियरिंग संस्थान के विद्यार्थियों ने वैज्ञानिक मॉडल के जरिये वैज्ञानिक मनोवृत्ति का संदेश दिया। इस अवसर पर आई.ई.टी. लखनऊ के प्रो. वी.के. सिंह ने व्याख्यान दिया।

6. 11 सितंबर को वित्तीय अध्ययन विभाग द्वारा एक दिवसीय वित्तीय साक्षरता कार्यक्रम का आयोजन देवकली गाँव में किया गया।

7. 14 सितंबर को विश्वविद्यालय परिसर से 15 सितम्बर को राजभवन लखनऊ में आयोजित खिलाड़ी सम्मान समारोह में सम्मानित होने वाले खिलाड़ियों की बस को हरी झण्डी दिखाकर कुलपति प्रो. पीयूष रंजन अग्रवाल ने रवाना किया। विश्वविद्यालय के विवेकानन्द केन्द्रीय पुस्तकालय में हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर डिजिटल भारत में युवाओं की भूमिका विषयक भाषण प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया।

8. 15 सितंबर को राजभवन लखनऊ के गांधी सभागार में आयोजित खिलाड़ी सम्मान समारोह में कुलाधिपति एवं श्री राज्यपाल उत्तर प्रदेश श्री राम नाईक ने विश्वविद्यालय के 44 खिलाड़ियों के साथ टीम प्रशिक्षक एवं टीम मैनेजर को सम्मानित किया।

9. 15 सितंबर को वित्तीय अध्ययन विभाग में एक दिवसीय छात्र संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का मुख्य उद्देश्य वित्तीय समावेशन के बारे में चर्चा करना और भारतीय परिदृश्य में इसकी स्थिति की समीक्षा करना था।

10. 16 सितंबर को पर्यावरण विज्ञान विभाग द्वारा विश्व ओजोन दिवस मनाया गया। इस अवसर पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया। संगोष्ठी के मुख्य वक्ता केमिकल इंजीनियरिंग विभाग, आईटी बीएचयू के प्रो० पी.के. मिश्रा एवं एटमोस्फियरिक एवं ओसनिक साइंस विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रो० बी.के. पाण्डेय ने ओजोन संरक्षण पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के दूसरे दिन क्विज, पोस्टर, एक्सटेम्पोर स्पीच आदिप्रतियोगिताएं आयोजित की गयी। विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों ने इन प्रतियोगिताओं में बढ़-चढ़कर भाग लिया।

11. 17 सितंबर को इंजीनियरिंग संस्थान के गणित तथा भौतिकी विभाग द्वारा संयुक्त रूप से कम्युनिकेशन स्किल विषय पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। प्रथम दिन बीएचयू के अंग्रेजी विभाग के डा. देवेन्द्र कुमार एवं प्रबंध अध्ययन विभाग के डा. अनुराग सिंह, ने, अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया।

12. 18 सितंबर को कम्युनिकेशन स्किल विषयक दो दिवसीय कार्यशाला के समापन सत्र में मोती लाल नेहरू राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान इलाहाबाद के स्कूल ऑफ मैनेजमेंट के विभागाध्यक्ष डा. तनुज नंदन एवं इलाहाबाद विश्वविद्यालय की डा. शेफाली नंदन ने प्रभावशाली संचार पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया।

13. 18 सितंबर को एमबीए विभाग के विद्यार्थियों का पुरातन छात्र सम्मेलन, 2016 का आयोजन शहर के एक होटल में किया गया।

14. 18 सितंबर को फार्मेसी संस्थान में मधुमेह एवं हृदयाघात मुक्त भारत विषयक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस गोष्ठी में मधुमेह रोग विशेषज्ञ डा. आशुतोष मिश्र एवं हृदय रोग विशेषज्ञ डा. पल्लवी मिश्रा ने विषय पर विस्तार से अपनी बात रखी।

15. 20 सितंबर को अनुसूचित जाति एवं जनजाति प्रकोष्ठ द्वारा संपन्न कराये गए भारत में आर्थिक एवं प्रोद्योगिकी विकास में युवाओं की भागीदारी विषयक निबन्ध प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पाने वाले विद्यार्थियों को फार्मेसी संस्थान स्थित सभागार में कुलपति प्रो. पीयूष रंजन अग्रवाल एवं बिहार केंद्रीय विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. जनक पांडेय ने प्रमाण पत्र एवं क्रमशः 1 हजार, 750 व 500 रूपये पुरस्कार राशि देकर उत्साहवर्धन किया। प्रतियोगिता में जनसंचार विभाग के छात्र धर्मपाल यादव प्रथम, इंजीनियरिंग के छात्र शुभम उपाध्याय द्वितीय एवं एमबीए के छात्र मोहम्मद मोहसिन तृतीय विजेता रहे।

16. 20 सितंबर को फार्मेसी संस्थान स्थित शोध एवं नवाचार केन्द्र में च्वाइस बेस्ड क्रेडिट सिस्टम (सीबीसीएस) पर कार्यशिविर आयोजित किया गया। इस कार्यशिविर में अध्ययन परिषद के सदस्यगण एवं विश्वविद्यालय के सभी संकायों के संकायाध्यक्ष शामिल हुए। कार्यशिविर के उद्घाटन सत्र में बतौर मुख्य वक्ता बिहार केन्द्रीय विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. जनक पाण्डेय, बीएचयू के प्रो. जेपी श्रीवास्तव ने भाग लिया। अध्यक्षता कुलपति प्रो. पीयूष रंजन अग्रवाल ने की।

17. 22 सितंबर को विश्वविद्यालय के वित्तीय अध्ययन विभाग में शिक्षक -अभिभावक बैठक मंथन का आयोजन किया गया। जिसमें छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए उनसे जुड़े विभिन्न विषयों पर अभिभावकों के साथ चर्चा हुई.

18. 24 सितंबर को विश्वविद्यालय के एचआरडी एवं व्यावसायिक अर्थशास्त्र विभाग द्वारा फार्मेसी संकाय स्थित कांफ्रेन्स हाल में पुरातन छात्र सम्मेलन 2016 का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता कुलपति प्रो. पीयूष रंजन अग्रवाल ने की।

19. 24 सितंबर को विश्वविद्यालय के वित्तीय अध्ययन विभाग में पुरातन छात्र सम्मेलन आयोजित किया गया। इस सम्मेलन में देश के बाहर के भी पूर्व विद्यार्थियों ने भी शिरकत किया।

20. विश्वविद्यालय के विवेकानन्द केन्द्रीय पुस्तकालय में NFLIBNET द्वारा विकसित लाईब्रेरी सॉफ्टवेयर SOUL (Software for University Library) में अब तक 60350 किताबों के पंजीकरण का कार्य पूर्ण किया गया।

21. सितम्बर, 2016 तक विश्वविद्यालय के 520 पी–एच.डी. शोध प्रबन्ध विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के वेबसाइट "शोध गंगा" पर अपलोड किये गये।
22. AISHE के अन्तर्गत सत्र 2015–2016 हेतु महाविद्यालयों का शत प्रतिशत पंजीकरण तथा फार्म अपलोड कराया जा चुका है।
23. 30 सितम्बर 2016 को विश्वविद्यालय परिसर के विद्यार्थी जलपान गृह तथा डिस्पेन्सरी का जीर्णोद्धार कर नये साज–सज्जा के साथ पुनर्प्रारम्भ किया गया।

माह: अक्टूबर, 2016

1. 02 अक्टूबर को महात्मा गाँधी तथा पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री जी की जयन्ती एवं विश्वविद्यालय स्थापना दिवस समारोह का आयोजन किया गया।
2. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के स्वायत्त संस्थान राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद, (NAAC) बंगलौर की पीयर टीम के चेयरपर्सन Prof Harish Padh, Chairperson, Former Vice-Chancellor, Sardar patel University, Vallabh Vidyanagar-388 120, Gujarat एवं निम्नलिखित सदस्य Prof. Muthukalingan Krishnan, Professor & Head , Dept. of Environmental Biotechnology, Bharthidasan University, Tiruchirappalli- 602 024, Tamil Nadu, Prof. Mani Shankar Das Gupta Professor, Dept. of Mechanical Engineering & Engineering Technology, Birla Institute of Technology and Science(BITS, Pilani) Vidya Vihar Campus, Pilani-333 031, Rajasthan, Dr. Mewa Singh Ph.D., F.A.Sc., Professor, Department of Psychology, Universityy of Mysore, Manasagangotri, Mysore- 570 006, Karnataka, Prof. N. K. Jain Emeritus Fellow(U.G.C.) School of Pharmacy, Rajiv Gandhi Technical University, Airport Byypass Road, Gandhi Nagar, Bhopal- 462 036, Madhya Pradesh, Prof. Prabhu Narayan Mishra, Professor & Director, Institute of Management Studies, Devi Ahilya Univesity, Takshashila Campus Khandwa Road, Indore 452 001, Madhya Pradesh, Dr. Santoshkumar Chandravadan Vora, Professor, Dept. of Electrical Engineering, Institute of Techuology, Nirma University, S G Highwayy, Ahmedabad- 382 481, Gujrat, Prof. S. Vaidhyasubramaniam Dean - Planning & Development and Indian Overseas Bank Chair Professor of Management & Adjunct Professor, School of Law, SASTRA University, Thanjvaur- 613 401, Tamil Nadu का आगमन 02 अक्टूबर को विश्वविद्यालय परिसर में हुआ। पीयर टीम के सदस्यों के द्वारा 06 अक्टूबर तक विश्वविद्यालय के समस्त संकायो– अनुप्रयुक्त एवं सामाजिक विज्ञान संकाय, विज्ञान संकाय, इंजीनियरिंग संकाय, औषध संकाय, प्रबंध अध्ययन संकाय सहित छात्र कल्याण संकाय तथा प्रशासनिक अनुभागों, वित्त विभाग, कुलसचिव कार्यालय, राष्ट्रीय सेवा योजना भवन, रोवर्स रेंजर्स भवन, खेल कूद परिसर, इन्क्यूबेशन सेन्टर, स्वास्थ्य भवन, डिस्पेन्सरी, योग केन्द्र, छात्रावासों आदि का निरीक्षण/पर्यवेक्षण किया गया।
3. अक्टूबर को संध्या में विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा सांस्कृतिक संध्या का ... आयोजन किया गया। जिसे पीयर टीम द्वारा विशेष सराहना मिली। इंजीनियरिंग एवं तकनीकी संस्थान परिसर में नैक पीयर टीम के चेयरमैन एवं सदस्यों द्वारा भारतरत्न एम० विश्वेश्वरैया की मूर्ति का अनावरण एवं उच्च स्तरीय स्मार्ट क्लास रूम जैसी सुविधाओं से संयुक्त विश्वेश्वरैया सभागार का उद्घाटन भी किया गया। प्रारम्भ में कुलपति द्वारा विश्वविद्यालय की उपलब्धियों का प्रजेन्टेशन किया गया। निरीक्षण के दौरान पीयर टीम ने विश्वविद्यालय के कार्यकलापों एवं सुविधाओं पर संतोष व्यक्त किया।

4. 04 अक्टूबर को विश्वविद्यालय के एन०एस०एस० भवन में राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा 'युवा शक्ति और आधुनिक भारत' विषयक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विद्यार्थियों द्वारा महिला सशक्तीकरण, कन्या भ्रूण हत्या, मतदाता जागरूकता, पोषण, राष्ट्रीय एकीकरण आदि विषयों पर पोस्टर प्रदर्शनी लगायी गयी।
5. 23 अक्टूबर को विश्वविद्यालय के पी–एच०डी० कोर्स वर्क की परीक्षा का आयोजन किया गया।
6. विश्वविद्यालय के विवेकानन्द केन्द्रीय पुस्तकालय ने INFLIBNET द्वारा निकसित लाईब्रेरी साफ्टवेयर SOUL (Software for University Library) में अब तक 60350 किताबों के पंजीकरण का कार्य पूर्ण किया गया।
7. अक्टूबर, 2016 तक विश्वविद्यालय के 553 पी–एच.डी. शोध प्रबन्ध विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के वेबसाइट "शोध गंगा" पर अपलोड किये गये
8. AISHE के अन्तर्गत सत्र 2015–2016 हेतु महाविद्यालयों का शत प्रतिशत (100%) पंजीकरण तथा फार्म अपलोड कराया जा चुका है।

माह: नवम्बर, 2016

1. 05 नवम्बर को प्रो० डी० पी० सिंह, निदेशक राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद, पोस्ट बाक्स न० 1075, नागरभावी, बेंगलूर–560072 के पत्रांक F-19.26/EC(SC-18)/DO/2016/138.2 Dated 5th November, 2016 के द्वारा पीयर टीम की रिपोर्ट के आधार पर परिषद की कार्य समिति द्वारा इस विश्वविद्यालय को Accredited with a CGPA of 2.54 स्केल में B+ Grade प्रदान किया गया। यह ग्रेडिंग दिनांक 05.11.2016 से पाँच वर्ष की अवधि के लिये प्रभावी रहेगी।
2. 06 नवम्बर से 09 नवम्बर तक विश्वविद्यालय के वित्तीय अध्ययन विभाग के विद्यार्थियों को नेशनल स्टाक एक्सचेंज, संसद भवन, आगरा, मथुरा एवं वृन्दावन का शैक्षणिक भ्रमण कराया गया।
3. 08 नवम्बर को विश्वविद्यालय के बी०फार्मा के विद्यार्थियों ने विश्वविद्यालय परिसर के निकट स्थित देवकली गांव में फार्मासिस्ट सेलिब्रेशन के नाम से जागरुकता कैम्प का आयोजन किया। इस कैम्प में बीमारियों के प्रति ग्रामवासियों को जागरूक किया गया।
4. 09 नवम्बर से स्वच्छ भारत ... के ... प्राप्ति ... के ...

निभित्त भारत सरकार द्वारा स्वच्छ भारत मिशन अभियान की शुरूआत की गयी है। तद्क्रम में माननीय कुलाधिपति/श्री राज्यपाल, उत्तर प्रदेश महोदय के निर्देश के अनुपालन में वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय में नवम्बर 2016 के प्रथम पखवारे में स्वच्छता सम्बन्धी अनेक गतिविधियां संचालित की गयी। विश्वविद्यालय परिसर एवं विश्वविद्यालय से सम्बद्ध 5 जनपदों के कई महाविद्यालयों से जुड़े विद्यार्थियों, शिक्षकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने इस अभियान में अपनी महती भूमिका अदा की।

5. 12 नवम्बर को परीक्षा समिति की बैठक का आयोजन किया गया।
6. 18 नवम्बर को विश्वविद्यालय के प्रबंध अध्ययन संकाय के अन्तर्गत एच0आर0डी0 विभाग द्वारा व्यक्तित्व विकास कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में विद्यार्थियों को रेज्यूम राइटिंग तथा कारपोरेट जगत में प्रभावशाली स्थान बनाने के सूत्र बताये गये।
7. विश्वविद्यालय के पी-एच0डी0 कोर्स वर्क की परीक्षा का परीक्षाफल 28 नवम्बर को घोषित किया गया।
8. 29 नवम्बर को विश्वविद्यालय के प्रबंध अध्ययन संकाय के अन्तर्गत एच0आर0डी0 विभाग द्वारा "टाईम मैनेजमेन्ट" विषयक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में विद्यार्थियों को टाईम मैनेजमेन्ट के बारे में जानकारी दी गयी।
9. विश्वविद्यालय के विवेकानन्द केन्द्रीय पुस्तकालय में NFLIBNET द्वारा निकसित लाईब्रेरी साफ्टवेयर SOUL (Software for University Library) में अब तक 60350 किताबों के पंजीकरण का कार्य पूर्ण किया गया।
10. नवम्बर, 2016 तक विश्वविद्यालय के 570 पी-एच.डी. शोध प्रबन्ध विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के वेबसाइट "शोध गंगा" पर अपलोड किये गये।
11. AISHE के अन्तर्गत सत्र 2015-2016 हेतु महाविद्यालयों का शत प्रतिशत (100%) पंजीकरण तथा फार्म अपलोड कराया जा चुका है।

खेल गतिविधियाँ-

12. **अन्तर महाविद्यालयी कबड्डी (पुरूष) प्रतियोगिता-** यह प्रतियोगिता विश्वविद्यालय परिसर स्थित एलवा स्टेडियम में 24 नवम्बर को सम्पन्न हुई, इसमें कुल 14 महाविद्यालयों की टीमों ने प्रतिभाग किया। कुछ महाविद्यालयों का ट्रायल भी किया गया। प्रदर्शन के आधार पर विश्वविद्यालय टीम का चयन किया गया।
13. **अन्तर महाविद्यालयी क्रिकेट (महिला) प्रतियोगिता-** यह प्रतियोगिता विश्वविद्यालय परिसर में 28 से 30 नवम्बर को सम्पन्न हुई जिसमें विभिन्न महाविद्यालयों के छात्राओं की टीम स्पर्धा एवं ट्रायल के आधार पर विश्वविद्यालय महिला टीम का चयन किया गया।
14. **पूर्वी क्षेत्र बास्केटबाल (पुरूष) प्रतियोगिता-** यह प्रतियोगिता महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ में 05 से 11 नवम्बर को सम्पन्न हुई जिसमें विश्वविद्यालय की टीम को चतुर्थ स्थान प्राप्त हुआ एवं अखिल भारतीय प्रतियोगिता हेतु अर्हता प्राप्त किया।
15. **पूर्वी क्षेत्र हैण्डबाल (महिला) प्रतियोगिता-** यह प्रतियोगिता महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ में 12 से 16 नवम्बर तक सम्पन्न हुई जिसमें विश्वविद्यालियल की टीम को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ एवं अखिल भारतीय प्रतियोगिता हेतु अर्हता प्राप्त किया।
16. **पूर्वी क्षेत्र हैण्डबाल (पुरूष) प्रतियोगिता-** यह प्रतियोगिता महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ में 26 नवम्बर से 30 नवम्बर तक सम्पन्न हुयी जिसमें विश्वविद्यालय की टीम को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ एवं अखिल भारतीय अन्तर विश्वविद्यालय प्रतियोगिता हेतु अर्हता प्राप्त किया।
17. **पूर्वी क्षेत्र कबड्डी (महिला) प्रतियोगिता-** यह प्रतियोगिता महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी में 20 से 24 नवम्बर तक सम्पन्न हुई, जिसमें विश्वविद्यालय की टीम को द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ एवं अखिल भारतीय अन्तर विश्वविद्यालय प्रतियोगिता हेतु अर्हता प्राप्त किया।

माह: दिसम्बर, 2016

1. 07 दिसम्बर को कार्य परिषद की बैठक का आयोजन किया गया।
2. विश्वविद्यालय की सत्र 2016-17 की मुख्य परीक्षा के लिये आनलाईन आवेदन पत्र पूरित कराये जाने का कार्य प्रगति पर रहा।
3. विश्वविद्यालय के रिसर्च एवं इनोवेशन सेन्टर में 08 एवं 09 दिसम्बर को Council of Science & Technology, UP (CSTUP) द्वारा "Role of CSTUP in Promotion of Science and Technology & Facilitation of IPR Protection" विषयक सेमिनार का आयोजन किया गया। श्री राम नाईक जी, मा0 कुलाधिपति/श्री राज्यपाल, उत्तर प्रदेश, लखनऊ ने दूरभाष के माध्यम से सेमिनार में उदघाटन भाषण दिया। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 पीयूष रंजन अग्रवाल ने कहा कि सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हमें विकसित देशों पर निर्भर नहीं रहना चाहिए। सेमिनार में प्रो0 एस0के0 जैन, आई0आई0टी0, नई दिल्ली ने मुख्य वक्ता के रूप में तथा डा0 विपिन कुमार, निदेशक, नेशनल इन्नोवेशन फाउन्डेशन, अहमदाबाद, गुजरात, डा0 शशि राणा, संयुक्त निदेशक, यू0पी0सी0एस0टी0, डा0 यू0 सी0 पाण्डेय, यू0पी0सी0एस0टी0 श्री सुमित कुमार, वाणिज्य मंत्रालय, नई दिल्ली, प्रो0 आर0 एल0 सिंह, डा0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद ने विशेषज्ञ के रूप में सेमिनार में उपस्थित शिक्षकों, शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों को सम्बोधित किया।

सेमिनार के पहले दिन शोधार्थियों द्वारा बौद्धिक सम्पदा अधिकार पर बेहतरीन शोध प्रस्तुति के लिये रसायन विज्ञान विभाग, टी0डी0 कालेज, जौनपुर के शोधार्थी शेखर आनन्द पाण्डेय को प्रथम, बायोटेक्नालाजी विभाग, विश्वविद्यालय परिसर की श्वेता श्रीवास्तव को द्वितीय एवं बायोटेक्नालाजी विभाग, विश्वविद्यालय परिसर की सिम्पल कुमारी को तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया। कुलपति प्रो0 पीयूष रंजन अग्रवाल ने शोधार्थियों को प्रमाण पत्र एवं स्मृति चिन्ह देकर उत्साहवर्धन किया।

सेमिनार में शोधार्थियों, स्नातकोत्तर विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने भाग लिया।

4. 05 दिसम्बर से बी0एड0, एम0एड0, बी0पी0एड0 की सेमेस्टर परीक्षा का आयोजन किया गया।
5. 01 दिसम्बर से श्रेणी सुधार परीक्षा का आयोजन किया गया।
6. 12 दिसम्बर से विश्वविद्यालय परिसर में संचालित पाठ्यक्रमों की सत्र 2016–17 की सेमेस्टर परीक्षाओं का आयोजन किया गया।
7. 15 दिसम्बर को ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम शोध छात्रावास का लोकार्पण किया गया तथा डा0 भोलेन्द्र सिंह, पूर्व कुलपति की स्मृति में बहुद्देशीय हाल का लोकार्पण किया गया।
8. 16 दिसम्बर को विश्वविद्यालय परिसर स्थित विश्वेश्वरैया सभागार में शिक्षक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह में वर्ष 2016 में अवकाश ग्रहण करने वाले 38 शिक्षकों को सम्मानित किया गया। प्रो0 यू0के0 मिश्रा, विभागाध्यक्ष, न्यूरोलाजी विभाग, संजय गाँधी आयुर्विज्ञान संस्थान, लखनऊ, शिक्षक सम्मान समारोह के मुख्य अतिथि रहे तथा कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो0 पीयूष रंजन अग्रवाल ने किया।
9. 20 दिसम्बर से एल0एल0बी0 की सेमेस्टर परीक्षाओं का आयोजन किया गया।
10. विश्वविद्यालय के विवेकानन्द केन्द्रीय पुस्तकालय में NFLIBNET द्वारा विकसित लाईब्रेरी साफ्टवेयर SOUL (Software for University Library) में अब तक 60362 किताबों के पंजीकरण का कार्य पूर्ण किया गया।
11. दिसम्बर में विश्वविद्यालय के 612 पी–एच.डी. शोध प्रबन्ध विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के वेबसाइट "शोध गंगा" पर अपलोड किये गये।
12. AISHE के अन्तर्गत सत्र 2015–2016 हेतु महाविद्यालयों का शत प्रतिशत (100%) पंजीकरण तथा फार्म अपलोड कराया जा चुका है।
13. खेल गतिविधियाँ–

(अ) *पूर्वी क्षेत्र अन्तर विश्वविद्यालयी कबड्डी पुरुष प्रतियोगिता*

यह प्रतियोगिता विश्वविद्यालय परिसर स्थित एकलव्य स्टेडियम में 3 से 8 दिसम्बर तक आयोजित की गई, जिसमें पूर्वी क्षेत्र के अन्तर्गत 32 विश्वविद्यालयों की टीमों ने प्रतिभाग किया। उक्त प्रतियोगिता नाक आउट कम टीम के हिसाब से खेला गया, अंकों के आधार पर परिणाम इस प्रकार रहा–

1. वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर – प्रथम
2. वर्धमान विश्वविद्यालय, वर्धमान (प0बंगाल) – द्वितीय
3. महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी – तृतीय
4. बिलासपुर विश्वविद्यालय, बिलासपुर(छत्तीसगढ़) – चतुर्थ

उपरोक्त चारों विश्वविद्यालयों की टीमों ने वेल्टेक विश्वविद्यालय, चेन्नई में आयोजित अखिल भारतीय अन्तर विश्वविद्यालय (All India) प्रतियोगिता हेतु अर्हता प्राप्त की है।

(ब) *अन्तर महाविद्यालयी क्रिकेट पुरुष प्रतियोगिता*

यह प्रतियोगिता 10 से 19 दिसम्बर तक विश्वविद्यालय के एकलव्य स्टेडियम एवं इन्दिरा गाँधी स्टेडियम सिद्दीकपुर, जौनपुर में सम्पन्न कराया गया, जिसमें विश्वविद्यालय क्षेत्र में स्थित 22 महाविद्यालयों की टीमों ने प्रतिभाग किया एवं लगभग 10 महाविद्यालयों के खिलाड़ियों ने ट्रायल दिया। प्रदर्शन के आधार पर अर्हता प्राप्त खिलाड़ियों का विश्वविद्यालय टीम हेतु चयन किया गया।

(स) *अन्तर महाविद्यालयी हॉकी महिला प्रतियोगिता*

यह प्रतियोगिता 21 दिसम्बर को विश्वविद्यालय के एकलव्य स्टेडियम खेला गया जिसमें 05 महाविद्यालयों की पूरी टीम एवं 4 महाविद्यालय की छात्राओं का ट्रायल लिया गया। प्रदर्शन के आधार पर विश्वविद्यालय हॉकी महिला टीम का चयन किया गया।

माह: जनवरी 2017

1. 09 से 11 जनवरी तक मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली के निर्देश के क्रम में वित्तीय साक्षरता अभियान (वित्साक्षा) की शुरुआत विश्वविद्यालय परिसर में की गई। तीन दिवसीय इस कार्यक्रम में विभिन्न वित्तीय साक्षरता कार्यक्रमों का आयोजन किया गया । इसके अंतर्गत निबंध , वाद–विवाद प्रतियोगिता "नकद रहित अर्थव्यवस्था: चुनौतियां एवं संभावनाएं" विषयक गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें परिसर पाठ्यक्रम के सभी विद्यार्थियों नें बढ़ –चढ़ कर भाग लिया।
2. 10 जनवरी को साक्षरता अभियान (वित्साक्षा) के अंतर्गत नकदरहित अर्थव्यवस्था: चुनौतियां एवं संभावनाएं विषय पर पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।पोस्टर प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के कुल 41 प्रतिभागियों ने अपनी सृजन क्षमता प्रदर्शित की। इसमें विद्यार्थियों ने वर्तमान भारतीय अर्थव्यवस्था एवं भविष्य का दृश्यात्मक प्रदर्शन बड़े रोचक तरीके से किया। एक तरफ जहां प्रतिभागियों ने विमुद्रीकरण के उपरांत उपजी सामाजिक कठिनाईयों को चित्रित किया वहीं दूसरी तरफ डिजिटल अर्थव्यवस्था एवं नकदरहित लेन–देन की संभावनाओं को रंगों एवं चित्रों के माध्यम से उकेरा।
3. 11 जनवरी को विश्वविद्यालय के विश्वेसरैया सभागार में वित्तीय साक्षरता अभियान (वित्साक्षा) के क्रम में नकदरहित अर्थव्यवस्था: चुनौतियां एवं संभावनाएं विषयक कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में कुलपति प्रो. पीयूष रंजन अग्रवाल ने ई – रिटेल मार्केटिंग पर विस्तार पूर्वक अपनी बात रखी।
4. 12 जनवरी को विश्वविद्यालय के विवेकानन्द केन्द्रीय पुस्तकालय में स्वामी विवेकानन्द जयंती मनायी गयी। इस अवसर पर स्वामी जी के व्यक्तित्व पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया।विवेकानंद केंद्रीय पुस्तकालय में आयोजित इस संगोष्ठी को दिल्ली स्कूल ऑफ कॉमर्स दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर बी.पी. सिंह ने बतौर मुख्य अतिथि संबोधित किया।
5. 13 जनवरी को कुलपति सभागार में विद्या परिषद की बैठक का आयोजन किया गया।
6. 13 जनवरी को विश्वविद्यालय के जनसंचार विभाग द्वारा परिसर के विद्यार्थियों को स्वामी विवेकानंद जी के विचारों पर आधारित पुस्तक व्यक्तित्व का विकास वितरण किया गया। यह कार्यक्रम विश्वविद्यालय के मुख्य द्वार के पास स्थापित विवेकानंद के शिकागो उदबोधन शिलालेख के समक्ष आयोजित किया।

गया।

7. 23 जनवरी को विश्वविद्यालय परिसर में विश्वेश्वरैया सभागार में सम–सामयिक शोध पत्र लेखन पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। बाबा साहब भीम राव अम्बेडकर केंद्रीय विश्वविद्यालय लखनऊ के प्रोफेसर कुशेंद्र मिश्र नें प्रतिभागियों को शोध पत्र लेखन की बारीकियों से परिचित कराया।

8. 24 जनवरी को कुलपति सभागार में परीक्षा संचालन व परिणाम 2017 विषयक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में कुलपति प्रोफेसर पीयूष रंजन अग्रवाल सहित परीक्षा से जुड़ी समस्त समितियों, परीक्षा घोषणा समिति, निगरानी समिति एवं मूल्यांकन समिति के साथ महाविद्यालय के प्राचार्यगण,वरिष्ट प्राध्यापक गण, विश्वविद्यालय के प्रशासनिक अधिकारीगण एवं कर्मचारी गण ने प्रतिभाग किया।

9. 25 जनवरी को विश्वविद्यालय के फार्मेसी संस्थान में बुधवार को दीक्षांत पूर्व व्याख्यान का आयोजन किया गया। वाराणसी फार्मेसी कालेज आफ फार्मेसी के निदेशक प्रो0 ओ0पी0 तिवारी नें भैषज्य विज्ञान में भविष्यगत संभावनाएं विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया।

10. 26 जनवरी को विश्वविद्यालय परिसर में गणतंत्र दिवस समारोह का आयोजन किया गया।

11. 28 जनवरी को समाजिक अनुप्रयुक्त संकाय में दीक्षान्त पूर्व व्याख्यानमाला के अन्तर्गत काशी विद्यापीठ के प्रो0 ओम प्रकाश सिंह का व्याख्यान हुआ। प्रबन्ध अध्ययन संकाय में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रोफेसर आर.एन. त्रिपाठी ने लोकतंत्र एवं प्रबंध विषय पर व्याख्यान दिया।

12. जनवरी में विश्वविद्यालय के 706 पी–एच.डी. शोध प्रबन्ध विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के वेबसाइट "शोध गंगा" पर अपलोड किये गये।

खेल गतिविधियां –

12. अन्तर महाविद्यालयीय कुश्ती पुरुष एवं महिला प्रतियोगिता विश्वविद्यालय परिसर स्थित एकलव्य स्टेडियम में 02 एवं 03 जनवरी को सम्पन्न हुई। उक्त प्रतियोगिता में लगभग 50 महाविद्यालयों के छात्र/छात्राओं ने प्रतिभाग किया। प्रदर्शन के आधार पर आर्टी मार वर्ग के फ्री स्टाईल, ग्रीको रोमन पुरुष एवं फ्री स्टाईल महिला खिलाड़ियों का अखिल भारतीय अन्तर विश्वविद्यालयीय प्रतियोगिता हेतु टीम चयन किया गया।

13. अन्तर महाविद्यालयीय बाक्सिंग पुरुष एवं महिला प्रतियोगिता विश्वविद्यालय परिसर स्थित एकलव्य स्टेडियम में 04 जनवरी को सम्पन्न हुई। उक्त प्रतियोगिता में लगभग 20 महाविद्यालयों के छात्र/छात्राओं ने प्रतिभाग किया। प्रदर्शन के आधार पर अर्हता प्राप्त खिलाड़ियों का चयन अखिल भारतीय अन्तर विश्वविद्यालयीय प्रतियोगिता हेतु किया गया।

14. अन्तर महाविद्यालयीय वालीबाल महिला प्रतियोगिता विश्वविद्यालय परिसर स्थित एकलव्य स्टेडियम में 05 जनवरी को सम्पन्न हुई। उक्त प्रतियोगिता में लगभग 5 महाविद्यालयों की टीम एवं कुछ महाविद्यालयों के छात्राओं द्वारा ट्रायल दिया गया। प्रदर्शन के आधार पर अर्हता प्राप्त खिलाड़ियों का चयन पूर्वी क्षेत्र अन्तर विश्वविद्यालयीय प्रतियोगिता हेतु किया गया।

15. अन्तर महाविद्यालयीय जिमनास्टिक पुरुष एवं महिला प्रतियोगिता विश्वविद्यालय परिसर स्थित एकलव्य स्टेडियम में 06 जनवरी को सम्पन्न हुई। उक्त प्रतियोगिता में लगभग 15 महाविद्यालयों के छात्र/छात्राओं ने प्रतिभाग किया। प्रदर्शन के आधार पर अर्हता प्राप्त खिलाड़ियों का चयन अखिल भारतीय अन्तर विश्वविद्यालयीय प्रतियोगिता हेतु किया गया।

16. पूर्वी क्षेत्र अन्तर विश्वविद्यालयीय वालीबाल महिला प्रतियोगिता विश्वविद्यालय परिसर स्थित एकलव्य स्टेडियम में 17 से 22 जनवरी को सम्पन्न हुई। उक्त प्रतियोगिता में पूर्वी क्षेत्र की 21 विश्वविद्यालयों की टीम ने प्रतिभाग किया। उक्त प्रतियोगिता में वीर बहादुर सिंह पूर्वान्चल विश्वविद्यालय, जौनपुर को प्रथम, कलकत्ता विश्वविद्यालय को द्वितीय, पं0 रवि शंकर शुक्ला विश्वविद्यालय, रायपुर तृतीय एवं रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय, कलकत्ता को चतुर्थ स्थान प्राप्त हुआ। उक्त चारों विश्वविद्यालयों की टीमों ने अखिल भारतीय अन्तर विश्वविद्यालयीय प्रतियोगिता हेतु अर्हता प्राप्त की है। अखिल भारतीय अन्तर विश्वविद्यालयीय प्रतियोगिता विश्वविद्यालय परिसर स्थित एकलव्य स्टेडियम में 08 फरवरी से 14 फरवरी तक सम्पन्न होनी है।

सोशल मीडिया पर विश्वविद्यालय

वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय का आधिकारिक ब्लॉग पूरबबानी (www.vbspurvanchaluniversity.blogspot.in) है। इस के साथ ही एक जून 2013 से विश्वविद्यालय फेसबुक (https://www.facebook.com/Vbs Purvanchal University JaunpurUpIndia) पर भी है। ब्लॉग और फेसबुक के माध्यम से विश्वविद्यालय की गतिविधियों को वैश्विक मंच पर पहुंचाया गया है। ब्लॉग पूरब बानी विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय से जुड़े लोगों के बीच लोकप्रिय है। जनसंचार विभाग के शिक्षक डॉ. मनोज मिश्र एवं डॉ. दिग्विजय सिंह रावत द्वारा इसे निर्मित कर संचालित किया जा रहा है। विभाग के विद्यार्थियों का भी इसमें सहयोग रहता है जो विश्वविद्यालय की गतिविधियों की रिपोर्टिंग, फोटोग्राफ एवं वीडियो उपलब्ध कराते हैं। पूरब बानी ब्लॉग को अब तक 1 लाख 20 हजार बार देखा गया है। भारत के साथ ही साथ अमेरिका, संयुक्त अरब, रूस, जार्जिया, जर्मनी, यूक्रेन, स्पेन एवं फ्रांस जैसे देशों में भी पाठक हैं। वहीं फेस बुक पेज को 29 हजार लोगों ने विजिट किया है। लोकप्रिय वीडियो ब्लॉग यू-ट्यूब पर विश्वविद्यालय के कई कार्यक्रमों की वीडियो भी अपलोड किया गया है। विश्वविद्यालय से जुड़े लोग इसके माध्यम से दूर रहकर भी कार्यक्रमों को देख पा रहे हैं।

मशरूम प्रशिक्षण एवं शोध केन्द्र

मशरूम प्रशिक्षण एवं शोध केन्द्र की स्थापना विश्वविद्यालय के विज्ञान संकाय में की गयी है। केन्द्र का प्रमुख उद्देश्य मशरूम की खेती के प्रति किसानों एवं छात्रों को जागरूक करना तथा मशरूम से सम्बन्धित शोध करना है। इस क्रम में केन्द्र समय-समय पर मशरूम की खेती प्रशिक्षण एवं निःशुल्क बीज वितरण किसानों को उपलब्ध कराया है। केन्द्र को भारत सरकार के विज्ञान प्रौद्योगिकी विभाग एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली द्वारा शोध हेतु शोध परियोजनायें भी अनुमानित है। शोध केन्द्र ने वर्तमान केन्द्र समन्वयक डॉ. रामनारायण के शोध निर्देशन में मशरूम के उत्पादन में बिना किसी नुकसान के वृद्धि करने वाले दो नये बैक्टीरिया (Bacillus vallismortis एवं Azospirillum-brasilense) खोजे हैं जो कि शोध केन्द्र की एक बड़ी उपलब्धि है। उक्त दोनों बैक्टीरिया का डाटा नेशनल सेन्टर फॉर बायोटेक्नोलॉजी इन्फार्मेशन यूएस गवर्नमेन्ट की वेबसाइट के डाटा बैंक में उपलब्ध है।

वित्तीय साक्षरता अभियान

बदलते वैश्विक परिवेश एवं सूचना एवं प्रौद्योगिकी के विकास के साथ ही साथ वित्तीय सेवा क्षेत्रों में भी अभूतपूर्व परिवर्तन परिलक्षित हुए है एवं अर्थव्यवस्थाओं को इन परिवर्तनों को समाहित करते हुए स्पष्ट रूप से महसूस किया जा सकता है। भारत सरकार द्वारा भी विमुद्रीकरण एवं अंकेक्षण जैसे महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए। वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय इस कड़ी में एक कदम आगे बढ़ते हुए गत वर्ष ही वित्तीय साक्षरता कार्यक्रमों की शुरुआत की। जहाँ एक तरफ प्राध्यापकों द्वारा छात्रों को वित्तीय रूप से साक्षर बनाने के लिए विभागीय स्तर पर व्याख्यान एवं कार्यशालाएं आयोजित की गई। ग्रामीण समाज के मध्य वित्तीय साक्षरता के उन्नयन हेतु विश्विद्यालय परिक्षेत्र के विभिन्न स्थलों पर वित्तीय साक्षरता कार्यक्रम आयोजित किये गए। इस वर्ष भी जनवरी माह में वित्तीय साक्षरता अभियान के तहत दिनांक 9 से 11 जनवरी तक तीन दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किये गए। जिसमें विश्विद्यालय के शिक्षक, कर्मचारी एवं छात्रों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। कार्यक्रम को विस्तृत आयाम देते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. पीयूष रंजन अग्रवाल, डॉ. अजय द्विवेदी, विभागाध्यक्ष, वित्तीय अध्ययन विभाग, डॉ. आशुतोष कुमार सिंह, सहायक आचार्य, व्यवसायिक अर्थशास्त्र विभाग, श्री अभिनव

वर्मा, एडीसी, ओरिएण्टल बैंक ऑफ कॉमर्स, श्री राजीव निरंजन, सीएमडी, ओरिएण्टल बैंक ऑफ कॉमर्स इत्यादि ने नकद रहित अर्थव्यवस्था: चुनौतियां एवं संभावनाएं विषय पर आयोजित कार्यशाला के माध्यम से नकद रहित अर्थव्यवस्था एवं अंकीकरण के विविध आयामों से प्रतिभागियों एवं विद्यार्थियों को रूबरू कराया। कार्यशाला में ई–बिजनस, ई–रिटेल मार्केटिंग, ऑनलाइन लेन देन के विभिन्न माध्यम जैसे एटीएम, क्रेडिट / डेबिट कार्ड, रुपे कार्ड, पे–टीएम, मोबाइल वॉलेट, ई–बैंकिंग एप्स, साइबर सिक्यूरिटी, यू.पी.आई., यू.एस.एस.डी., पोस (पी.ओ. एस.), आधार इनेबल्ड पेमेंट सिस्टम, भीम एप्स इत्यादि के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। जनसंचार एवं पत्रकारिता विशेषज्ञ डॉ. मनोज मिश्र एवं डॉ. दिग्विजय सिंह राठौर ने भी वित्तीय साक्षरता को बढ़ावा देने में मीडिया एवं तकनीकी की भूमिका पर विस्तृत रूप से अपने विचार व्यक्त किये। वित्तीय साक्षरता अभियान के तहत अन्य कार्यक्रम भी आयोजित किये गए, जिसमें अन्य विधाओं के माध्यम से प्रतिभागिओं ने पोस्टर प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता एवं वाद–विवाद प्रतियोगिता के माध्यम से अपनी सृजन क्षमता प्रदर्शित की। इसमें विद्यार्थियों ने वर्तमान भारतीय अर्थव्यवस्था एवं भविष्य का दृश्यात्मक प्रदर्शन बड़े रोचक तरीके से किया। एक तरफ जहां प्रतिभागियों ने विमुद्रीकरण के उपरांत उपजी सामाजिक कठिनाईयों को चित्रित किया वहीं दूसरी तरफ डिजिटल अर्थव्यवस्था एवं नकद रहित लेन–देन की संभावनाओं को रंगों एवं चित्रों के माध्यम से उकेरा।

वित्तीय साक्षरता कार्यक्रम में प्रतिभागियों ने अर्थव्यवस्था की वर्तमान दशा एवं दिशा, वित्तीय साक्षरता का स्तर, अर्थव्यवस्था के ढांचा गत समस्याओं एवं भविष्य में आने वाले चुनौतियों पर चर्चा एवं परिचर्चा की। कार्यक्रम में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को मेडल देकर सम्मानित भी किया गया।

राष्ट्रीय सेवा योजना

वीर बहादुर सिंह पूर्वान्चल विश्वविद्यालय जौनपुर के राष्ट्रीय सेवा योजना में एक से बढ़कर एक कीर्तिमान स्थापित किये है। विश्वविद्यालय का राष्ट्रीय सेवा योजना प्रकोष्ठ की पूरे प्रदेश में अपनी एक अलग पहचान है। राष्ट्रीय सेवा योजना की छात्र संख्या पूरे उत्तर प्रदेश में सर्वाधिक वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय की है, जो कि अपने आप में एक रिकार्ड है। वर्तमान सत्र 2016–17 में अब तक विश्वविद्यालय से सम्बद्ध कुल 327 महाविद्यालयों में 56350 छात्र राष्ट्रीय सेवा योजना से जुड़े हैं। शासन द्वारा इन महाविद्यालयों में कुल 564 इकाई आवंटित है। विद्यार्थियों के लिए राष्ट्रीय सेवा योजना का चिन्तन महात्मा गांधी व स्वामी विवेकानन्द के विचारों से प्रेरित है। गांधी जी का मत था कि छात्र जीवन न केवल बौद्धिक विकास का समय है बल्कि भावी जीवन के निर्माण का भी समय है। शिक्षा के तृतीय आयाम के रूप में मान्यता प्राप्त राष्ट्रीय सेवा योजना शिक्षण एवं समुदाय को जोड़ने वाली महत्वपूर्ण कड़ी है। जिससे विद्यार्थियों को सामाजिक समस्याओं से रूबरू कराया जाता है। स्थानीय, प्रादेशिक एवं देश में विश्वविद्यालय को राष्ट्रीय सेवा योजना को बापू बाजार से विशिष्ट पहचान मिली। पर्यावरण को हरा बनाने के प्रयास में कुलपति प्रो0 पीयूष रंजन अग्रवाल ने नूतन पहल करते हुए "एक छात्र एक पेड़" योजना द्वारा पौधरोपण पर बल दिया जिसे राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयसेवक सेविकाओं ने गति प्रदान की है।

ई0टी0आई0 आगरा एवं राष्ट्रीय सेवा योजना वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर द्वारा संयुक्त रूप से 2016 में दो कार्यशालाएं आयोजित कर 150 से अधिक कार्यक्रम अधिकारियों प्रशिक्षण दिया गया।

सितम्बर 2016 में विगत सत्रों की भांति प्री0आर0डी0 परेड हेतु एक दिवसीय शिविर का आयोजन 29 सितम्बर को विश्वविद्यालय परिसर राष्ट्रीय सेवा योजना भवन एवं एकलव्य स्टेडियम में किया गया, जिसमें भारत सरकार एवं नेशनल कैडेट कोर जौनपुर तथा संगीत के प्रशिक्षकों द्वारा कुल 12 स्वयंसेवक–सेविकाओं का चयन हुआ।

विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालयों की इकाईयों द्वारा राष्ट्रीय सेवा योजना के बैनर तले सामान्य एवं विशेष शिविर के अन्तर्गत स्वच्छता अभियान, एड्स जागरूकता रैली, मतदाता जागरूकता रैली, पर्यावरण संरक्षण, वृक्षारोपण, जलसंरक्षण, साक्षरता कार्यक्रम, कैशलेस आदि विषयों पर रैली, गोष्ठी, नुक्कड़ नाटक, स्लोगन, बैनर आदि के माध्यम से समाज को जागरूक किया जा रहा है। विगत सत्र में कुल 138 रेड रिबन क्लबों का संचालन सफलतापूर्वक किया गया।

स्वच्छता अभियान

स्वच्छ भारत के उद्देश्य प्राप्ति के निमित्त भारत सरकार द्वारा स्वच्छ भारत मिशन अभियान की शुरूआत की गयी है। तद्क्रम में माननीय कुलाधिपति/श्री राज्यपाल, उत्तर प्रदेश महोदय के निर्देश के अनुपालन में वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय में 09 नवम्बर 2016 से 16 नवम्बर 2016 तक स्वच्छता सम्बन्धी अनेक गतिविधियां संचालित की गयी। इस अभियान में विद्यार्थियों, शिक्षकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने अपनी महती भूमिका अदा की। स्वच्छता अभियान के दौरान विद्यार्थियों, शिक्षकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने जहां स्वच्छ भारत का संकल्प लिया वहीं इस अभियान को सफल बनाने में सभी लगातार सक्रिय रहे।

इस अभियान की शुरूआत करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. पीयूष रंजन अग्रवाल ने परिसर स्थित ओपेन थिएटर में विश्वविद्यालय के शिक्षकों, कर्मचारियों एवं छात्रों को स्वच्छता की शपथ दिलायी। सब ने एक स्वर में शपथ ली कि हर वर्ष 100 घंटे यानि हर सप्ताह 2 घंटे श्रमदान करके स्वच्छता के इस संकल्प को चरितार्थ करेंगे।

तदानुक्रम में विश्वविद्यालय परिसर के मुक्तांगन, पुस्तकालय एवं मुख्य द्वार पर साफ सफाई का कार्यक्रम आयोजित किया गया। विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों ने इस अभियान में बढ़-चढ़कर भाग लिया। मुक्तांगन में योग के माध्यम से मानसिक स्वच्छता का संदेश दिया गया।

प्रशासनिक भवन में स्वच्छता अभियान को बढ़ावा देने के लिए "स्वच्छता एवं दैनिक जीवन में उपयोगिता" विषयक गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस गोष्ठी में विश्वविद्यालय के शिक्षणेत्तर कर्मचारियों ने अपनी बात रखी।

इंजीनियरिंग, फार्मेसी, प्रबंध अध्ययन, विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान संकाय मैव्यापक पैमाने पर शिक्षकों एवं विद्यार्थियों द्वारा साफ-सफाई की गयी।

द्रोपदी, मीराबाई, विश्वकर्मा, चरक, सीवी रमन छात्रावास में साफ-सफाई अभियान आयोजित किया गया। इसमें अंतेवासियों द्वारा सक्रियता के साथ साफ-सफाई की गयी।इस अवसर पर महिला छात्रावास में स्वच्छता अभियान पर केन्द्रित निबन्ध लेखन, पोस्टर, स्लोगन, मेंहदी, रंगोली एवं आशुभाषण प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। निबन्ध प्रतियोगिता में डेजी ने प्रथम, इशाना चन्द्र ने द्वितीय एवं प्रियंका यादव ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। पोस्टर प्रतियोगिता में मंजरी श्रीवास्तव ने प्रथम, कृति गुप्ता ने द्वितीय, रिशू ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। स्लोगन प्रतियोगिता में आकांक्षा श्रीवास्तव ने प्रथम, आरती प्रजापति ने द्वितीय, रूबी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। रंगोली प्रतियोगिता में शशि प्रिया ने प्रथम, साक्षी श्रीवास्तव ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। मेंहदी प्रतियोगिता में साक्षी साहनी ने प्रथम, प्रियंका यादव ने द्वितीय, ज्योति चक्राता ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। आशुभाषण प्रतियोगिता में मनीषा श्रीवास्तव ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

विश्वविद्यालय के आवासीय परिसर में भी स्वच्छता अभियान चलाया गया। परिसर में स्वच्छता अभियान पर केन्द्रित निबन्ध लेखन, पोस्टर, स्लोगन, आशुभाषण, रंगोली एवं मेंहदी प्रतियोगिता का आयोजन किया। आवासीय परिसर वासियों ने इन प्रतियोगिताओं में बढ़-चढ़कर भाग लिया।

विश्वविद्यालय के इंजीनियरिंग संस्थान एवं प्रबंध अध्ययन संस्थान में स्वच्छता अभियान पर केन्द्रित निबन्ध लेखन, पोस्टर, स्लोगन, आशुभाषण, रंगोली एवं मेंहदी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

विश्वविद्यालय के मुक्तांगन परिसर में स्वच्छता अभियान के समापन सत्र का आयोजन किया गया। समापन समारोह को सम्बोधित करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. पीयूष रंजन अग्रवाल ने सफल अभियान की बधाई देते हुए कहा कि साफ-सफाई की आदत को अपने दैनिक दिनचर्या में शामिल करें। इसी को दृष्टिगत रखते हुए शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं कर्मचारी बन्धुओं ने स्वच्छता के प्रति ली गयी शपथ को सार्थक किया है।समापन अवसर पर स्वच्छता अभियान में विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजेता रहे विद्यार्थियों, कर्मचारियों एवं आवासीय परिसर के बच्चों को स्मृति चिन्ह एवं प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया गया।

प्रेरणा
(वंचितों को निःशुल्क शिक्षा का एक प्रयास)

वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय परिसर के अभियांत्रिकी एवं तकनीकी संकाय के विद्यार्थियों द्वारा ग्राम देवकली, जौनपुर में पूर्णतया निःशुल्क शिक्षण कक्षाएँ "प्रेरणा" चलाई जा रही हैं। इन कक्षाओं से विश्वविद्यालय परिसर के आस–पास के गाँव देवकली, भटानी और जासोपुर के लगभग 150 छात्र एवं छात्राएं लाभान्वित हो रहे हैं। इन कक्षाओं में एलकेजी से कक्षा 12 तक के बच्चों को पढ़ाया जाता है। इन कक्षाओं की शुरुआत इंजीनियरिंग संस्थान के शिक्षक डॉ. संतोष कुमार एवं डॉ. अमरेन्द्र सिंह के मार्गदर्शन में इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग चतुर्थ वर्ष के छात्र विशाल सिंह के नेतृत्व में दिनांक 4 फरवरी, 2014 को हुई थी। जिसमें इंजीनियरिंग के 10 बच्चों ने गाँव के 30 छात्रों को पढ़ाना प्रारंभ किया। गत तीन वर्षों की प्रेरणा कक्षाओं के संचालन के उपरांत बच्चों के ज्ञान का स्तर काफी बढ़ा है और आसपास के गाँव में बच्चों के अभिभावक भी विश्वविद्यालय के छात्रों के इस प्रयास से काफी खुश हैं। आज इन कक्षाओं में बच्चे सेंट्रल हिन्दू स्कूल, वाराणसी की प्रवेश परीक्षा हेतु भी निःशुल्क तैयारी कर रहे हैं। वर्तमान सत्र का संचालन इंजीनियरिंग के चतुर्थ वर्ष के छात्र आशुतोष चौधरी, विशाल मणि पासवान, अंकित सिंह, ज्ञानचंद्र सिंह, अमित कुमार यादव, संदीप कुमार, विभूति नारायण एवं अमित यादव समेत 27 छात्रों के कठिन परिश्रम एवं डॉ. राजकुमार की देख–रेख में चल रहा है। समय–समय पर बच्चों के चहुँमुखी विकास के लिए प्रेरणा में विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं और बच्चों को पुरस्कृत भी किया जाता है।

विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा प्रेरणा कक्षाओं के माध्यम से जहां एक तरफ वंचित बच्चों को निःशुल्क शिक्षा जा रही है वहीं ही उनके व्यक्तित्व विकास के लिए भी पाठ्यक्रम से इतर प्रयास किये जा रहे हैं। प्रेरणा कक्षा के विद्यार्थियों को समय–समय पर विश्वविद्यालय का भ्रमण भी कराया जाता है जिससे उन्हें आगे बढ़ने की प्रेरणा मिल सके।

योग कार्यक्रम
"योग को जीवन से जोड़ने का संकल्प"

विश्वविद्यालय परिसर में 21 मई, 2015 से नियमित रूप से प्रातः योगाभ्यास कार्यक्रम संचालित है। ओपेन एयर थियेटर में नियमित रूप से विश्वविद्यालय परिसर के शिक्षकों, विद्यार्थियों, कर्मचारियों एवं अधिकारियों को योग के प्रति जागरूक करने एवं शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ रखने के लिए कक्षाएं चलायी जा रही हैं। इसमें प्रतिदिन योगाभ्यास विशेषज्ञों द्वारा कराये जाते हैं। यह कक्षाएं व्यक्तित्व विकास एवं सकारात्मक ऊर्जा का संचार कर रही हैं। प्रथम अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस 21 जून, 2015 को विवेकानंद केन्द्रीय पुस्तकालय में एक वृहद कार्यक्रम आयोजित किया गया था।

योग महोत्सव

मई 2016 में विश्वविद्यालय के मुक्तांगन में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देश पर दो दिवसीय योग महोत्सव का आयोजन किया गया। महोत्सव में पहले दिन सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ ही साथ योग के विविध आयामों पर चर्चा हुई। मुख्य अतिथि प्रसिद्ध योगाचार्य सुरेन्द्र योगी ने कहा कि योग भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग रहा है। आज जनमानस योग से निरोग हो रहा है। ऐसे में हम सभी का दायित्व बनता है कि जन–जन को योग से जोड़ें। योग गुरु जय सिंह गहलोत ने प्राणायाम की शक्ति विषय पर व्याख्यान दिया। विश्वविद्यालय के कुलसचिव डा. देवराज ने भी अपने विचार व्यक्त किये। विशिष्ट अतिथि श्री अचल हरिमूर्ति ने योग द्वारा नशामुक्ति विषय पर अपनी बात रखी।

बाल कलाकार अक्षिता पुरोहित, पीहू पाल, अपूर्वा ने समूह नृत्य प्रस्तुत किया। वैभव बिन्दुसार

ने ऐ मेरे वतन के लोगों..., शौर्य पाल ने आओ बच्चों तुम्हें दिखाये गीत प्रस्तुत कर सबको भाव विभोर कर दिया। ओपन थिएटर में महोत्सव के दूसरे दिन योगाचार्यों द्वारा योग प्रदर्शन एवं योगाभ्यास कराया गया। साथ ही अपील की कि अपने जीवन को योगमय बनायें। मन एवं शरीर को शुद्ध रखने से ही योग का पूर्ण लाभ मिलता है। योग से मानसिक और शारीरिक कष्टों से मुक्ति मिलती है। योग से हमारे मस्तिष्क में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। डॉ. ध्रुव राज सिंह ने युवा और योग विषय पर अपने व्याख्यान में कहा कि आज तकनीकी के युग में युवाओं को मानसिक शांति योग से मिल सकती है। योगाभ्यास कार्यक्रम में खड़े होकर किए जाने वाले आसन ताड़ासन, वृक्षासन, पादहस्तासन, अर्ध चक्रासन, त्रिकोणासन, बैठकर किए जाने वाले आसन भद्रासन, वज्रासन, क्षीरासन,अर्ध उष्ट्रासन, उष्ट्रासन, शशांकासन, उत्तानमंडूकासन एवं मरीच्यासन ध्वक्रासन, उदर के बल लेटकर किए जाने वाले आसन मकरासन भुजंगासन एवं शलभासन, पीठ के बल लेटकर किए जाने वाले आसन सेतुबंधासन, उत्तानपादासन, अर्धहलासन, पवनमुक्तासन एवं शवासन का प्रदर्शन कर योगाचार्यों ने अभ्यास करवाया। महोत्सव में आफताब खान ग्रुप के कलाकारों ने भृत्य की प्रस्तुति में योग के आसनों को भी प्रदर्शित किया। युवा कलाकार वैभव बिन्दुसार एवं शौर्य पाल ने गीत प्रस्तुत किये। शुभा मल्ल ने देशभक्ति गीत मेरा जीवन है तेरे हवाले की प्रस्तुति की। अंजुम श्रीवास्तव ने शांति पाठ किया।

रन फॉर योग

विश्वविद्यालय में 20 जून 2016 अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की पूर्व संध्या पर योग को मन से जोड़ने के लिए दौड़ लगाई गई। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. पीयूष रंजन अग्रवाल ने हरी झंडी दिखाकर दौड़ की शुरुआत कराई। इस दौड़ में विश्वविद्यालय के शिक्षक, कर्मचारी, आवासीय परिसर की महिलाएं, बच्चे, राष्ट्रीय सेवायोजना, रोवर्स रेंजर्स के कार्यक्रम अधिकारियों ने भाग लिया।

द्वितीय अंतरराष्ट्रीय योग दिवस

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस 21 जून 2016 को परिसर के शिक्षक, कर्मचारी समेत क्षेत्रीय नागरिकों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया। इस अवसर पर बतौर मुख्य अतिथि वरिष्ठ चिकित्सक क्षितिज शर्मा ने कहा कि आसन, ध्यान और प्राणयाम से मनुष्य को बीमारियों से मुक्ति मिल सकती है। योग से शारीरिक विकृतियों से साथ ही साथ मानसिक विकृतियों से भी निजात मिलती है। कुलपति प्रो पीयूष रंजन अग्रवाल ने कहा कि योग से सकारात्मक सोच व सृजन क्षमता का विकास होता है। विश्वविद्यालय योग के प्रति गंभीर है। इस दिशा में योग को खेल प्रतियोगिताओं का हिस्सा बनाया गया है। परिसर के छात्रावासों एवं अन्य संस्थानों में योग के कार्यक्रमों को आयोजित किया जाता रहा है। आज के दिन योग को जीवन से जोड़ने का हम सभी को संकल्प लेना चाहिए। आयुष मंत्रालय के प्रोटोकाल के अनुसार योगाचार्य अमित आर्य ने योग कराया इसके साथ ही योग की अलग अलग मुद्राओं के लाभ को भी बताया। योग प्रशिक्षक रवि गुप्ता ने भी योग के कई पहलुओं पर प्रकाश डाला।

एक छात्र एक पेड़
(पौधरोपण अभियान)

वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. पीयूष रंजन अग्रवाल ने 15 अगस्त 2014 से पर्यावरण संरक्षण एवं विद्यार्थियों के मन में प्रकृति के प्रति लगाव पैदा करने के उद्देश्य से "एक छात्र एक पेड़" अभियान की शुरुआत की। इस अभियान का उद्देश्य है कि विश्वविद्यालय में शिक्षा अर्जित करने वाले विद्यार्थी अपने नाम का एक पौधा लगाएं और उसकी सेवा करें। वर्ष 2014 में ओपेन एयर थिएटर, इंजीनियरिंग संस्थान, छात्रावासों के आस पास विद्यार्थियों द्वारा लगभग 600 पौधे लगाए गए। इसके साथ ही आवासीय परिसर में भी पौधरोपण किया गया। वर्ष 2015 में परिसर स्थित छात्रावासों को केन्द्रित करते हुएएक छात्र एक पेड़ अभियान चलाया गया। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने वर्ष 2015 में देश के सभी विश्वविद्यालयों को एक छात्र एक पेड़ योजना संचालित करने के लिए निर्देश दिया है। वर्ष 2016 में 5 अगस्त से 12 अगस्त तक एक छात्र एक पेड़ के अंतर्गत पौधरोपण कार्यक्रम चलाया गया। जिसमें 1000 से अधिक पौधों को विश्वविद्यालय परिसर में विद्यार्थियों द्वारा लगाया गया। 05 अगस्त को फार्मेसी संस्थान में छात्रों के साथ पौधरोपण कर कुलपति प्रो. पीयूष रंजन अग्रवाल ने अभियान का शुभारम्भ किया। 06 अगस्त को प्रबन्ध अध्ययन संकाय, 08 अगस्त को संकाय भवन, 09 अगस्त को प्रशासनिक भवन, 10 अगस्त को इंजीनियरिंग संस्थान, 11 अगस्त को आवासीय परिसर एवं छात्रावास, 12 अगस्त को एकलव्य स्टेडियम, एनएसएस, रोवर्स रेंजर परिसर में पौधरोपण किया गया।अभियान में विद्यार्थियों के साथ–साथ शिक्षकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भी बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया। इस अभियान में लगाए गए अधिकांश पौधे आज नई पत्तियों के साथ हरियाली बढ़ा रहे हैं।

रोवरिंग/रेंजरिंग गतिविधियाँ

''सेवा करो''

वीर बहादुर सिंह पूर्वान्चल विश्वविद्यालय, जौनपुर रोवरिंग/रेंजरिंग के क्षेत्र में प्रदेश का अग्रणी विश्वविद्यालय है। विश्वविद्यालय द्वारा रोवर्स/रेंजर्स गतिविधियों को संचालित करने के लिए विश्वविद्यालय संयोजक, डॉ. राघवेन्द्र कुमार पाण्डेय प्रत्येक जनपद में एक–एक जनपदीय संयोजक नियुक्त किया गया है। रोवर्स/रेंजर्स का मोटो – सेवा करो है। विश्वविद्यालय द्वारा अप्रशिक्षित रोवर्स/रेंजर्स लीडरों को प्रशिक्षण देने के साथ–साथ प्रत्येक वर्ष रोवर्स/रेंजर्स छात्र छात्राओं को प्रवेश, निपुण एवं राज्यपाल प्रमाण पत्र हेतु शिविर लगा कर प्रशिक्षण दिया जाता है।

विश्वविद्यालय द्वारा प्रत्येक जनपदो मे सत्र 2015–16, का 25वां जनपदीय रोवर्स/रेंजर्स समागम जनपद जौनपुर मो0 हसन पी0जी0 कालेज, जौनपुर में, जनपद आजमगढ़ श्री गांधी पी0जी0 कालेज मालटारी आजमगढ़, जनपद मऊ डी0सी0एस0के0 पी0जी0 कालेज, मऊ एवं जनपद गाजीपुर पी0जी0 गाजीपुर में समापन हुआ। जनपदीय समागमों में कुल 85 महाविद्यालयो की टीमो ने प्रतिभाग किया। 25वां अन्तरमहाविद्यालय रोवर्स/रेंजर्स समागम डी0सी0एस0के0 पी0जी0 कालेज, मऊ के प्रांगण में 16 व 17 जनवरी 2016 को सम्पन्न हुआ। जिसमें 18 टीमें प्रतिभाग की, उक्तटीमों से रोवर्स में डी0सी0एस0के0 पी0जी0 कालेज, मऊ तथा रेंजर्स में पी0जी0 कालेज, गाजीपुर प्रथम स्थान पर रहे। विश्वविद्यालय की तरफ से प्रादेशिक रोवर्स/रेंजर्स समागम जो राजकीय महिला पी0जी0 कालेज गाजीपुर में 1 से 3 मार्च 2016 को आयोजित हुआ। जिसमें रोवर्स टीम को प्रदेश स्तर पर द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ। विश्वविद्यालय स्तरीय समागम विश्वविद्यालय के स्टेडियम में दिनांक 18 व 19 फरवरी 2017 को आयोजित होगा। भारत सरकार के द्वारा निर्धारित राष्ट्रीय कार्यक्रमों जैसे–पल्सपोलियो, मतदाता जागरुकता अभियान, पर्यावरण सरक्षण आदि में स्वयं सेवक के रुप में अपने रोवर्स/रेंजर्सलीडर्स के निर्देशन में कार्य करते रहते हैं।

विश्वविद्यालय, जौनपुर के रोवर्स/रेंजर्स एवं लीडर्स आत्मीय भाव से लगातार समाजिक सेवा के लिए प्रतिबद्ध रहते हुए प्रदेश स्तर पर विजेता होने का इतिहास कायम रखा।

जनपदीय/अन्तर महाविद्यालयीय समागमटीमों एवं छात्र-छात्राओं का विवरण (2015-16)

	जनपद	टीमों की स0	रोवर्स रेंजर्स
1. जनपदीय समागम विवरण ।			
1. जौनपुर : मोहम्मद हसन पी0जी0 कालेजजौनपुर।	18	360	240
2. आजमगढ़ : गंगा गीरी महावि0 आजमगढ़।	36	560	540
3. मऊ : डी0सी0एस0के0 पी0जी0 कालेज मऊ।	16	210	270
4. गाजीपुर : पी0जी0 कालेज गाजीपुर।	15	240	210
कुल	85	1370	1260
2. अन्तर महाविद्यालयीय समागम			
डी0सी0एस0के0 पी0जी0 कालेज मऊ।	18	260	270
3. प्रादेशिक समागम			
राजकीय महिला पी0जी0 कालेज गाजीपुर	2	30	30

उक्त महाविद्यालयों मे रोवर्स/रेंजर्स समागम का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न प्रतियोगिताएं जैसे मार्च पास्ट, वर्दी पोस्टर क्विज एवं निबन्ध सैण्ड स्टोरी, समूह गान नाट्य प्रतियोगिता (प्रथम दिन)। दुसरा दिन, सर्व धर्म प्रार्थना, कलर पार्टी, ध्वज शिष्टाचार, पुल व तम्बू निर्माण, लाग्बुक किम्सगेम, दल अभिलेख प्राथमिक चिकित्सा, रोलप्ले, झांकी प्रतियोगिता आदि कार्यक्रम सम्पन्न करा कर समस्त छात्र–छात्राओं को प्रमाण पत्र वितरित किया गया।

वन महोत्सव : पौधरोपण अभियान

एक छात्र एक पेड़ अभियान के अन्तर्गत विश्वविद्यालय से सम्बद्ध समस्त जनपदों के चार–चार महाविद्यालयों को चयनित कर वन महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। यह महाविद्यालय आदर्श के रूप में अन्य के लिए प्रेरणा का स्रोत होंगे। प्रथम चरण में आजमगढ़ जनपद के चार महाविद्यालयों मे वन महोत्सव का आयोजन कर पौधरोपण कराया गया है।

सम्बद्धता प्राप्त महाविद्यालय (2016)

क्र.	जनपद	राजकीय महाविद्यालय	अनुदानित महाविद्यालय	स्ववित्त पोषित महाविद्यालय	कुल महाविद्यालय की संख्या
1.	आजमगढ़	02	10	189	201
2.	गाजीपुर	03	08	255	266
3.	मऊ	02	04	130	136
4.	जौनपुर	02	14	145	161
5.	इलाहाबाद (हंडिया)	—	01	—	01
	कुल	09	37	719	765

परीक्षा सत्र 2015–16 में उपाधि प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की संख्या

	पंजीकृत विद्यार्थियों की संख्या			उत्तीर्ण विद्यार्थियों की संख्या		
	कुल परीक्षार्थी	छात्र	छात्राएं	कुल परीक्षार्थी	छात्र	छात्राएं
कुल परीक्षार्थियों की संख्या	149493	58303	91190	142795	55153	87642
स्नातक परीक्षार्थी	122500	48752	73748	116564	45979	70585
परा स्नातकप रीक्षार्थी	26993	9551	17442	26231	9174	17057
स्वर्णपदक धारक स्नातक विद्यार्थी	16	07	09			
स्वर्णपदक धारक परास्नातक विद्यार्थी	43	16	27			
कुलपदक धारक	59	23	36			

संकायवार शोध उपाधि धारकों की सूची

क्र.सं.	संकाय का नाम	शोधार्थियों की संख्या
1	कला संकाय	242
2	विज्ञान संकाय	50
3	शिक्षा संकाय	22
4	वाणिज्य संकाय	04
5	कृषि संकाय	06
	योग	324

विश्वविद्यालय परिसर में आमंत्रित वाह्य विशेषज्ञ
जनवरी 2016 - जनवरी 2017

- डॉ. राकेश कुमार सिंह, असिस्टेंट प्रोफेसर (अनुसंधान), ट्रांसलेशनल साइंस लैब चिकित्सा, फ्लोरिडा, संयुक्त राज्य अमेरिका।
- डॉ. मकसूद अहमद, असिस्टेंट प्रोफेसर, किंग अब्दुल्ला इन्स्टीच्यूट फार नैनोटेक्नोलॉजी, किंग सऊद वि.वि. सऊदी, अरब।

अरूणांचल प्रदेश

- प्रो. हरीश कुमार शर्मा, राजीव गांधी विश्वविद्यालय, अरूणांचल प्रदेश।

आसाम

- प्रो. एन.एन. पाण्डेय, असम विश्वविद्यालय, सिल्चर, आसाम।

आंध्र प्रदेश

- प्रो. मो. जहीदुल हक, हैदराबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय, हैदराबाद।
- प्रो. पी.वी. अरूणाचलम्, त्रिरूपति, आंध्र प्रदेश।

उड़ीसा

- प्रो. एस.एस. मोहन्ती, सम्भल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर, उड़ीसा।

उत्तर प्रदेश

- प्रो. ए.के. कौल, समाजशास्त्र विभाग, बीएचयू।
- प्रो. ए.के. मुखर्जी, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
- प्रो. ए.के. राय, वनस्पति विज्ञान विभाग, विज्ञान संकाय, बीएचयू वाराणसी।
- प्रो. ए.के. जोशी, समाजशास्त्र विभाग, बीएचयू, वाराणसी।
- प्रो. एस.बी. निमसे, कुलपति, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।
- प्रो. एन. चतुर्वेदी, इतिहास विभाग, इला. विश्वविद्यालय, इला.।
- प्रो. एच.पी. माथुर, एफएमएस, बीएचयू, वाराणसी।
- प्रो. कीर्ति सिंह, पूर्व कुलपति, नरेन्द्र देव कृषि विश्वविद्यालय, फैजाबाद।
- प्रो. के.के. अग्रवाल, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी।
- प्रो. कृपाशंकर, दर्शन विभाग, बीएचयू, वाराणसी।
- प्रो. राम मोहन पाठक पूर्व निदेशक, मदन मोहन मालवीय हिंदी पत्रकारिता संस्थान काशी विद्यापीठ, वाराणसी।
- प्रो. राम विलास, भूगोल विभाग, बीएचयू, वाराणसी।
- प्रो. राम शंकर त्रिपाठी (सेवानिवृत्त) समाजशास्त्र विभाग, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी।
- प्रो. डी. गंगाधर, दर्शन विभाग, बीएचयू।
- प्रो. उपेंद्र पांडेय संस्कृत विभाग, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय वाराणसी।
- प्रो. देवेश कुमार, एसोसिएट प्रोफेसर, एप्लॉइड फिजिक्स विभाग, बाबा साहब भीम राव केन्द्रीय विश्वविद्यालय, लखनऊ।
- प्रो. वाचस्पति द्विवेदी, संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी।
- प्रो. अविनाश चंद्र पांडेय, पूर्व कुलपति, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झांसी।
- प्रो. आर.एस. सिंह, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
- प्रो. आर.के. लोधवाल, बीएचयू मैनेजमेंट स्टडीज संकाय, वाराणसी।
- प्रो. आशीष बाजपेयी, एफएमएस, बीएचयू, वाराणसी।
- प्रो. ओपी राय,वाणिज्य, बीएचयू विभाग, वाराणसी।
- प्रो. गीता राय प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, बीएचयू, वाराणसी।
- प्रो. लल्लन मिश्रा, रसायन विज्ञान, बीएचयू, वाराणसी।
- मा. पंकज मित्तल, न्यायमूर्ति, इलाहाबाद उच्च न्यायालय।
- प्रो. ए. सत्यनारायण, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
- प्रो. ए.के. सिंह, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
- प्रो. ए.के. पाण्डेय, बीएचयू, वाराणसी।
- प्रो. ए.के. श्रीवास्तव, बीएचयू, वाराणसी।
- प्रो. ए.के. राय, बीएचयू, वाराणसी।
- प्रो. ए.के. अवस्थी, आगरा।
- प्रो. एम. परवेज, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय अलीगढ़।
- प्रो. एम.एम. सिंह, आई.आई.टी., बीएचयू, वाराणसी।
- प्रो. एम.एफ.यू. काजमी, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
- प्रो. एम.के. अग्रवाल, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।
- प्रो. ए.पी. सिंह, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।
- प्रो. एस.एन. विश्वकर्मा, जनसा बाजार, वाराणसी।
- प्रो. एस.एन. तिवारी, दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर।
- प्रो. एस.एन. पाण्डेय, एन.एन.एन.आई.टी., इलाहाबाद।
- प्रो. एस.एन. राय, सी.सी.एस. मेरठ विश्वविद्यालय।
- प्रो. एस.बी. अग्रवाल, बीएचयू, वाराणसी।
- प्रो. एस.के. सिंह, एसोसिएट प्रोफेसर, कम्प्यूटर साइंस आई.आई.टी., बीएचयू।
- प्रो. ए.डी. पाठक, दिलकुशा, लखनऊ।
- प्रो. एच.एच. खान, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़।
- प्रो. एच.एन. मिश्रा, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
- प्रो. एच.एन. दुबे, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
- प्रो. एच.के. सिंह, बी.एच.यू., वाराणसी।
- प्रो. एच.के. शर्मा, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
- प्रो. एन.डी. पाण्डेय, विभागाध्यक्ष, रसायन विज्ञान विभाग, एन.एन.एन.आई.टी. इलाहाबाद।
- प्रो. ए.आर. त्रिपाठी, बीएचयू, वाराणसी।
- प्रो. यू.एस. राय, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
- प्रो. (श्रीमती) किरन सिंह, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।
- प्रो. ईश्वर शरण विश्वकर्मा, गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर।
- प्रो. बलिराम, रसायन विज्ञान विभाग, विज्ञान संस्थान, बीएचयू वाराणसी।
- प्रो. बी.एन. मिश्रा, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
- प्रो. बी.एल. शर्मा, गनेशपुरा रतनादा, जोधपुर, राजस्थान।
- प्रो. बी.के. घोष, भौतिकी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
- प्रो. बी.के. पाण्डेय, एम.एम.एम. टेक्निकल विश्वविद्यालय, गोरखपुर।
- प्रो. कृष्ण मुरारी मिश्र, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय अलीगढ़

- प्रो. कृष्णकान्त शर्मा, बीएचयू, वाराणसी।
- प्रो. कौशल किशोर श्रीवास्तव, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
- प्रो. के.एम. पाण्डेय, अंग्रेजी विभाग, बीएचयू, वाराणसी।
- प्रो. के.के. शर्मा, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ।
- प्रो. के.के. आजाद, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
- प्रो. के.डी. मंडल, रसायन विज्ञान विभाग, बी.एच.यू, वाराणसी।
- प्रो. कल्पना गुप्ता, बीएचयू, वाराणसी।
- प्रो. मृदुला त्रिपाठी, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
- प्रो. मंजुला जायसवाल, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
- प्रो. मुक्ता रानी रस्तोगी, लखनऊ विश्वविद्यालय।
- प्रो. मुक्ताशनी रस्तोगी, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।
- प्रो. मुस्ताक अली, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
- प्रो. मुन्नीलाल विश्वकर्मा, महा. गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी।
- प्रो. मनुलता शर्मा, कला संकाय, बीएचयू, वाराणसी।
- प्रो. शिव गोविन्दपुरी, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।
- प्रो. विमल जायसवाल, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।
- प्रो. विनोद प्रसाद सिंह, रसायन विज्ञान विभाग, बीएचयू वाराणसी।
- प्रो. हरिशंकर मिश्र, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।
- प्रो. हेरम्ब चतुर्वेदी, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
- प्रो. भरत सिंह, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
- प्रो. साहित्य कुमार नाहर, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
- प्रो. पंकज श्रीवास्तव, एम.एन.एन.आई.टी., इलाहाबाद।
- प्रो. पी.के. मिश्रा, एसोसिएट प्रोफेसर, कम्प्यूटर विज्ञान बीएचयू।
- प्रो. पी.के. दत्ता, एम.एल.एन.एन.आई.टी., इलाहाबाद।
- प्रो. पी.सी. मिश्र, लखनऊ विश्वविद्यालय।
- प्रो. पी.सी. मिश्रा, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।
- प्रो. पन्नालाल विश्वकर्मा, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
- प्रो. प्रमोद कुमार गुप्ता, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।
- प्रो. प्रहलाद कुमार, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
- प्रो. बी.बी. सिंह, बीएचयू, वाराणसी।
- प्रो. रमाशंकर मिश्र, लखनऊ।
- प्रो. रविशंकर सिंह, दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर।
- प्रो. श्रीमती गौरी चट्टोपाध्याय, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
- प्रो. राम किशोर शास्त्री, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
- प्रो. राम प्रकाश, गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर।
- प्रो. रामशंकर, बी.एच.यू., वाराणसी।
- प्रो. रेखा चतुर्वेदी, लखनऊ।
- प्रो. शैल पाण्डेय, इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद।
- प्रो. संजय गुप्ता, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।
- प्रो. संजीव मदीरिया, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
- प्रो. सी.बी. द्विवेदी, बीएचयू, वाराणसी।
- प्रो. सुधाकर त्रिपाठी, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
- प्रो. सुशांत श्रीवास्तव, आई. टी. बीएचयू, वाराणसी।
- प्रो. सुमन अग्रवाल, गाजियाबाद।
- प्रो. सुमित्रा गुप्ता, बीएचयू, वाराणसी।
- प्रो. सत्या सिंह, कम्प्यूटर एप्लीकेशन, एम.जी.के.वी.पी. वाराणसी।
- प्रो. सतीश कुमार, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी।
- प्रो. उमेश चन्द्र, आगरा कालेज, आगरा।
- प्रो. चंदा देवी, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
- प्रो. जी.पी. नायक, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी।
- प्रो. जफर एहसान, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़।
- प्रो. जे.एन. पाल, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
- प्रो. जे.के. रॉय, जूलोजी विभाग, बीएचयू, वाराणसी।
- प्रो. जगदम्बा सिंह, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
- प्रो. जगदीश सिंह, बीएचयू, वाराणसी।
- प्रो. जगदीश नारायण, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
- प्रो. नरेन्द्र सिंह, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
- प्रो. नवीन चन्द लोहनी, हिन्दी विभाग, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ।
- प्रो. अंशुमान खन्ना, बीएचयू, वाराणसी।
- प्रो. अनिता बाजपेयी, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।
- प्रो. अहमद मुनीर, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़।
- प्रो. टी.पी. सिंह, बीएचयू, वाराणसी।
- प्रो. अरविन्द कुमार जोशी, बीएचयू, वाराणसी।
- प्रो. आशिया एजाज, ए.एम.यू., अलीगढ़।
- प्रो. आर.एस. श्रीवास्तव, आई. टी. बीएचयू, वाराणसी।
- प्रो. आर.एस. तोमर, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी।
- प्रो. आर.एत. सिंह, बॉयो केमिस्ट्री विभाग, अवध यूनिवर्सिटी, फैजाबाद।
- प्रो. आर.के. सिंह, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
- प्रो. आर.के. टण्डन, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
- प्रो. आर.पी. यादव, बरेली।
- प्रो. आर.पी. त्रिपाठी, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
- प्रो. आर.सी. त्रिपाठी, लखनऊ।
- प्रो. आर.सी. तिवारी, इलाहाबाद।
- प्रो. आर.जे. सिंह, पूर्व कुलपति, इन्दिरा नगर, लखनऊ।
- गो. ओम प्रकाश सिंह, मदन मोहन मालवीय हिन्दी पत्रकारिता संस्थान, काशी विद्यापीठ, वाराणसी।
- प्रो. ओ.पी. तिवारी, वाराणसी कालेज ऑफ फार्मेसी, वाराणसी।
- प्रो. आनन्द प्रकाश सिंह, बी.एच.यू., वाराणसी।
- प्रो. आनन्द शंकर सिंह, ईश्वर शरण सिंह डिग्री कालेज, इलाहाबाद।
- प्रो. आनन्द शंकर सिंह, बीएचयू वाराणसी।
- प्रो. अजय तनेजा, बी.आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा।
- प्रो. अजीत कुमार सारस्वत, बी.एन.पी.जी कालेज, अकबरपुर।
- प्रो. अजीज हैदर, काशी विद्यापीठ, वाराणसी।
- प्रो. अनीस अशफाक आब्दी, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।
- प्रो. अल्का अग्रवाल, बैकुण्ठी देवी कन्या महाविद्यालय, आगरा।
- प्रो. गीतिका, एन.एन.एन.आई.टी., इलाहाबाद।
- प्रो. गुंजन सुशील, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
- श्री दिनेश चन्द्र मिश्र, नवभारत टाइम्स, वाराणसी।
- श्री नितिन रमेश गोकर्ण, आयुक्त, वाराणसी डिवीजन, वाराणसी।
- श्री राजेश गौतम, कार्यकारी निदेशक आकाशवाणी, वाराणसी।
- डॉ. एच. कश्मीर चक्रवर्ती हेड, पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग, संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी।

- डॉ. एच.एस. सिंह, आरएमएल अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद।
- डॉ. कुशेंद्र मिश्रा, एसोसिएट प्रोफेसर, प्रबंधन अध्ययन विभाग, बाबा साहब भीम राव केन्द्रीय विश्वविद्यालय, लखनऊ।
- डॉ. विभूति त्रिपाठी, सहायक प्रोफेसर, प्रबंधन अध्ययन, एमएनएनआईटी, इलाहाबाद।
- डॉ. विवेकानंद जैन, उप पुस्तकालयाध्यक्ष, बीएचयू।
- डॉ. राजेश शास्त्री, एमएनएनआईटी, इलाहाबाद।
- डॉ. शशि श्रीवास्तव, एसोसिएट प्रोफेसर, बीएचयू, वाराणसी।
- डॉ. ज्ञान प्रकाश सिंह, आईएमएस, बीएचयू, वाराणसी।
- डॉ. संजीव सर्राफ उप पुस्तकालयाध्यक्ष, बीएचयू।
- डॉ. तरुण नंदन, एमएनएनआईटी, इलाहाबाद।
- डॉ. तुषार सिंह, सहायक प्रोफेसर, मनोविज्ञान विभाग, बीएचयू, वाराणसी।
- डॉ. ज्योति मिश्रा, उप पुस्तकालयाध्यक्ष, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।
- डॉ. आर.के. पांडेय, संकायाध्यक्ष, प्रबन्ध अध्यन संकाय, बीएचयू, वाराणसी।
- डॉ. आर.के. लोढवाल, इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज, बीएचयू, वाराणसी।
- डॉ. आशीष सिंह, बरकछा कैंपस, बीएचयू, मिर्जापुर।
- डॉ. अतुल कुमार सिंह, इलाहाबाद डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद।
- डॉ. एस.एन. पाण्डेय, एसोसिएट प्रोफेसर, गणित विभाग, एम.एन.एन.आई.टी. इलाहाबाद।
- डॉ. के.एन. उत्तम, एसोसिएट प्रोफेसर, भौतिकी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
- डॉ. प्रमोद सिंह कुशवाहा, सहायक प्रोफेसर, एस.डी.पी.जी. कालेज, मठ लार देवरिया।
- डॉ. शेफाली नन्दन, सहायक प्रोफेसर, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
- डॉ. देवेन्द्र कुमार, एसोसिएट प्रोफेसर, अंग्रेजी विभाग, बीएचयू, वाराणसी।
- डॉ. तनुज नन्दन, एसोसिएट, विभागाध्यक्ष, एमएनएनआईटी, इलाहाबाद।
- डॉ. अनुराग सिंह, सहायक प्रोफेसर, प्रबन्ध अध्ययन संकाय, बीएचयू, वाराणसी।
- डॉ. ललित द्विवेदी, सहायक प्रोफेसर, के.एन.आई., सुल्तानपुर।
- डॉ. शशि राना, सी.एस.टी. यूपी,लखनऊ।
- डॉ. भारद श्रीवास्तव, एन.बी.आर.आई, लखनऊ।
- डॉ. (श्रीमती) सुषमा मल्होत्रा, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी।
- डॉ. इमरान सिद्दीकी, सी.डी.आर.आई, लखनऊ।
- डॉ. ब्रजयोग, एच.सी.पी.जी., वाराणसी।
- डॉ. मंजूषा श्रीवास्तव, राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान, लखनऊ।
- डॉ. मुक्ता व्यास, पूर्व रीडर, इलाहाबाद डिग्री कालेज, इलाहाबाद।
- डॉ. विनोद कुमार सिंह, शिक्षाशास्त्र विभाग, आर.बी.एस. कालेज, आगरा।
- डॉ. निलेन्द्र बादल, एसोसिएट प्रोफेसर, कम्प्यूटर साइंस के.एन.आई.टी., सुल्तानपुर।
- डॉ. प्रदीप कुमार, एच.सी.पी.जी., वाराणसी।
- डॉ. प्रेम कुमार मलिक, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
- डॉ. राकेश मौर्य, सी.डी.आर.आई., लखनऊ।
- डॉ. संतोष कुमार मिश्र, सहायक निदेशक दूरदर्शन वाराणसी।
- डॉ. संतोष कुमार मिश्र, सहायक निदेशक, दूरदर्शन, वाराणसी।
- डॉ. सुशील मिश्रा, आई.टी. बीएचयू, वाराणसी।
- डॉ. डी. कार चौधरी, सी.एस.आईआर., लखनऊ।
- डॉ. डी.के. यादव, एसोसिएट प्रोफेसर, कम्प्यूटर साइंस, एम.एन.एन. आई.टी., इलाहाबाद।
- डॉ. उपेन्द्र सिंह, पी.आई.टी., जौनपुर।
- डॉ. वी.पी. चौरसिया, एसोसिएट प्रोफेसर, कम्प्यूटर साइंस, के. एन. आई.टी., सुल्तानपुर।
- डॉ. जय प्रकाश आगरा कालेज, आगरा।
- डॉ. नवीन कुमार अरोड़ा, पर्यावरण एवं माइक्रोबायोलॉजी विभाग, बीबीएयू, लखनऊ।
- डॉ. अंकुर चड्ढा, महा प्रबंधक, दैनिक जागरण, वाराणसी।
- डॉ. आर.एस. सिंह, एसोसिएट प्रोफेसर, कम्प्यूटर साइंस, आई. आई.टी., बीएचयू, वाराणसी।
- डॉ. अवधेश कुमार, एसोसिएट प्रोफेसर, कम्प्यूटर साइंस के.एन. आई.टी., सुल्तानपुर।
- डॉ. ए.के. श्रीवास्तव, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।

केरल

- डॉ. सर्वेश कुमार सिंह, एसोसिएट प्रोफेसर, भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, परमाणु ऊर्जा, तिरुअनंतपुर, केरल।

उत्तराखण्ड

- प्रो. (श्रीमती) रेहाना जैदी, हेमवती नन्दन बहुगुणा विश्वविद्यालय, उत्तराखण्ड।
- प्रो. के.पी. सिंह, गढ़वाल विश्वविद्यालय, उत्तराखण्ड।
- प्रो. मधुरेन्द्र कुमार, कुमायूँ विश्वविद्यालय, नैनीताल, उत्तरांचल
- प्रो. महावीर अग्रवाल, कुलपति, उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार।
- प्रो. मोहन सिंह पवार, हेमवती नन्दन बहुगुणा विश्वविद्यालय, गढ़वाल, श्रीनगर।
- प्रो. गिरधर सिंह नेगी, डी.एस.बी. कैम्पस, नैनीताल, उत्तराखण्ड।
- प्रो. पी. प्रधान, गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार।
- प्रो. संतराम वैश्य, गुरूकुल कॉगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार।
- प्रो. संजीत मिश्रा, आई.आई.टी., रूड़की।
- प्रो. सैयद अली, हमीद कुमायूँ विश्वविद्यालय, अलमोड़ा।
- प्रो. जे.पी. पथ्वीरी, एच.एन. बहुगुणा विश्वविद्यालय, गढ़वाल।
- प्रो. नागेन्द्र कुमार, आई.आई.टी., रूड़की।
- प्रो. आभा अहूजा, गोविन्द बल्लभ पंत कृषि विश्वविद्यालय, पन्तनगर।
- प्रो. आर.पी. त्रिपाठी, ग्रैफिक ईरा विश्वविद्यालय, देहरादून।
- प्रो. आर.आर. नौटियाल, हेमवती नन्दन बहुगुणा विश्वविद्यालय, श्रीनगर, गढ़वाल।
- प्रो. ओ.पी.एस. नेगी, कुमायूँ विश्वविद्यालय, एस.एस.जे. कैम्पस, अल्मोड़ा, उत्तरांचल।
- डॉ. ए.के. सिंह, वनस्पति विज्ञान विभाग, जी.बी. पन्त विश्वविद्यालय, पन्तनगर।

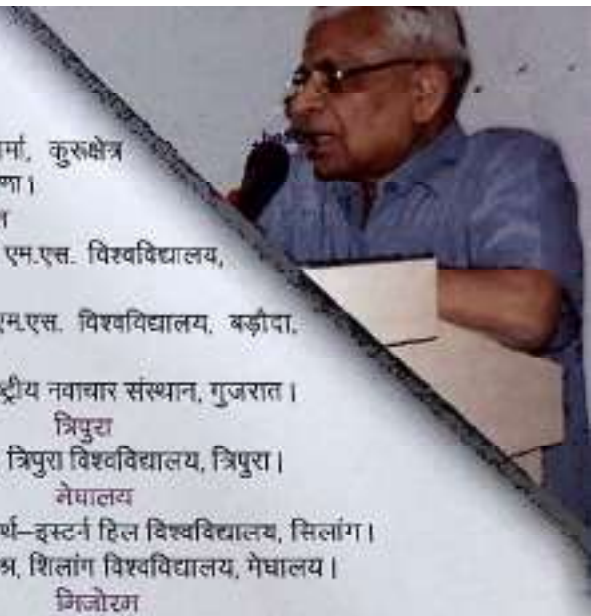

- डॉ. प्रतिभा सिंह, गृह विज्ञान विभाग, जी.बी. पंत विश्वविद्यालय, पंतनगर।

गुजरात

- प्रो. कमलेश कुमार, गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद।
- प्रो. रोली कंचन, एम.एस. विश्वविद्यालय, बड़ोदरा, गुजरात।

जम्मू कश्मीर

- प्रो. बी.एस. मन्हास, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू।
- प्रो. जे.एस. तारा, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू।
- प्रो. अनुराग गंगल, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू।
- प्रो. परमेश्वरी शर्मा, हिन्दी विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू।

झारखण्ड

- प्रो. महेन्द्र यादव, आई.एस.एम., धनबाद।
- प्रो. रेखा सिन्हा, बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, रांची।
- प्रो. सीताराम अकिंचन रांची विश्वविद्यालय, रांची।

हिमाचल प्रदेश

- प्रो. राजेन्द्र मिश्र, पूर्व कुलपति, सनराईज विला, लोवर समरहिल, शिमला।
- प्रो. विरेन्द्र कुमार मिश्र, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला।

त्रिपुरा

- प्रो. पी.के. हलदार, त्रिपुरा विश्वविद्यालय, त्रिपुरा।

राजस्थान

- प्रो. ए.बी.एस. मदनावत, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।
- प्रो. एल.आर. गुर्जर, बी.एम. मुक्त विश्वविद्यालय, कोटा, राजस्थान।
- प्रो. इशाक मो. कायमखानी, एम.एल. सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान।
- प्रो. के.एस. गुप्ता, एम.एल. सुखड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर राजस्थान।
- प्रो. मंजू सिंह, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान।
- प्रो. मीना गौर, एम.एल. सुखड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान।
- प्रो. विभा उपाध्याय, जयपुर विश्वविद्यालय, जयपुर।
- प्रो. शीला राय, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।
- प्रो. साधना कोठारी, एम.एल. सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान।
- प्रो. जी.एस. चौहान, जोधपुर, राजस्थान।
- प्रो. जी.पी. गुप्ता, आर–14 माधव विहार, लालकोठी, जयपुर, राजस्थान।
- प्रो. नागेन्द्र सिंह, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान अजमेर।
- प्रो. आर.एन. मिश्रा, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

बिहार

- डॉ. जनक पांडेय, पूर्व कुलपति, बिहार केन्द्रीय विश्वविद्यालय।
- प्रो. वंशीलाल, मगध विश्वविद्यालय, बोध गया।
- डॉ. पुष्पम् नारायण, एल.एन.एम., दरभंगा।

हरियाणा

- प्रो. एस.पी. कौशिक, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, हरियाणा।
- प्रो. के.बी., एम.डी. विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा।
- प्रो. मधु नागला, रोहतक विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा।
- डॉ. डी.एन. मिश्रा, हिसार यूनिवर्सिटी, हरियाणा।
- डॉ. एस.के. यादव, गुड़गाँव, हरियाणा।
- प्रो. रवीन्द्र कुमार शर्मा, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, हरियाणा।

गुजरात

- प्रो. जी.आर. गोयल, एम.एस. विश्वविद्यालय, बड़ौदा, गुजरात।
- प्रो. छाया गोयल, एम.एस. विश्वविद्यालय, बड़ौदा, गुजरात।
- डॉ. विपिन कुमार, राष्ट्रीय नवाचार संस्थान, गुजरात।

त्रिपुरा

- प्रो. सत्यदेव पोद्दार, त्रिपुरा विश्वविद्यालय, त्रिपुरा।

मेघालय

- प्रो. आर.एन. राय, नार्थ–इस्टर्न हिल विश्वविद्यालय, सिलांग।
- प्रो. हितेन्द्र कुमार मिश्र, शिलांग विश्वविद्यालय, मेघालय।

मिजोरम

- प्रो. जी. गुमर, मिजोरम विश्वविद्यालय, आईजोल, मिजोरम।

पंजाब

- प्रो. जगरूप सिंह शेखान, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर, पंजाब।
- प्रो. अश्वनी अग्रवाल, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़।

उड़ीसा

- प्रो. टी.सी. पाण्डा, कटक विश्वविद्यालय, उड़ीसा।
- डॉ. सरत सी सत्यार्थी, अंग्रजी विभाग, भुवनेश्वर।

छत्तीसगढ़

- प्रो. अनुपमा सक्सेना, गुरू घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़।

दिल्ली

- प्रो. एस.के. जैन, प्रबन्ध अध्ययन विभाग, आई.आई.टी. दिल्ली।
- प्रो. एम.एम. अग्रवाल, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।
- प्रो. एस.सी. राय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।
- प्रो. बी.सी. वैद्य, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।
- प्रो. कैलाश नारायण तिवारी, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।
- प्रो. कलीम जावेद, जामिया हमदर्द विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।
- प्रो. मारकण्डेय नाथ तिवारी, श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली।
- प्रो. मुशाहिद आलम रिजवी, जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।
- प्रो. विद्याशंकर सिंह, मोतीलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली।
- प्रो. फुरकान अहमद, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली।
- प्रो. नारायण प्रसाद, इग्नू, नई दिल्ली।
- प्रो. अविनाश कुमार, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।
- प्रो. आर.बी. सिंह, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।
- प्रो. आर.पी. पाठक, लाल बहादुर शास्त्री रा.सं. विद्यापीठ, नई दिल्ली।
- प्रो. ओम प्रकाश सिंह, भाषा विज्ञान विभाग, जे.एन.यू., नई दिल्ली।
- डॉ. हरिराम मिश्र, जे.एन.यू., नई दिल्ली।
- अविनाश कुमार, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।
- प्रो. आर.बी. सिंह, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।

- प्रो. आर.पी. पाठक, लाल बहादुर शास्त्री रा.सं. विद्यापीठ, नई दिल्ली।
- प्रो. ओम प्रकाश सिंह, भाषा विज्ञान विभाग, जे.एन.यू., नई दिल्ली।
- डॉ. हरिराम मिश्र, जे.एन.यू., नई दिल्ली।
- डॉ. आर.एस. मिश्रा, हार्टीकल्चर विभाग, दिल्ली।
- डॉ. आनन्द कुमार, जे.एन.यू. नई दिल्ली।
- प्रो. एस.एम.एस. तोमर, आई.ए.आर.आई., दिल्ली।
- प्रो. आशुतोष कुमार सिंह, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।
- प्रो. हुकुम सिंह, नई दिल्ली।
- प्रो. पी.के. शुक्ला, नई दिल्ली।
- प्रो. शुकदेव भोई, श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली।
- श्री एन.के. सिंह, महासचिव ब्राडकास्टिंग एडिटर एसोसिएशन, नई दिल्ली।
- श्री सुमित कपूर, उद्योग एवं वाणिज्य मंत्रालय, नई दिल्ली।
- डॉ. यू.सी. पाण्डेय, सीएसटी नई दिल्ली।
- प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय, कुलपति, श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली।
- डॉ. मनीष श्रीवास्तव, हार्टीकल्चर विभाग, आई.ए.आर.आई., नई दिल्ली।
- डॉ. उषा सिंह, दिल्ली।
- प्रो. आर.एस. अग्रवाल, नई दिल्ली।
- डॉ. राजीव वर्मा, दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली।
- डॉ. रिचा चौधरी, बी.आर.ए. कालेज, दिल्ली।
- डॉ. जसीम अहमद, जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, दिल्ली।

मध्य प्रदेश

- प्रो. एस.एस. नेगी, विद्यापुरम् सागर, मध्य प्रदेश। प्रो. दिवाकर सिंह राजपूत, हरि सिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, मध्य प्रदेश।
- प्रो. विजय कुमार अग्रवाल, अवधेश प्रताप सिंह, विश्वविद्यालय, रीवाँ, मध्य प्रदेश।
- प्रो. राम कुमार अहिरवार, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन।
- प्रो. सी.एस.एस., ठाकुर रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर।
- प्रो. सरोज गुप्ता, महात्मा गाँधी ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट।
- प्रो. सुबोध पाण्डेय, हरि सिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर।
- प्रो. दीपा श्रीवास्तव, ए.पी.एस. विश्वविद्यालय, रीवां।
- प्रो. बी.के. सिंह, सागर विश्वविद्यालय, मध्य प्रदेश
- प्रो. जे.के. जैन, सागर, मध्य प्रदेश।
- प्रो. आर.एस. सिंह, रीवा विश्वविद्यालय।
- प्रो. आर.पी. मिश्रा, एच.एस. गौड़ विश्वविद्यालय, सागर, मध्य प्रदेश।
- डॉ. एस.के. चतुर्वेदी, एम.जी. चित्रकूट ग्रामोदय, विश्वविद्यालय, चित्रकूट

महाराष्ट्र

- प्रो. आर.वाई. महोरे, आर.टी.एम. नागपुर विश्वविद्यालय, नागपुर।
- प्रो. किशोर यू. रावत, एस.जी.बी. विश्वविद्यालय, अमरावती, महाराष्ट्र।
- प्रो. पी.डी. नीम सरकार, नागपुर विश्वविद्यालय, महाराष्ट्र।
- प्रो. साहेब अली, मुम्बई विश्वविद्यालय, मुम्बई।
- प्रो. जी.पी. सिंह, वी.एन.आई.टी., नागपुर।
- डॉ. संतोष भदौरिया, महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र।
- डॉ. अम्बादास जाधव, मुम्बई विश्वविद्यालय, मुम्बई।
- डॉ. सुशील चौरसिया, सिम्बायोसिस, पुणे।
- प्रो. वाई.के. खिल्लारे, डॉ. बाबा साहब अम्बेडकर मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद।
- प्रो. जय प्रकाश यादव, मलाड, मुम्बई।
- प्रो. जी.एस. परासर, प्रति कुलपति, आई.एम.यू.एम.ई.आर.आई., मुम्बई।
- प्रो. अरूणेश नीरज, महात्मा गाधी अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र।
- प्रो. टी.एन. कार्डे, नागपुर विश्वविद्यालय, नागपुर।
- प्रो. अरविन्द कुमार झा, महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र।
- प्रो. ए.एन. पाण्डेय, मलाड, मुम्बई।
- प्रो. ए.के. श्रीवास्तव, रसायन विज्ञान विभाग, मुम्बई विश्वविद्यालय, मुम्बई।
- डॉ. ए.एस. अश्वर, एस.जी.बी. विश्वविद्यालय, अमरावती, महाराष्ट्र।
- प्रो. कृष्ण कुमार सिंह, महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र।
- प्रो. विनायक श्रीधर देशपाण्डेय, आर.टी.एम. नागपुर विश्वविद्यालय, नागपुर।
- प्रो. चितरंजन मिश्र, महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र।

पश्चिम बंगाल

- प्रो. एस.सी. मुखोपध्याय, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता।
- प्रो. पी. जैश, शान्ति निकेतन विश्वविद्यालय, पश्चिम बंगाल।
- प्रो. हरेराम तिवारी, आई.आई.टी., खड़गपुर।
- प्रो. के.सी. साहु, विनय भवन, पश्चिम बंगाल।

खिलाड़ी सम्मान समारोह 2016 के अवसर पर राजभवन में
माननीय कुलाधिपति श्री राम नाईक जी के साथ विश्वविद्यालय परिवार।

कुलपति सम्मेलन में माननीय कुलाधिपति श्री राम नाईक जी के साथ
उत्तर प्रदेश के विश्वविद्यालयों के कुलपतिगण एवं अधिकारीगण।

दीक्षांत समारोह में सम्बोधित करते कुलपति प्रो0 पीयूष रंजन अग्रवाल एवं मंचासीन मुख्य अतिथि पद्म श्री डॉ. प्रेम शंकर गोयल एवं अन्य सदस्य।

शिक्षक सम्मान समारोह।

नैक पीयर टीम के साथ कुलपति, शिक्षक एवं विश्वविद्यालय के अधिकारी गण।

कुलपति सम्मेलन में माननीय कुलाधिपति श्री राम नाईक जी को स्मृति चिन्ह भेंट करते कुलपति।

संगोष्ठी भवन में सांस्कृतिक संध्या।

युवा संसद।

शोध एवं नवाचार केन्द्र में आयोजित संगोष्ठी में सम्बोधित करते इलाहाबाद उच्चन्यायालय के माननीय न्यायमूर्ति श्री पंकज मित्तल जी।

जनसंचार विभाग में आयोजित संगोष्ठी में सम्बोधित करते महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के प्रो० ओम प्रकाश सिंह।

वित्तीय साक्षरता अभियान।

मुक्तांगन में योग प्रदर्शन करते विद्यार्थी।

स्वच्छता अभियान में शपथ लेते विद्यार्थी।

योग महोत्सव 2016।

नैक पीयर टीम के सदस्यगण।

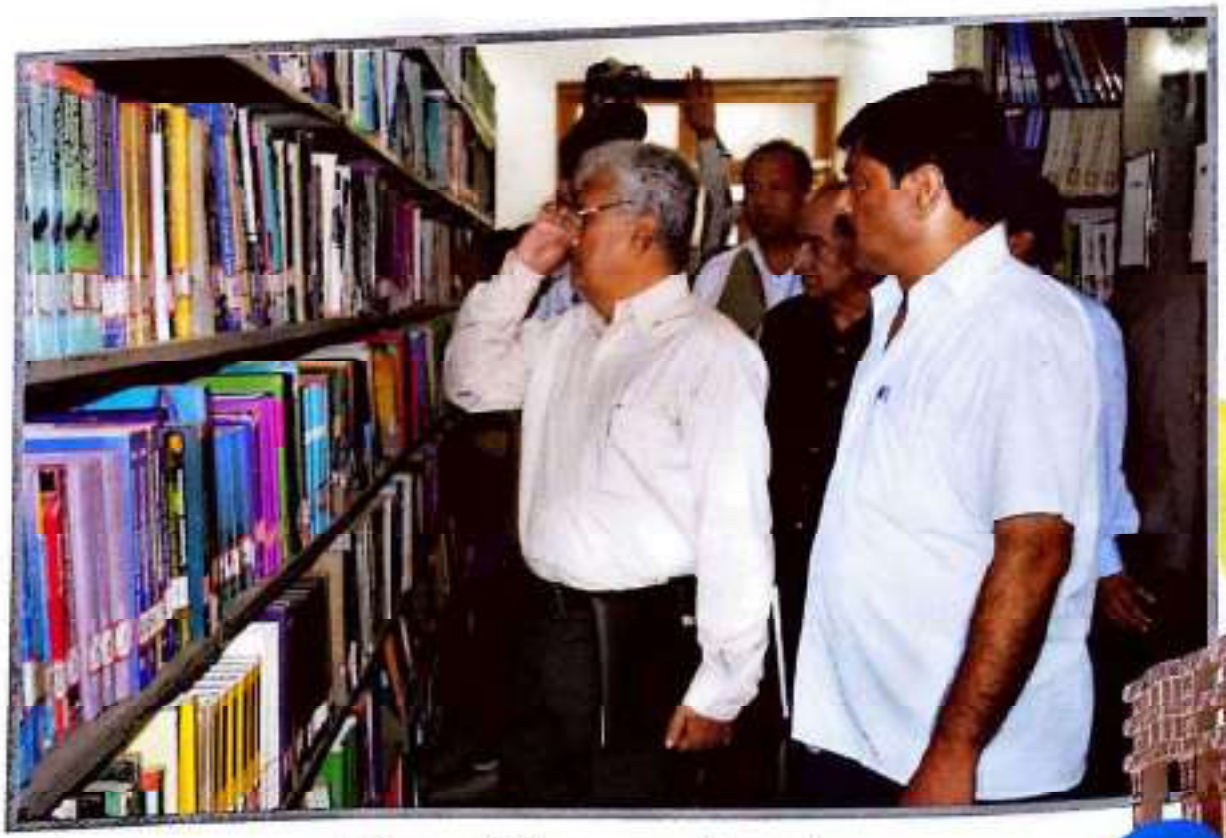

विवेकानन्द केन्द्रीय पुस्तकालय में पुस्तकों का अवलोकन करते नैक पीयर टीम के चेयरमैन।

उन्नीसवें दीक्षान्त समारोह में स्वर्ण पदक धारक

खिलाड़ी सम्मान समारोह 2016 के अवसर पर राजभवन में माननीय कुलाधिपति श्री राम नाईक जी के साथ सम्मानित खिलाड़ी

कुलगीत

वीर बहादुर सिंह विश्व-विद्यालय का हरितांचल।
जय-जय-जय "पूरब की आत्मा", जय-जय-जय "पूर्वाञ्चल"।।
पूर्व दिशा का ताज रहा है,
"भारत का शीराज" रहा है,
यह यमदग्नि-यजन की बेदी यह "कुतबन" का मादल।
जय-जय-जय "पूरब की आत्मा", जय-जय-जय "पूर्वाञ्चल"।।
दो धर्मों की मिलन-धुरी यह,
राग सलोना "जौनपुरी" यह,
संघर्षों की झंझर में झंकृत जिसके जीवन-पल।
जय-जय-जय "पूरब की आत्मा", जय-जय-जय "पूर्वाञ्चल"।।
नये सृजन की सजी आरती,
उतरी वीणा लिये भारती,
नव-जागरण-थाल में अर्पित यह पावन तुलसी-दल।
जय-जय-जय "पूरब की आत्मा", जय-जय-जय "पूर्वाञ्चल"।
कला-शिल्प-विज्ञान कलेवर,
छलकाये प्रकाश के निर्झर,
धेनुमती-तमसा-गंगा का यह पावन क्रीड़ास्थल।
जय-जय-जय "पूरब की आत्मा", जय-जय-जय "पूर्वाञ्चल"।।
नीति हमारी सरल-तरल हो,
जिसमें जन का क्षेम-कुशल हो,
गौतम-कपिल-कणाद-पंतजलि हों आदर्श अचंचल।
जय-जय-जय "पूरब की आत्मा", जय-जय-जय "पूर्वाञ्चल"।।